छमछमाना० अ० क्रि० चमकना, झलकना, बजना।
छय० ना० पु० क्षय।
छयरोग० ना० पु० क्षयरोग।
छर० ना० स्त्री० जटामांसी, फड़, दण्ड, जल्दी, शिताबी।
छरछोबी० ना० स्त्री० झाड़े फिरने का स्थान।
छरस० ना० पु० षट्रस।
छरी० ना० स्त्री० छड़ी।
छर्दाघन० ना० पु० खीरा।
छर्दि० ना० स्त्री० वमन, ओकना।
छर्रा० ना० पु० लोहेआदिकी छोटी छोटी गोली।
छल० ना० पु० कपट, ठगाई, धोखा, धांधल, मिष।
छलकना० अ० क्रि० निकलजाना, ढलकना।
छलकाना० स० क्रि० गिरादेना।
छलकारी० गु० कपटी, ठग, दग़ाबाज।
छलांगना० अ० क्रि० कुदकना।
छलछिद्र० ना० पु० कपट, छल।
छलछिद्री० गु० कपटी, छली।
छलना० स० क्रि० छलकरना, ठगना, भटकाना।
छलनी० ना० स्त्री० चलनी।
छलांग० ना० स्त्री० कुदक्का, फलांग।
छलावा० ना० पु० लूका, आग शैतानी।
छलिया० } छली० } गु० कपटी, ठग, प्रपंची।
छल्ला० ना० पु० अंगुली में पहिरने का गहना।
छवा० ना० स्त्री० एड़ी पांवकी।
छवि० ना० स्त्री० शोभा, चमक, सुन्दरता।
छविभीर० ना० पु० कान।
छबीला० गु० सुन्दर, शोभायमान।
छवैया० ना० पु० छानेहारा।
छाईं० ना० स्त्री० छीप।
छां० ना० स्त्री० छाया।
छांट० ना० स्त्री० खूद, सीठी छीलन।
छांटन० ना० स्त्री० टुकड़ा, धज्जी।
छांटना० स० क्रि० वमन करना, कतरना, अलग करना।
छांड़० ना० स्त्री० किनारा, नदी का कटाव, नदी का सोता।
छांड़ना० स० क्रि० छोड़ देना।
छांद० ना० स्त्री० पगहा, पैकड़ा।
छांदना० स० क्रि० बांधना।
छांदा० ना० पु० भाग, अंश, हिस्सह।
छांव० } छांह० } ना० स्त्री० छाया, परछाईं।
छांहारा० गु० छायावान्।
छाक० ना० स्त्री० कलेवा।
छाकना० स० क्रि० कूपका जल, फचीना, पेटभर भोजन वा कोई वस्तुखाना।
छाग० ना० स्त्री० बकरा।
छागल० ना० पु० कुप्पी, बकरी वा बकरीकी खाल।
छागी० ना० स्त्री० बकरी।
छागभांगी० ना० स्त्री० बिधारा।
छाछ० } छाछी० } ना० पु० मट्ठा, मथा दही।
छाज० ना० पु० सूप।
छाजना० अ० क्रि० छाना, फबना, सजना।
छाजित० गु० फाबित, लाभकारी।
छात० ना० स्त्री० छत।
छाता० ना० पु० छत्र, छतुरी।
छाती० ना० स्त्री० छोटाछाता, उर, चूंची।
छात्र० ना० पु० विद्यार्थी, शिष्य, चेला।
छादन० ना० पु० कपास।
छान० ना० स्त्री० ठठरी, ठाठ, छप्पर, विचार।
छानना० स० क्रि० निर्वारना, स्वच्छ करना। ढूंढ़ना, विचारना।
छानबीन० ना० स्त्री० विचार, जांच।
छानबे० गु० नब्बे और छः ९६।
छानस० ना० पु० चोकर, भूसी, बूरा।
छाना० स० क्रि० छाजना, छायाकरना, पाटना, छप्पर बनाना, टहराना।
छानी० ना० स्त्री० छप्पर।
छाप० ना० स्त्री० मुद्रा, मुहर, अपना चिह्न।

छापना० स० क्रि० छापाकरना, चिह्नदेना।
छापा० ना० पु० वैष्णवोंका तिलक, मुद्रा।
छापाविद्या० ना० स्त्री० जिसके द्वारा अनेक पुस्तक छापी जाती हैं, सब वस्तु जानी जाती हैं।
छाम० गु० दुबला, हलका।
छाया० ना० स्त्री० परछाईं, छांह, पिशाच, भूत।
छायानट० ना० पु० रागिनीविशेष।
छायाधर० ना० पु० वृक्षादि।
छायापाद० ना० पु० छाया के परिमाण से समयका स्थिरकरना।
छार० ना० स्त्री० क्षार, ढेला जो बड़ा है।
छारछबीला० ना० पु० सुगन्धिवस्तुविशेष।
छारी० ना० पु० क्षारी, श्रीमहादेव जी।
छारू० ना० पु० तिनावां।
छाल० ना० स्त्री० बकला, छिलका।
छाला० ना० पु० फफोला, चमड़ा, खाल, फुका।
छालियां० ना० स्त्री० सुपारीविशेष।
छावना० स० क्रि० छाना।
छावनी० ना० स्त्री० पलटन के रहनेका स्थान, लैन छानेका काम।
छाह० ना० स्त्री० छांह।
छिकुनी० ना० स्त्री० छड़ी, कमची।
छिक्का० ना० स्त्री० छीक।
छिक्किका० ना० स्त्री० नकछिकनी, पौधा।
छिगुनी० } ना० स्त्री० कनिष्ठिका, कनगुरिया।
छिंगुली० }
छिचड़ा० ना० पु० घावका नया चमड़ा।
छिचड़ेला० ना० पु० दुबला, चमचिचड़।
छिछड़ा० ना० पु० खलड़ी, छेवर।
छिछला० गु० उथला।
छिछलाई० ना० स्त्री० उथलाई।
छिछली० ना० स्त्री० खेलविशेष, थोड़ीगहरी।
छिछोड़ा० गु० ओछा, हलका, नीच।
छिटकना० अ० क्रि० फैलना, बिथरना।
छिटकनी० ना० स्त्री० बिल्ली जो किवांड़ों में लगती है।
छिटकाना० स० क्रि० फैलाना, बिथराना।
छिटकी० ना० स्त्री० छर्रा, छींट।
छिड़कना० स० क्रि० छींटना, बिथराना।
छिड़काना० स० क्रि० छिंटाना, सिंचाना।
छिड़काव० ना० पु० सींच, सिंचाव।
छिड़ना० अ० क्रि० चिढ़ना, दुःखी होना।
छिड़ाना० स० क्रि० चिढ़ाना, चिढ़वाना, दुखाना।
छितनिया० } ना० स्त्री० डलिया।
छितनी० }
छितरना० अ० क्रि० बिथरना, फैलना।
छितराना० स० क्रि० बिथराना, फैलाना।
छिति० } ना० स्त्री० क्षिति, धरती, जमीन।
छिती० }
छिदना० अ० क्रि० बिधना, गड़ना, स० क्रि० रोकना, रोकने का काम करना।
छिदनी० ना० स्त्री० छेदने की वस्तु।
छिदाना० स० क्रि० छेदकराना, रोकाना।
छिद्र० ना० पु० छेद।
छिन० ना० पु० क्षण, लहमा।
छिनकना० स० क्रि० नाक स्वच्छकरना।
छिनला० ना० पु० व्यभिचारी, परस्त्रीगामी।
छिनवाना० स० क्रि० और किसी से खिंचवाना।
छिनाल० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलटा।
छिनाला० ना० पु० व्यभिचार, कुलटापन।
छिनेक० ना० पु० क्षणैक।
छिन्न० गु० खंडित, क्षीण, दुर्बल।
छिन्नभिन्न० गु० अलग २, तित्तर बित्तर।
छिन्ना० ना० स्त्री० गुरच, महामुण्डी।
छिपकली० ना० स्त्री० गृहगोधिका, टिकटिकी।
छिपका० ना० पु० छिड़काव।
छिपना० अ० क्रि० लुकना, गुप्तहोना।
छिपा० गु० लुका, गुप्त, अप्रकट।
छिपाना० स० क्रि० गुप्तकरना, लुकाना

छिपाव० ना० पु० लुकावट, लुकाव, गोपन।

छिप्र० ना० स्त्री० शीघ्र, शिताबी।

छिप्रोद्भवा० ना० स्त्री० गुरुच।

छिमा० ना० स्त्री० क्षमा।

छिमाजोग० गु० क्षमायोग्य।

छियालीस० गु० चालीस और छः ४६।

छियासठ० गु० साठ और छः ६६।

छियासी० गु० अस्सी और छः ८६।

छिलका० ना० पु० बकला, फलादि के ऊपर की त्वचाविशेष।

छिलना० अ० क्रि० रगड़जाना, उधड़जाना।

छिलाना० स० क्रि० कटवाना, रगड़ाना।

छिलैया० ना० पु० छीलनेहारा।

छिलौरी० ना० स्त्री० अंगुलीकीकोरपर फुड़िया फिनही।

छी० अव्य० तुच्छकरने का वाक्य।

छींक० ना० स्त्री० छिनक, प्रसिद्ध, अतसः।

छींकना० अ० क्रि० ब्रह्मांड से पवन निकलना।

छींका० ना० पु० रस्सी का जाल, जिस में वस्तु रखके लटका देते हैं।

छीछड़ा० ना० पु० चमड़ेके समान अभक्ष्य मांस।

छीजना० अ० क्रि० घटना, गिरना।

छींट० ना० स्त्री० छिटकनी, छींट।

छींटना० स० क्रि० बिथराना, पानी छिड़कना।

छीनना० स० क्रि० झटकलेना, खींचना।

छीप० ना० स्त्री० छाई, लहसुन, जिस लकड़ी में बड़िश धातुत बांधते हैं, सींगसे ढकेलना।

छीपना० स० क्रि० पानी छिड़क देना, छीप निकालना, वस्त्र छापना।

छीपी० ना० पु० वस्त्र छापनेहारा।

छीमी० ना० स्त्री० फली, छिलका।

छीलन० ना० पु० काटना, कतरना।

छीलना० स० क्रि० काटना, कतरना, छिलका उतारना, छीलना।

छुंगलिया० ना० स्त्री० छगुनी।

छुछकारना० स० क्रि० तुच्छ करके निकालना, हुलकारना।

छुछुआना० स० क्रि० गाड़ना, फूकना।

छुटकारा० ना० पु० छुड़ाव, उद्धार।

छुटखेलना० अ० क्रि० लुचापन करना।

छुटखेला० गु० लुच्चा, बदमाश।

छुटना० अ० क्रि० उद्धार होना, निकलना।

छुटान० } ना० स्त्री० सुबीता, छुट्टी।
छुटानी० }

छुटापा० ना० पु० छुटाई, छोटापन।

छुट्टी० ना० स्त्री० छुटकारा, उद्धार, रुखसत।

छुड़वाना० स० क्रि० छुटकारा कराना।

छुतहरा० गु० जो अपवित्र होगया, नापाक।

छुद्र० गु० क्षुद्र, नीच, हलका, नकछिकनी।

छुद्रघण्टिका० } ना० स्त्री० क्षुद्रघंटिका, तागड़ी करधनी।
छुद्रमेखला० }

छुद्रा० ना० स्त्री० पतुरिया, छोहारा, अंगूर, कटाई पौधा, नोन स्त्री, नदी।

छुधा० ना० स्त्री० भूख।

छुपना० अ० क्रि० लुकना, गुप्तहोना।

छुपाना० स० क्रि० लुकाना, छिपाना।

छुपा० गु० लुका, गुप्त, छिपा, अप्रकट।

छुरा० ना० पु० बड़ीछुरी, बालमूंड़नेका अस्त्र।

छुरिका० ना० स्त्री० पालक का साग, छुरी।

छुरी० ना० स्त्री० चाकू, लंबा चाकू।

छुलकना० } अ० क्रि० थोड़ा थोड़ा मूतना।
छुलछुलाना० }

छुलाना० स० क्रि० छुवाना, छिलाना।

छुहाना० स० क्रि० उजलाना।

छुहारा० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष।

छुहावट० ना० स्त्री० लगावट।

छूआना० स० क्रि० स्पर्शकराना, छुलाना।

छूई० ना० स्त्री० दूधिया मट्टी, खड़ियामट्टी।

छूकी० ना० स्त्री० मच्छड़।

छूछला० गु० बोदला, बावला।

छूछा० गु० शून्य, खोखला, खाली।

छूछ० ना० स्त्री० कुत्सित, अपमानी, नीच, खाली।
छूट० ना० स्त्री० बट्टा, छुड़ाव, भूषणकीचमक।
छूटना० अ० क्रि० छुटना, निकलना।
छूत० ना० स्त्री० अपवित्रता, नापाकी।
छूना० स० क्रि० स्पर्श करना।
छेक० ना० स्त्री० रोक।
छेकना० स० क्रि० रोकना।
छेकवैया० ना० पु० रोकवैया।
छेकाव० ना० पु० रुकाव।
छेड़० ना० स्त्री० खिजावट, दुखाव।
छेड़ना० स० क्रि० खिजाना, दुखाना।
छेद० ना० पु० छिद्र, मुख, सूराख।
छेदक० ना० पु० छेदकर्ता, बेधक।
छेदन० ना० पु० छेद, बेधन।
छेदना० स० क्रि० बेधना, बरमाना।
छेना० ना० पु० खिरसा, छेवना।
छेनी० ना० स्त्री० छेवनी, छेदनी।
छेम० ना० स्त्री० क्षेम, कुशल।
छेमङ्करी० ना० स्त्री० क्षेमङ्करी, भला चाहने वाली।
छेरी० ना० स्त्री० बकरी।
छेरा०
छेलक० } ना० पु० बकरा।
छेव० ना० पु० पाछ, फटाव, चिराव।
छेवना० स० क्रि० छेटना, काटना, फाड़ना।
छेवनी० ना० स्त्री० काटनी, टांकी।
छेवा० ना० पु० पुस्तकों में ठहरावके स्थानका चिह्न।
छेत्र० ना० पु० क्षेत्र, खेत।
छेत्रफल० ना० पु० क्षेत्रफल।
छैया० ना० पु० छोकरा।
छैल०
छैलचिकनिया०
छैला० } गु० बांका, चिकनियां, अकड़ैत।
छोआ० ना० पु० जूसी।
छोकड़ा०
छोकरा० } ना० पु० लड़का।

छोछो० ना० स्त्री० अग्नी, गोदी।
छोटा० गु० कनिष्ठ, लघु, अल्प।
छोटाई० ना० स्त्री० थोड़ाई, छोटापा।
छोड़ना० स० क्रि० त्यागना, क्षमाकरना।
छोड़ा०
छोड़ाव०
छोड़ावा० } ना० पु० छुटकारा, छुट्टी, उद्धार।
छोड़ावना० स० क्रि० छुटकारा कराना, उद्धार कराना।
छोड़ौती० ना० स्त्री० छुट्टी, छूट।
छोनी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, क्षोणि।
छोप० ना० पु० एकबार, रंगभरन, भिरन।
छोपन० स० क्रि० भरदेना, रंगदेना।
छोर० ना० पु० किनारा, कगर, सिरा।
छोरना० स० क्रि० छोड़ना।
छोरा० ना० पु० लड़का।
छोराछोरी० ना० पु० लड़का, लड़की।
छोरी० ना० स्त्री० लड़की, पुत्री।
छोलना० स० क्रि० छीलना।
छोलनी० ना० स्त्री० छोलनेका अस्त्र, खुर्पी।
छोह० ना० पु० स्नेह, प्रेम, दया।
छोहरा० ना० पु० लड़का।
छोही० गु० स्नेही, प्रेमी, चाहक।
छौंकन० ना० गु० बघार।
छौंकना० स० क्रि० बघारना।
छौकन० ना० पु० झपटा झपटी करनेहारा।
छौकना० स० क्रि० झपटा झपटी करना।
छौना० ना० पु० जन्तुकाबच्चा, बच्चा।
छौनी० ना० स्त्री० छावनी, छप्परबन्दी करना।
छौर० ना० पु० मुण्डन।
छौरक० ना० पु० नाई, नाऊ।
छौरकर्म्म० ना० पु० मुण्डना, बालमुण्डाना, हजामत बनवाना।

(ज)

ज० अव्य० शब्दके अन्तमें संयुक्त होकर उत्पत्ति का बोधक होता है।

जकड़ना० स० क्रि० कसना, बांधना।
जकड़बन्द० ना० पु० अकड़वाई।
जग० ना० पु० जगत्, संसार, यज्ञ, और जहां जासके।
जगच्चक्षु० ना० पु० सूर्य।
जगजगा० ना० पु० पीतलकी पत्री।
जगजगाहट० ना० स्त्री० चमचमाहट।
जगजीवन० ना० पु० पानी, ईश्वर।
जगण० ना० पु० गणविशेष।
जगत्० ना० पु० संसार, दुनियां, टेक।
जगता० गु० जो सोता नहीं, अनींदा।
जगती० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, लोग।
जगत्प्राण० ना० पु० पवन, ईश्वर।
जगदम्बा० ना० स्त्री० आदिशक्ति, देवी, भवानी, जगत्की माता।
जगदादि० ना० पु० पृथ्वीका आरम्भ।
जगदाधार० ना० पु० शेष, दिग्गज, गौआदि, ईश्वर।
जगदीश० ना० पु० परमात्मा, विष्णु, शिव राजाधिराज।
जगधर० ना० पु० शेषजी।
जगना० अ० क्रि० नींदसे उठना, चेतना।
जगन्नाथ० ना० पु० पुरुषोत्तम, उड़ेसा देश में श्रीकृष्णचन्द्रजी।
जगन्मित्र० गु० सबका दोस्त, सबका मित्र।
जगन्मित्रता० ना० स्त्री० सबकी मित्रता रखना।
जगमगा० गु० चमकीला।
जगमगाना० अ० क्रि० चमकना, झमकना।
जगयोनि० ना० पु० ब्रह्मा।
जगवल्लभा० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया।
जगह० ना० स्त्री० ठौर, धरती, समाई, गुंजायश।
जगाजोति० ना० स्त्री० चटक, भड़क।
जगाना० स० क्रि० सोतेसे उठाना।
जगेश्वर० ना० पु० यज्ञेश्वर।
जघन० ना० पु० उरस्थल।
जघन्य० गु० नीच।
जंगम० ना० पु० चलनेवाला, वेषधारी, गु० जो चलने की सामर्थ्य रखता है, वैरागी।
जंगल० ना० पु० वन, अरण्य।
जंगला० ना० पु० रागिनीविशेष।
जंगली० ना० पु० बगैला, वनवासी।
जंघ० ना० पु० जांघ, रान।
जंघा० ना० स्त्री० जांघ, जानु।
जचना० अ० क्रि० अटकलाजाना, परीक्षाहोजाना।
जचाना० स० क्रि० अटकलकराना, कसवाना, परीक्षा कराना।
जचावट० ना० स्त्री० परीक्षा, जांच।
जंजाल० ना० पु० उलझेड़ा, दुःख, क्लेश।
जंजाली० गु० क्लेशी, दुःखदाता।
जट० ना० स्त्री० जटा।
जटना० स० क्रि० चिपटजाना, मूंड़ना।
जटा० ना० स्त्री० बिगड़ेहुये बाल, भूआँरा।
जटाधारी० गु० जटा रखनेवाला।
जटामांसी० ना० स्त्री० छड़औषधि।
जटायु० ना० पु० गृध्रविशेष।
जटित० गु० जड़ाहुआ, जड़ाऊ।
जटिल० गु० पुराना, जटाधारी।
जटी० ना० पु० बरगद वृक्ष, शिवजी।
जठर० ना० पु० पेट, उदर।
जठरानल० ना० पु० पेटकी अग्नि।
जठेरा० गु० बड़ा, जेठा।
जठेरी० ना० स्त्री० बड़ी, बूढ़ी।
जड़० ना० स्त्री० मूल, गु० मूर्ख, स्थावर, निर्जीव, दुष्ट, निशाचर।
जड़न० ना० स्त्री० जड़ने का काम।
जड़ना० स० क्रि० लगाना, जोड़ना।
जड़पेड़० ना० स्त्री० समूचापेड़, अर्थात् सब।
जड़वट० ना० स्त्री० स्तम्भ।
जड़हन० ना० पु० धान जो कातिक अगहन में काटा जाता है।
जड़ाई० ना० स्त्री० जड़ने का काम वा जड़ने का पैसा।
जड़ाऊ० मणिमुक्तादि से जड़ाभया, जड़ाहुआ।

**जड़ाना॰** स॰ क्रि॰ जड़वाना, जाड़ा खाना।

**जड़ाव॰** ना॰ पु॰ जड़नेका काम।

**जड़ावर॰** ना॰ स्त्री॰ जाड़े के कपड़े।

**जड़ित॰** गु॰ जटित, जड़ाहुआ।

**जड़िनी॰** गु॰ स्त्री॰ जड़ स्त्री, दुष्टिनी।

**जड़िया॰** ना॰ पु॰ जड़नेवाला, जौहरी, सुनार।

**जड़ी॰** ना॰ स्त्री॰ औषधि, पौधे की जड़।

**जत॰** ना॰ स्त्री॰ रीति, डौल।

**जतन॰** ना॰ स्त्री॰ यत्न, तदबीर।

**जतनी॰** ना॰ स्त्री॰ यत्नी, तदबीर करनेवाला।

**जताना॰** स॰ क्रि॰ बुझाना, चिताना, बताना।

**जतारा॰** ना॰ पु॰ वंश, घराना, पीढ़ी।

**जती॰** ना॰ गु॰ यती, संन्यासी, शान्त।

**जतु॰** ना॰ स्त्री॰ लाख।

**जतुआ॰** ना॰ पु॰ लड़ीक, खूंटा।

**जथा॰** अव्य॰ यथा, ना॰ पु॰ समूह।

**जथार्थ॰** अव्य॰ यथार्थ, सच, ठीक।

**जदु॰** अव्य॰ यदा, जब।

**जदु॰** ना॰ पु॰ यदु।

**जदुनाथ॰**
**जदुनायक॰** } ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्रजी।
**जदुपति॰**

**जदुवंशी॰** गु॰ यदुवंशी।

**जद्यपि॰** अव्य॰ यद्यपि।

**जन॰** ना॰ पु॰ मनुष्यलोग, नौकर।

**जनक॰** ना॰ पु॰ पिता, श्रीसीताजीके पिता।

**जनकपुर॰** ना॰ पु॰ पिताकागांव वा नगर, तिरहुत नगर।

**जनता॰** ना॰ स्त्री॰ लोग वा लोगों का समूह, मनुष्यता, आदमियत।

**जनन॰** ना॰ पु॰ जन्म, उत्पत्ति।

**जनना॰** अ॰ क्रि॰ जन्महोना।

**जननी॰** ना॰ स्त्री॰ माता, महतारी।

**जनरव॰** ना॰ पु॰ लोगोंका शब्द।

**जनलोक॰** ना॰ पु॰ लोकविशेष, जिसमें साधु लोग मरनेके पीछे वासकरते हैं।

**जनयित्री॰** ना॰ स्त्री॰ माता, जननी।

**जनवासा॰** ना॰ पु॰ जहां बरात ठहरती है।

**जनश्रुति॰** ना॰ स्त्री॰ सन्देशा, समाचार।

**जनहाई॰**
**जनहार॰** } अव्य॰ मनुष्य, मनुष्यसहित, प्रत्येक, हरएक।

**जना॰** ना॰ पु॰ लोग, मनुष्य, गु॰ पुत्र उत्पन्न हुआ, भया।

**जनाई॰** ना॰ स्त्री॰ जो स्त्री लड़का जन्माती है, दिखाई।

**जनाजात॰** अव्य॰ जनहाई।

**जनाती॰** गु॰ कन्याकेओरके बराती, बरातीलोग।

**जनाना॰** स॰ क्रि॰ उत्पन्न कराना, जनाना, चिताना, दिखाना।

**जनार्द्दन॰** ना॰ पु॰ श्रीकृष्णजी।

**जनाव॰** ना॰ पु॰ जताव, लखाव।

**जनिका॰** ना॰ पु॰ द्व्यर्थ जिसका दोप्रकारअर्थहोवे।

**जनित॰** गु॰ उत्पन्न भया, उपजा।

**जनी॰** ना॰ स्त्री॰ दासी, बहू, ब्यानी।

**जनु॰** ना॰ पु॰ जन्म, उत्पत्ति, अव्य॰ मानो।

**जनक॰** अव्य॰ जानो।

**जनेऊ॰** ना॰ पु॰ यज्ञोपवीत।

**जनेत॰** ना॰ पु॰ बरात।

**जनेवा॰** ना॰ स्त्री॰ तृणविशेष, कांधासोटी।

**जनेश॰** ना॰ पु॰ राजा।

**जनो॰** ना॰ पु॰ जनेऊ।

**जन्ता॰** ना॰ पु॰ तारखींचने का यन्त्र।

**जन्ताना॰** स॰ क्रि॰ दबाना, निचोड़ना।

**जन्तार॰** ना॰ पु॰ यन्त्र।

**जन्तु॰** ना॰ पु॰ जीवधारी, क्षुद्रजीव।

**जन्तुक॰** ना॰ पु॰ हींग।

**जन्तुहनन॰** ना॰ पु॰ विड़ंग औषधि।

**जन्म॰** ना॰ पु॰ उत्पत्ति, पैदायश।

**जन्मदाता॰** ना॰ पु॰ पिता।

**जन्मदिन॰** ना॰ पु॰ वर्षबन्धन, वर्षगांठ।

**जन्मना॰** अ॰ क्रि॰ उपजना, पैदा होना।

**जन्मपत्री॰** ना॰ स्त्री॰ जन्मकुण्डली, लग्नकुण्डली, जायचह।

जन्मभूमि० ना० स्त्री० } उत्पत्तिका घर वा
जन्मस्थान० ना० पु० } स्थान।

जन्माना० स० क्रि० उपजाना, पैदाकराना।

जन्मांतर० ना० पु० और जन्म।

जन्मान्तरीय० गु० अगले जन्मका उपार्जित।

जन्मान्ध० गु० जन्मका अन्धा।

जन्मोत्सव० ना० पु० जन्महोने का आनन्द, कृष्णजन्मोत्सव।

जन्यजनकभाव० ना० पु० उत्पन्न कियाहुआ और उत्पन्नकीहुई वस्तु इनका सम्बन्ध।

जप० ना० पु० पाठ मन्त्रादिका उच्चारण।

जपन० ना० पु० मन्त्रउच्चारण पाठ।

जपना० स० क्रि० मन्त्रादिका उच्चारण।

जपन्ता० गु० जापक।

जपमाला० ना० स्त्री० जपने की माला।

जपा० ना० पु० हुड़हुड़ का फूल।

जपी० गु० जापक।

जपीतपी० ना० पु० अर्चक, भजनीक।

जब० अव्य० यदा।

जबड़ा० ना० पु० जभा।

जबद्दा० गु० अकड़ा, अनाड़ी।

जबाड़िया० गु० कुरूप।

जभा० ना० पु० जबड़ा।

जम० ना० पु० यम, मृत्युगण।

जमअनुजा० ना० स्त्री० यमुना जी।

जमक० ना० पु० यमक, पहिला शब्दछन्दका।

जमकना० अ० क्रि० बनना, निभना, ठहरना।

जमकाना० स० क्रि० बनाना, ठहराना, बैठाना।

जमघट० ना० पु० मण्डली, भीड़।

जमजम० अव्य० निरन्तर, सदा।

जमदग्नि० ना० पु० परशुराम के पिता।

जमदूत० ना० पु० यमदूत।

जमधर० ना० पु० कटार।

जमना० अ० क्रि० उगना, ठहरना, जमजाना।

जमराज० ना० पु० यमराज।

जल० गु० दो, २।

जमहाई० ना० स्त्री० आलस्यवश होकर मुख का पसारना।

जमहाना० अ० क्रि० जमहाई लेना।

जमाई० ना० स्त्री० जामाता, दामाद।

जमाना० स० क्रि० उगाना, बांधना, इकट्ठा करना, बटोरना, बैठाना।

जमालगोटा० ना० पु० औषधिविशेष।

जमाव० ना० पु० भीड़, बहुतात।

जमावट० ना० स्त्री० बँधावट।

जमी० ना० स्त्री० रात, यमी, यमुनाजी।

जमोगना० स० क्रि० सहजाना।

जमोघ० } ना० पु० जमविशेष जो लड़कों
जमोघा० } को लगता है।

जमना० अ० क्रि० बढ़ना, पनपना।

जम्बाल० ना० पु० सियाल, बालू।

जम्बीर० } ना० पु० नींबू।
जम्बीरक० }

जम्बु० ना० पु० गीदड़, शृगाल, यमुनावृक्ष।

जम्बुक० ना० पु० गीदड़, शृगाल।

जम्बुमाली० ना० पु० प्रहस्तका पुत्र, राक्षसविशेष।

जम्बूद्वीप० ना० पु० पृथ्वी के सात द्वीपोंमें से एकको नाम।

जम्भभेदी० ना० गु० इन्द्र।

जम्भल० } ना० पु० जम्बीरी नींबू।
जम्भीर० }

जय० ना० स्त्री० पराभव करना, उन्नति, गु० जित्ता, जयति, आशिष।

जयजयकार० ना० पु० पराभव होना, शत्रुका बड़ाई का वा जीतिका बोधक।

जयजयवन्ती० ना० स्त्री० रागिनीविशेष।

जयढाक० ना० पु० ढोलविशेष।

जयत० ना० पु० वृक्षविशेष।

जयति० क्रि० जीति हो।

जयनगर० ना० पु० राजपूताने की राजधानी।

जयन्त० ना० पु० इन्द्रका पुत्र।

जयन्ती० ना० स्त्री० दुर्गादेवी, वृक्षविशेष।

जयन्तीपुर० ना० पु० शिलहट से दश कोसपर का देश जिसको जयन्ता कहते हैं।

जयबेर० गु० जितने बार।

जयमान०
जयवन्त०
जयवान्० } गु० जयकरनेहारा, जीतनेवाला।

जयवती० ना० स्त्री० अग्नि की जिह्वाविशेष गु० जीतनेहारी।

जया० ना० स्त्री० हर्रे, विष्णुक्रान्ता, भांग, देवीविशेष।

जयी० गु० जय करनेहारा।

जर० ना० पु० जड़, ज्वरविशेष।

जरण० ना० पु० जीरा सुफ़ेद, जलन।

जरन० अ० क्रि० जलन।

जरना० अ० क्रि० जलना।

जरा० ना० स्त्री० बुढ़ापा, वृद्धावस्था।

जरांस० ना० पु० ज्वरांश।

जराना० स० क्रि० जलाना।

जरायजरी० गु० स्त्री० जड़ाऊ।

जरायु० ना० स्त्री० कोष, पेट, कुक्षि।

जरायुज० ना० पु० जो कोषसे उत्पन्न हो, जो झिल्ली से उत्पन्न हो अर्थात् मनुष्यादि।

जरासन्ध० ना० पु० मगधका राजा जरानाम राक्षसी से जोड़ागया।

जर्जर० गु० निर्बल, जांजर, जीर्ण।

जर्जरी० ना० पु० लहसुन।

जल० ना० पु० पानी।

जलभ्रमि० ना० पु० पानीका भँवर।

जलकन्द० ना० पु० सिंघाड़ा।

जलकामा० ना० स्त्री० ऊँधाहोली।

जलक्रीड़ा० ना० स्त्री० पानी में का खेल।

जलकुकड़०
जलकुक्कुट० } ना० पु० पनडुब्बी, मुर्गाबी।

जलखानि० ना० पु० मेघ, समुद्र, नदी।

जलगोजक० ना० पु० चिलगोजा।

जलचर० गु० जलजन्तु, पनिहा, जल के चरनेहारे जन्तु।

जलचरेश० ना० पु० मगर, मच्छ, ग्राह।

जलज० ना० पु० कमल, गु० जो कुछजलमें उपजे।

जलजन्तु० ना० पु० जल में रहनेहारे जीव।

जलजन्त्र० ना० पु० बम्बा, फव्वारह, जलयन्त्र।

जलजला० गु० महाक्रोधी।

जलजलाना० अ० क्रि० आग हो जाना, झुंझलाना।

जलजलाहट० ना० स्त्री० कोप, क्रोध, झुंझलाहट।

जलजात० ना० पु० कमलादि।

जलजान० ना० पु० नाव, जहाज।

जलामधु० ना० स्त्री० मुलहठी।

जलतरंग० ना० पु० बाजाविशेष जलकीलहरि।

जलतरंगी० ना० स्त्री० बाजाविशेष बजानेवाला।

जलतरण० ना० पु० तैरना, नाव वा जहाज चलाने की विद्या।

जलथल० ना० पु० जल और स्थल।

जलद० ना० पु० मेघ।

जलधर० ना० पु० मेघ, समुद्र।

जलधार०
जलधारा० } ना० स्त्री० पानी की धारा।

जलधि० ना० पु० समुद्र।

जलन० ना० पु० ज्वलन, तप्र, क्रोध।

जलना० अ० क्रि० बरना, दहकना।

जलनिधि० ना० पु० समुद्र।

जलनीम० ना० पु० औषधिविशेष।

जलन्धर० ना० पु० रोगविशेष जिसमें रोगी पानी बहुत पीता है, राजाविशेष।

जलपाई० ना० स्त्री वृक्षविशेष।

जलपान० ना० पु० पानी पीना, कलेवा।

जलपुट० ना० पु० पानी का बर्त्तन।

जलबल० गु० जो जलने से नाशहोगया ना० पु० पान, केवल।

जलमय० ना० पु० जलार्णव, प्रलय।

जलमानुष० ना० पु० मनुष्यरूपी जलजन्तु।

जलमार० ना० पु० विष, जहर।

जलमाल० ना० स्त्री० नदी।

जलराशि० ना० पु० समुद्र।

जलरुह० ना० पु० कमल।
जलवैया० ना० पु० जलानेहारा।
जलशायी० ना० पु० विष्णु, नारायण।
जलशयनी० ना० स्त्री० जलमें सोना, जल में रहना, तपस्याविशेष मत्स्य।
जलसूत० ना० पु० नहरुआ।
जला० ना० स्त्री० झील।
जलाकार० ना० पु० जलका आकार।
जलाना० स० क्रि० बालना, दाहना।
जलबला० } गु० चिड़चिड़ा, क्रोधी।
जलाभुना० }
जलार्णव० ना० जल प्रलय, जलका समुद्र।
जलावन० ना० पु० ईंधन।
जलाशय० } ना० पु० तालाब, पोखर।
जलाश्रम० }
जलाश्रय० ना० पु० जल के भरोसे।
जलिया० ना० पु० कहार, धीमर, मछुआ।
जलेबी० ना० स्त्री० मिठाई विशेष।
जलेश० ना० पु० वरुणदेव, समुद्र।
जलोद० ना० पु० क्षीरोद, मेघ।
जलोदर० ना० पु० जलंधर।
जलौका० ना० स्त्री० जोंक।
जल्पना० अ० क्रि० बकना, निज बड़ाई करना। अस्वार्थ बात कहना।
जल्पाक० गु० बकवादी, निजबड़ाई करनेहारा।
जव० ना० पु० यव, जौ, जल्दी।
जवन० ना० पु० यवन, घोड़ा।
जवरुथा० ना० स्त्री० हर्रे।
जवनेष्ट० ना० पु० लहसुन।
जवा० ना० पु० अंगुली की गांठि में चिह्न पुष्प विशेष।
जवाह्वा० ना० स्त्री० अजवाइन्।
जवाद० ना० स्त्री० केसर।
जवाधिक० ना० पु० घोड़ा।
जवानी० ना० स्त्री० अजवाइन्, खुरासानी।
जवानिक० } ना० पु० अजवाइन्।
जवासाह्वा० }
जवाखारु० ना० पु० औषधि, तृणविशेष।
जवासा० ना० पु० कांटीलाविशेष।
जस० ना० पु० यश।
जसत० } ना० पु० धातुविशेष।
जसता० }
जसयत० }
जसयति० }
जसवन्त० } गु० कीर्तिमान्, प्रतिष्ठित, यशी, यशस्वी।
जसस्वी० }
जसी० }
जसुमति० }
जसोदा० } ना० स्त्री० नन्दरानी, यशोदा।
जसोमति० }
जहर्षभी० ना० स्त्री० कौंच बीज।
जत्र० अव्य० जहां, यत्र।
जह्नु० ना० पु० मुनिविशेष।
जह्नुसुता० ना० स्त्री० गंगाजी।
जहां० अव्य० जत्र, यत्र, जिसस्थानमें जिधर।
जहीं० अव्य० जिसकी जगह।
जा० सर्व० जिस।
जाई० गु० जनी, ना० स्त्री० बेटी।
जांगर० ना० पु० पिण्डली समेत जांघ, घुटना।
जांघ० ना० स्त्री० जंघा, जानु।
जांघिया० ना० पु० कछना।
जांच० ना० स्त्री० अटकल, परख, कस।
जांचना० स० क्रि० कसना, परखना, देखना, दुहराना, ठीककरना, परीक्षाकरना।
जांता० ना० पु० पाषाणका यन्त्र जिसमें गेहूं पीसते हैं, चक्की।
जाकड़० ना० पु० जाकट, बन्धक, शहना।
जाकर० ना० पु० जिसहाथ में सर्व जिसका।
जाग० ना० पु० निद्राका त्याग, यज्ञ।
जागत० ना० स्त्री० चौकसाई।
जागतीज्योति० गु० अद्भुत पराक्रमी।
जागना० स० क्रि० नींदसे उठना, चेतना।

**जागरण॰** ना॰ पु॰ नींदकात्याग, रात्रि को व्रतादि में जागना।
**जागल॰** ना॰ पु॰ श्याम अगरु।
**जागा॰** ना॰ पु॰ जातिविशेष।
**जागृ॰** ना॰ पु॰ जागने हारा।
**जाग्रत्॰** ना॰ स्त्री॰ स्वप्न और सुषुप्ति से भिन्न अवस्था।
**जांगली॰** ना॰ पु॰ विषारा।
**जाचक॰** ना॰ पु॰ याचक, मांगनेहारा।
**जाचना॰** स॰ क्रि॰ मांगना, चाहना।
**जाचा॰** गु॰ मांगा, चाहा।
**जाचयमान॰** गु॰ मांगा वा चाहाभया, अभयदान।
**जाजक॰** ना॰ पु॰ झांझ वा ढोलकबजानेहारा।
**जाजा॰** ना॰ स्त्री॰ कलौंजी।
**जाजामन्ती॰** ना॰ स्त्री॰ जयजयवन्ती।
**जाट॰** ना॰ पु॰ राजपूतों में जातिविशेष।
**जाठ॰** ना॰ स्त्री॰ कोल्हूकी धुरी।
**जाड़॰** ना॰ स्त्री॰ मसूड़ा।
**जाड़ा॰** ना॰ पु॰ शीत, ठंढ, शीतकाल।
**जाड़ी॰** ना॰ स्त्री॰ दांतों की पांति।
**जाड्य॰** ना॰ पु॰ जड़ता, शीतलता, मूढ़ता।
**जात॰** ना॰ स्त्री॰ जाति, यात्रा, मेला, गु॰ जना।
**जातक॰** गु॰ पुत्र, बच्चा।
**जातकर्म॰** ना॰ पु॰ जन्म संस्कारविशेष यथा छठी आदि।
**जातना॰** ना॰ स्त्री॰ पीड़ा, दुःख, दण्ड, वेदना।
**जातपांत॰** ना॰ स्त्री॰ पीढ़ी, वंशावली।
**जातरूप॰** ना॰ पु॰ सुवर्ण, कांचन।
**जातवेद॰** ना॰ पु॰ अग्निदेव।
**जाति॰** ना॰ स्त्री॰ वर्ण, कौम, एक रूप से बहुत से पिण्डों में समानधर्म्म, यथा पशुत्व, मनुष्यत्व, उत्पन्न।
**जातिकोश॰** ना॰ स्त्री॰ जावित्री।
**जातिपत्री॰** ना॰ स्त्री॰ जावित्री बिरादरी की चिट्ठी।
**जातिभ्रष्ट॰** गु॰ पापादि के कारण जो जाति से निकालागया वा निकलगया।
**जातिवाचक॰** गु॰ जिस संज्ञासे जातिमात्रका बोधहोवे यथा पशु, पक्षी।
**जातिसूज॰** ना॰ पु॰ जायफल।
**जाती॰** ना॰ स्त्री॰ मालती, जावित्री, पुष्पविशेष।
**जात्यायत॰** गु॰ जिस क्षेत्रकी आमने सामनेकी भुजा तुल्य और चारों कोण सम हैं।
**जात्यत्रिभुज॰** ना॰ पु॰ त्रिकोण जिसका एक कोण समकोणहो।
**जात्रा॰** ना॰ स्त्री॰ यात्रा, चलना।
**जात्री॰** ना॰ पु॰ यात्री, जानेवाला।
**जान॰** ना॰ पु॰ विमान, सवारी, वाहनादि, ढीठ, वृन्द, ज्ञान, सब गु॰ ज्ञानी।
**जानकी॰** ना॰ स्त्री॰ श्रीसीताजी।
**जानपहिचान॰** ना॰ पु॰ चिन्हार, मुलाकात।
**जाना॰** अ॰ क्रि॰ चलना।
**जानु॰** ना॰ पु॰ घुटना, गांठि।
**जानो॰** अव्य॰ समझा, अ॰ क्रि॰ जाना।
**जानना॰** स॰ क्रि॰ पहिचानना, समझना।
**जाप॰** ना॰ पु॰ जप, पाठ।
**जापक॰** } गु॰ जप करनेहारा।
**जापी॰** }
**जाब॰** ना॰ पु॰ ढाठी।
**जाबी॰** ना॰ स्त्री॰ छोटी ढाठी।
**जाम॰** ना॰ पु॰ पहर।
**जामदग्न्य॰** ना॰ पु॰ परशुराम, जमदग्निकेपुत्र।
**जामन॰** ना॰ पु॰ वृक्ष वा उसका फलविशेष, जाड़न, जमावन।
**जामवन्त॰** ना॰ पु॰ ऋक्षोंका प्रधानविशेष।
**जामवन्ती॰** ना॰ स्त्री॰ कृष्णचन्द्रकी स्त्री।
**जामा॰** ना॰ पु॰ एड़ीतक पहिरनेकावस्त्र विशेष।
**जामाता॰** } ना॰ पु॰ बेटीका पति।
**जामातु॰** }
**जामिनी॰** ना॰ स्त्री॰ रात्रि, यामिनी, जमन देशकी भाषा वा वस्तु।

**आयपत्री**० ना० स्त्री० जावित्री ।
**आयफल**० ना० पु० फलविशेष ।
**आया**० ना० स्त्री० पत्नी, स्त्री, भार्या, गु० जनी ।
**जार**० ना० पु० उपपति, यार, दूसरापति ।
**आरज**० } ना० पु० विजन्मा, संकरवर्णी ।
**आरजात**० } उपपतिजात, यारकाजन्माया ।
**जारन**० ना० पु० जलावन ।
**जारना**० स० क्रि० जलाना, फूंकना, दाहना ।
**जारल**० ना० पु० काष्ठविशेष ।
**जाल**० ना० पु० जिससे मछलीआदि पकड़ते हैं झंझरी, माया, पाखण्ड, भँवर, फांसी ।
**जालगि**० अव्य० जिस लिये, सर्व० जिसके लिये ।
**जालरन्ध्र**० ना० पु० झरोखा, जाली का ।
**जाला**० ना० पु० जिसको मकड़ी बनाती है, घटा, मोतियाबिन्दु ।
**जालिका** ना० स्त्री० झंझरी ।
**जालिनी**० ना० स्त्री० मुरहरी, देवदाली ।
**जालिया**० ना० पु० छलिया, जालवाला ।
**जाल**० ना० स्त्री० बहुत छिद्रों की खिड़की वा कपड़ा आदि ।
**जालौन**० ना० पु० बुन्देलखण्डका नगरविशेष ।
**जावक**० ना० पु० आलता, महावर, सेंदुर ।
**जावका**० ना० पु० स्त्री० लौंग ।
**जावनी**० ना० स्त्री० अजवाइन् ।
**जावा**० ना० पु० उपद्वीपविशेष ।
**जावां**० ना० पु० दोपुत्र जो एकहीसाथ उत्पन्नहों ।
**जावालि**० ना० पु० मुनिविशेष ।
**जावित्री**० ना० स्त्री० वृक्षविशेष की छाल ।
**जासु**० सर्व्व० जिससे, जिसको ।
**जाह्नवी**० ना० स्त्री० गंगाजी ।
**जाहि**० सर्व्व० जिसको ।
**जाही**० ना० स्त्री० जूही, जाती ।
**जिगजिगिया**० गु० चापलूसी करनेवाला ।
**जिगजिगी**० ना० स्त्री० लपट, सपट, चापलूसी ।
**जिगना**० ना० पु० वृक्षविशेष ।
**जिगीषा**० ना० स्त्री० हिसका, जयकी इच्छा ।
**जिगणी**० ना० पु० जिगना ।
**जिजिया**० ना० स्त्री० बड़ीबहन, चूंची ।
**जिठनिया**० } ना० स्त्री० जेठकी स्त्री ।
**जिठानी**० }
**जितना**० ना० पु० } परिमाण वा अवधि वा
**जितनी**० स्त्री० } संख्या का बोधक ।
**जितयोनि**० ना० पु० हरिण ।
**जिता**० } गु० परिमाण वा अवधि वा संख्या
**जितेक**० } बोधक ।
**जितेन्द्रिय**० } ना० पु० जिसने इन्द्रियों को
**जितेन्द्री**० } वश किया है ।
**जिधर**० अव्य० यत्र, जहां ।
**जिन**० ना० पु० ऋषिविशेष ।
**जिभारा**० गु० गप्पी, जो कठोर बात कहता है ।
**जिम**० अव्य० जिमि, यथा, जैसे ।
**जिमाना**० स० क्रि० खिलाना ।
**जिमि**० अव्य० यथा० जैसे ।
**जिय**० } ना० पु० आत्मा, प्राण, जान ।
**जियरा**० }
**जियाना**० स० क्रि० जिलाना, प्राणदान देना ।
**जियावना**० स० क्रि० जियाना ।
**जिंयौट**० गु० स्त्री० शूरता, शूर, योद्धा ।
**जिलाना**० स० क्रि० प्राणदान देना, जीता करना ।
**जिवाना**० स० क्रि० जिमाना, जिलाना ।
**जिष्णु**० ना० पु० अर्जुन, इन्द्र ।
**जिस**० सर्व० सम्बन्ध में आता है ।
**जिहि**० सर्व० जिस ।
**जिह्म**० ना० पु० कपट, मूढ़ता ।
**जिह्मकर**० गु० कपटी, छली ।
**जिह्मग**० ना० पु० बाण, तीर ।
**जिह्वग**० ना० पु० सर्प, सांप ।
**जिह्वता**० ना० स्त्री० अधिक वार्त्ता की शक्ति ।

जिह्वा० ना० स्त्री० रसना, जीभ।
जिह्वाग्र० ना० पु० मुखाग्र, जवानी।
जिज्ञासा० ना० स्त्री० जानने की इच्छा।
जिज्ञासी० } गु० अभिलाषी, जाननेकी इच्छा
जिज्ञासु० } रखनेहारा।
जिज्ञास्य० गु० जानने के योग्य है।
जी० ना० पु० जीव, प्राण, मर्यादा का सूचक।
जीका० ना० स्त्री० जीविका।
जींगुराना० स० क्रि० सिकोड़ना।
जीत० ना० स्त्री० जय, फ़तह।
जीतना० स० क्रि० जय करना, हराना।
जीतव० ना० पु० आत्मा, हिया, जिन्दगी।
जीतवन्त० } ना० पु० जिसकी जय हुई,
जीतवैया० } जयमान।
जीता० गु० प्राणधारी अर्थात् मरानहीं।
जीति० ना० स्त्री० जय, जीत।
जीतिया० ना० स्त्री० लड़कों के जीने के लिये स्त्रियों का व्रतविशेष।
जीतू० ना० पु० जयवन्त, जीतवैया।
जीना० अ० क्रि० जीता रहना।
जीभ० ना० स्त्री० जिह्वा, रसना, ज़बान्।
जीभारा० गु० गप्पी, बकी।
जीभी० ना० स्त्री० जीभ का मैल उतारने की वस्तु।
जीमना० स० क्रि० खाना, भोजन करना।
जीमार० गु० जो हनने के योग्य है, निज इच्छा मारनेहारा।
जीमूत० ना० पु० मेघ, देवदाली।
जीरक० ना० पु० जीरा सफ़ेद।
जीरन० गु० जीर्ण, पुराना।
जीरा० ना० पु० औषधिविशेष का बीज।
जीर्ण० गु० बुड्ढा, पुराना, सड़ा, जाजर।
जील० ना० स्त्री० गाने में अतितीक्ष्ण स्वर।
जीव० ना० पु० प्राण, शरीरादिका धारक, बृहस्पति, चन्द्रमा सदाजियो।
जीवखानि० ना० पु० ईश्वर, अनादिपुरुष।

जीवगर० } गु० सूर्मा, पोढ़ा,
जीवट० } दृढ़ता।
जीवड़ा० ना० पु० प्राण, प्रियतम।
जीवत० गु० जीते।
जीवदान० ना० पु० रक्षाकरना, प्राण बचाना।
जीवधारी० ना० पु० प्राणी, हैवान्।
जीवन० ना० पु० जीविका, जन्म से मृत्युतक का काल, जल।
जीवनमूल०. ना० स्त्री० जीविका मूल, हयात की जड़।
जीवना० अ० क्रि० जीतारहना।
जीवनि० ना० स्त्री० } सजी-
जीवनिया० ना० स्त्री० } वनबूटी।
जीवन्त० गु० जीता।
जीवन्ती० ना० स्त्री० सजीवनबूटी, गुरच।
जीवभद्रा० } ना० स्त्री० सजीवन
जीववर्द्धिनी० } बूटी।
जीवा० ना० स्त्री० जीवन्ती, जो चापके एकाग्रसे द्वितीयाग्रतक।
जीविका० ना० स्त्री० वृत्ति, निर्वाह का उपाय।
जीह० ना० स्त्री० जीभ, रसना।
जीहारना० अ० क्रि० निराश होना, डरसे दब रहना।
जुआ० ना० पु० छलकर्म, कीटविशेष, माची।
जुआरि० ना० स्त्री० अन्नविशेष।
जुआरी० ना० पु० द्यूतकर्मी, छलकारी, दुष्ट।
जुग० ना० पु० युग।
जुगति० ना० स्त्री० युक्ति, श्लेषद्व्यर्थ।
जुगती० गु० छली, चतुर, ठठोल, द्व्यार्थ बोलनेहारा, उपायी।
जुगनी० ना० स्त्री० } मक्खी जो रातको चमक-
जुगनू० ना० पु० } ती है, गलेका भूषणविशेष।
जुगवना० स० क्रि० रक्षाकरना, बचाना।
जुगवैया० ना० पु० जुगवनेहारा।

जुगाना० स० क्रि० यत्न करना, किसी के उपकार हेतु उपकार करना।

जुगालना० स० क्रि० पागुराना, पागुरकरना।

जुगाली० ना० स्त्री० पागुर।

जुगुप्सा० ना० स्त्री० निन्दा, क्रूरता।

जुगुप्सित० गु० निन्दित, कुत्सित।

जुझावट० ना० पु० युद्ध वा समरभाव।

जुझावना० स० क्रि० युद्धमें मरवाडालना।

जुटना० अ० क्रि० भिड़ना, मिलना, सटना।

जुटाना० स० क्रि० भिड़ाना, मिलाना।

जुटैया० ना० पु० भिड़ैया, लड़ाका।

जुठारना० स० क्रि० जूठा करना।

जुड़ना० अ० क्रि० मिलजाना, सटिजाना।

जुड़ाई० ना० स्त्री० जोड़ने का पैसा, जोड़ने का काम और जुकाम, श्लेष्मा, ठंढ।

जुड़ाना० स० क्रि० मिलाना, मिलवाना, अ० क्रि० ठंढाना, सुस्ताना, दम लेना।

जुड़िया० } ना० पु० दो लड़के जो एक
जुड़िहा० } साथ उपजें।

जुताई० ना० स्त्री० खेत जोतने का काम वा जोतने का पैसा।

जुताना० स० क्रि० हल चला के खेत दुरुस्त करना।

जुतियाना० स० क्रि० जूतों से मारना।

जुद्ध० ना० पु० युद्ध।

जुधिष्ठिर० ना० पु० युधिष्ठिर।

जुन्हरी० ना० स्त्री० जुआर।

जुन्हाई० ना० पु० चन्द्रमा, स्त्री० चांदनी।

जुन्हार० ना० स्त्री० अन्नविशेष जुआर।

जुन्हैया० ना० स्त्री० चांदनी, चन्द्रमा।

जुरादेना० स० क्रि० पाना।

जुराना० अ० क्रि० धीरज होना, स० क्रि० एकट्ठा होना, पाना।

जुरावना० गु० जो पाने के योग्यहै, मिलनहार।

जुरुआ० ना० स्त्री० जोरू, पत्नी।

जुरना० अ० क्रि० मिलना, प्राप्तहोना, सटना, भिड़ना, एकट्ठा होना।

जुल० ना० पु० छल।

जुवती० ना० स्त्री० युवती, जवान औरत।

जुवराज० ना० पु० युवराज, वलीअह्द।

जुवा० गु० युवा० ना० पु० जूप, जुआ।

जुवार० ना० पु० अन्नविशेष।

जुवारी० ना० पु० जुआरी, जूपी।

जुहार० ना० पु० सलाम, प्रणाम।

जू० अव्य० जी।

जूआ० ना० पु० गाड़ी वा हलका काठ जिसमें बैल मचते हैं, माची, द्यूत, जूप।

जूआट० ना० पु० जूआ।

जूआरी० ना० पु० जुआ खेलने में चतुर।

जू० ना० स्त्री० चीलड़।

जूझ० ना० पु० युद्ध, समर।

जूझना० अ० क्रि० लड़ना, लड़ाई में कटना अर्थात् लड़मरना।

जूट० ना० पु० झुण्ड।

जूठ० ना० पु० खायाभया।

जूठन० ना० स्त्री० भोजन के पीछे शेष रहना।

जूठा० गु० जूठ, खायाहुआ।

जूड़० गु० ठंढा, शीतल, ना० पु० शीत।

जूड़ा० ना० पु० ठंढा, शीत, शिरके पीछे गांठि दियेहुये बाल।

जूड़ी० ना० स्त्री० अन्तरिया, जाड़े का रोग।

जूता० } पनही, चमड़े की पादुका।
जूती० }

जून० ना० पु० समय, काल, वक्त।

जूना० ना० पु० तृणकी रस्सी, ऐंठीहुई घास।

जूप० ना० पु० जूआ।

जूपी० गु० जुआरी।

जूरा० ना० पु० बालों की गांठि, चोटी।

जूरी० ना० स्त्री० समूह, जुरी।

जूस० ना० पु० परेह, रोगी का पथ्य, शोरवा।

जूह० ना० पु० समूह, जूआ।

जूही० ना० स्त्री० पुष्प का वृक्षविशेष।
जे० सर्व० जो, सब।
जेट० ना० स्त्री० ढेर।
जेठ० ना० पु० पतिका बड़ाभाई, ज्येष्ठ।
जेठरा० गु० पहिलौठा, पतिका बड़ाभाई।
जेठा० गु० पहिलौठा, बड़ा, कुसुम का पहिलारंग।
जेठानी० ना० स्त्री० जेठकी स्त्री।
जेठी० गु० बड़ी।
जेठीमधु० ना० पु० मुलहठी।
जेठौत० ना० पु० जेठका पुत्र।
जेता०
जेतिक० } गु० जितना।
जेब० ना० पु० खलीता, पाकट, फ़ारसी शब्द है।
जेयमान० गु० जीतनेवाला, जयमान।
जेर० ना० पु० खेरी।
जेबड़ा० ना० पु० रस्सा, डोर।
जेवना० स० क्रि० खाना, भोजन करना।
जेवनार० ना० स्त्री० खाना, भोजन, यज्ञ।
जेवरी० ना० स्त्री० रस्सी, डोरि।
जेहर० ना० पु० स्त्रियों का भूषणविशेष।
जैत० ना० पु० वृक्षविशेष, रागिनीविशेष।
जैन० ना० पु० नास्तिकों का मतविशेष।
जैनी० गु० जैन मतवाला, सरावक, सरौगी।
जैमाला० ना० स्त्री० जयमाला, जीतिकी माला।
जैमिनि० ना० पु० मुनिविशेष।
जैमिनी० गु० ब्रह्मवादी।
जैसा० अव्य० यथा।
जैहैं० अ० क्रि० जायँगे।
जो० सर्व० यह शब्द सम्बन्ध का बोधक है अव्य० यथा, यदि।
जोआरभाटा० ना० पु० समुद्र के जलका चढ़ाव उतार।
जोइ० ना० स्त्री० जोरू, दुलहन।
जों० अव्य० जो, यदि, जैसा, ज्यों।
जोंक० ना० स्त्री० जलौका, रक्तपा, जलजंतु।
जोंकर० अव्य० जिसप्रकार।
जोंही० अव्य० जिससमय।
जोख० ना० स्त्री० तोल।
जोखना० स० क्रि० तोलना।
जोखिम० ना० स्त्री० चिन्ता, शंका, घटी।
जोखिमी० ना० पु० जोखिम उठानेहारा।
जोखों० ना० स्त्री० जोखिम।
जोग० ना० पु० योग।
जोगमाया० ना० स्त्री० मायारूपीशक्ति जो योगियों में है जिसकरके वे कहते हैं कि हम अपना स्वरूप अपने वश राखें।
जोगवत० क्रि० परखत, राखत, रक्षत।
जोगा० गु० योग्य।
जोगाभ्यास० ना० पु० जोग का अभ्यास।
जोगिन्० ना० स्त्री० जोगन्, जोगी की स्त्री।
जोगिनी० ना० स्त्री० देवी की सहचरी।
जोगिया० ना० पु० जोगी० गु० रंगविशेष। ना० स्त्री० रागिनीविशेष।
जोगी० ना० पु० योगी, शान्त।
जोगेश्वर० ना० पु० योगेश्वर, तपस्वी, पुजारी विशेष श्री महादेवजी, श्रीविष्णुनारायण।
जोग्य० गु० योग्य, उत्तम, अच्छा।
जोजन० ना० पु० योजन, चारकोस।
जोट० ना० पु० साथ, जोड़ी गु० सम।
जोटा० ना० पु० जोड़ा।
जोड़० ना० पु० मेल, गांठ, थेगली, मीज़ान।
जोड़ती० ना० स्त्री० लेखा, गिनती।
जोड़न० ना० पु० सोहागा, सांठन, जामन।
जोड़ना० स० क्रि० मिलाना, एकट्ठा करना, लगाना, संकलन करना, धन बटोरना, बनाना, गांठना।
जोड़ा० ना० पु० युग्म, दूसरा, जूता, धोती, एक बार पहिनने के कपड़े।
जोड़ाई० ना० स्त्री० जोड़ने का काम वा पैसा।

**जोड़ी०** ना० स्त्री० युग्म, दूसरा।
**जोत०** ना० स्त्री० उजाला, प्रकाश, ज्योति, हल प्रवाह, किरण, टेम, दृष्टि।
**जोतना०** स० क्रि० नांधना, जूये में लगाना, हलाई करना, खेत बनाना।
**जोतमान्०** गु० ज्योतिष्मान्, चमकदार।
**जोतार०** ना० पु० हलवाहा, किसान।
**जोति०** ना० स्त्री० जोत, प्रकाश, तारा, द्युति, आंखिआदि की ईश्वर।
**जोतिष०** ना० पु० ज्योतिष, नजूम।
**जोतिषी०** गु० ज्योतिषी, नजूमी।
**जोतिःस्वरूप०** गु० तेजस्वी, एक नाम श्रीभगवान् का है।
**जोती०** ना० स्त्री० तराजू के पल्ले की रस्सी, खड़ाऊं की रस्सी।
**जोत्स्ना०** ना० स्त्री० चन्द्रिका, चन्द्रकला।
**जोत्स्नी०** ना० स्त्री० राति, रैन, निशा।
**जोधन०** ना० पु० लड़ाई, समर।
**जोधा०** ना० पु० योद्धा।
**जोन०** } ना० स्त्री० योनि।
**जोनि०** }
**जोन्ह०** ना० पु० चन्द्रमा, चांदनी।
**जोबन०** ना० पु० यौवन, छाती, स्तन।
**जोबनवती०** गु० यौवनवती।
**जोबनमा०** } ना० पु० जोबन, यौवन।
**जोबना०** }
**जोय०** ना० स्त्री० पत्नी, भार्य्या, जोरू।
**जोयसी०** गु० ज्योतिषी।
**जोरू०** ना० स्त्री० पत्नी, भार्य्या, बीबी।
**जोला०** ना० पु० छल, धोखा।
**जोवत०** क्रि० चाहत, देखत।
**जोवना०** स० क्रि० देखना, ताकना।
**जोसी०** ना० पु० ज्योतिषी, जातिविशेष।
**जोहना०** स० क्रि० बाट देखना, ढूंढना।
**जौ०** ना० पु० अन्नविशेष, यव, अव्य० जब, यदि।
**जौतुक०** ना० पु० यौतुक, दायजा।
**जौन०** सर्व० जो।
**जौलौं०** अव्य० जबतक।
**ज्या०** ना० स्त्री० माता, पृथ्वी, कमानकाडोरा।
**ज्याना०** स० क्रि० पालना, जिलाना।
**ज्येष्ठ०** ना० पु० जेठका महीना, बड़ाभाई, गु० श्रेष्ठ, उत्तम।
**ज्येष्ठा०** ना० स्त्री० १८ अठारहवां नक्षत्र।
**ज्योति०** ना० स्त्री० जोति, लालचन्दन।
**ज्योतिर्गण०** ना० पु० तारागण।
**ज्योतिष०** ना० पु० विद्याविशेष, शास्त्रविशेष, इल्मनजूम।
**ज्योतिषी०** ना० पु० ज्योतिषशास्त्रका ज्ञाता, नजूमी, पण्डित।
**ज्योतिष्मती०** ना० स्त्री० मालकंगनी।
**ज्योतिष्मान्०** गु० प्रतापी, तेजस्वी।
**ज्योत्स्ना०** ना० स्त्री० चांदनी।
**ज्योनार०** ना० स्त्री० खाना, पाक, भोजन।
**ज्वर०** ना० पु० तप, ताप, बुखार।
**ज्वरविनाशिनी०** ना० स्त्री० गुरुच, मजीठ।
**ज्वरा०** ना० स्त्री० मृत्यु, मौत
**ज्वरान्तक०** ना० पु० चिरायता।
**ज्वलन०** ना० स्त्री० जलन, आगिकी जीभविशेष।
**ज्वार०** ना० पु० अन्नविशेष।
**ज्वारी०** ना० पु० जुआरी।
**ज्वाला०** ना० स्त्री० आंच, लौ, लपक, आग।
**ज्वालामुखी०** ना० स्त्री० स्थानविशेष जिस में अग्नि सदैव प्रज्वलित रहती है।

## [झ]

**झंखाड़०** ना० पु० विना पत्ते के वृक्ष।
**झंझट०** ना० पु० झगड़ा, घबराहट।
**झंझटी०** गु० कठिन, झगड़ालू।
**झंझना०** गु० चिड़चिड़ा।
**झंझनाना०** अ० क्रि० टनटनाना, बजना और पड़पड़ाना।

**झंझनाहट॰** ना॰ स्त्री॰ चिड़चिड़ाहट, झनकार।
**झंझावायु॰** ना॰ पु॰ प्रचण्डपवन, आंधी।
**झंवाना॰** अ॰ क्रि॰ धूपसे कृष्णवर्ण होना, स॰ क्रि॰ झामेसे पांवधोना, सुखाना।
**झक॰** ना॰ पु॰ क्रोध।
**झकझोरी॰** ना॰ स्त्री॰ छीनाछानी।
**झकना॰** अ॰ क्रि॰ बकना, बकबककरना, हाय हाय करना।
**झकरी॰** ना॰ स्त्री॰ दोहनी।
**झकाझक॰** गु॰ झलाझल।
**झकोर॰** ना॰ स्त्री॰ टोटा, विपत्ति, बौछार।
**झकोरना॰** स॰ क्रि॰ चलाना, जैसे आंधीमें झड़ी।
**झकोरा॰** ना॰ पु॰ झपास, वायुसमेत झड़ी, बौछार।
**झकोलना॰** स॰ क्रि॰ डुलाना।
**झक्कड़॰** ना॰ पु॰ आंधी, चौवायी।
**झक्की॰** ना॰ पु॰ विना प्रयोजन बकवादी।
**झखना॰** अ॰ क्रि॰ झीखना।
**झगड़ना॰** अ॰ क्रि॰ लड़ना, भिरना।
**झगड़ा॰** ना॰ पु॰ लड़ाई, रगड़ा।
**झगड़ाना॰** स॰ क्रि॰ झगड़ा कराना, लड़ाना।
**झगड़ालिन्॰** गु॰ लड़ाकाछी।
**झगड़ालू॰** ना॰ पु॰ लड़ाका।
**झगा॰** ना॰ पु॰ झींगा।
**झगुला॰** ना॰ पु॰ कुर्त्ता।
**झझ॰** ना॰ पु॰ लम्बीदाढ़ी।
**झझकारना॰** स॰ क्रि॰ दबकाना, दबाना।
**झझला॰** ना॰ पु॰ मिठाईविशेष।
**झञ्झर॰** ना॰ पु॰ झझर।
**झञ्झरी॰** ना॰ स्त्री॰ झसेला।
**झञ्झा॰** ना॰ स्त्री॰ झड़ीसमेत आंधी।
**झञ्झावायु॰** ना॰ पु॰ प्रचण्ड पवन, आंधी।
**झट॰** गु॰ उतावली, अव्य॰ शीघ्र।
**झटक॰** ना॰ स्त्री॰ खसोट, उछाल।
**झटकना॰** स॰ क्रि॰ खसोटना, निझोटना, अ॰ क्रि॰ दुबला होजाना।
**झटका॰** गु॰ जो झटकेसे मारागया, फाड़ागया, ना॰ पु॰ खींच, खसोट।
**झटकाना॰** स॰ क्रि॰ झटका लगाना।
**झटपट॰** अव्य॰ तुरन्त, शीघ्र।
**झटास॰** ना॰ पु॰ झड़ाक, बौछार।
**झटिति॰** अव्य॰ तुरन्त, शीघ्र।
**झड़॰** ना॰ स्त्री॰ झड़ी, तालाविशेष, तालेकी कल।
**झड़न्॰** ना॰ स्त्री॰ टपकन, जैसे फलपककर गिरते हैं, बत्तीकी टेम का फूल।
**झड़ना॰** अ॰ क्रि॰ टपकना, गिरना, पतनहोना, निकलना, छनना, नौबतबजना।
**झड़प॰** ना॰ स्त्री॰ कड़ुआहट, हमला।
**झड़पना॰** अ॰ क्रि॰ लड़ना, हमलाकरना।
**झड़पाझड़पी॰** ना॰ स्त्री॰ लड़ाई, दपटादपटी।
**झड़पाना॰** स॰ क्रि॰ लड़ाना।
**झड़बेर॰** ना॰ पु॰ } जंगलीबेर।
**झड़बेरी॰** ना॰ स्त्री॰ }
**झड़वाना॰** स॰ क्रि॰ झड़ाना।
**झड़ाक॰** } ना॰ पु॰ उतावली, फुर्त्ती, हड़-
**झड़ाका॰** } बड़ी।
**झड़ाझड़॰** अव्य॰ चटपट।
**झड़ाना॰** स॰ क्रि॰ झड़ दिलवाना, झाड़फूक कराना।
**झड़ी॰** ना॰ स्त्री॰ लगातारवृष्टि, और ऊपरी प्राप्ति।
**झड़ौता॰** ना॰ पु॰ फलादिका अन्तसमय।
**झण्डा॰** ना॰ पु॰ ध्वजा, पताका।
**झण्डूला॰** गु॰ पत्तोंसे घना वृक्ष, बालोंसे घना शिर।
**झनक॰** ना॰ पु॰ धातु की दो वस्तु भिड़ने का शब्द।
**झनकना॰** अ॰ क्रि॰ झनझनाना।
**झनकार॰** ना॰ स्त्री॰ झंझकार, टनकार।
**झनकारना॰** स॰ क्रि॰ बजाना।
**झनवां॰** ना॰ पु॰ धानविशेष।
**झप॰** अव्य॰ झट, तुरन्त, शीघ्र।

झपकना० स० क्रि० झलना, पंखा हिलाना, अ० क्रि० लपकना, झपटलेना, पलकमारना।
झपकाना० स० क्रि० पलकमारना, मटकाना।
झपकी० ना० स्त्री० लपक, मटकी, नींद।
झपट० ना० स्त्री० लपक, चढ़ाई, डाट।
झपटना० अ० क्रि० लपकना, चढ़ि दौड़ना।
झपट्टा० ना० पु० धावा, दौड़, लपक।
झपट्टामारना० स० क्रि० झपटलेना।
झपलाना० स० क्रि० खंगालना, धोना।
झपाझपी० ना० स्त्री० उतावली, हड़बड़ी।
झपात० ना० स्त्री० स्फूर्त्ति, जल्दी।
झपाना० अ० क्रि० झपकीलेना, ढपाना।
झँपास० ना० स्त्री० फूही, झीसी।
झपासिया० गु० छली, अधर्मी।
झबकाना० स० क्रि० घबरा करना।
झबिया० ना० पु० भूषणविशेष।
झबुआ० गु० जिस कुत्ते वा बकर के बाल बड़े बड़े हों, झुकाहुआ।
झब्बा० ना० पु० लटकना।
झमक० ना० स्त्री० चमक।
झमकड़ा० ना० पु० चटकीला, भटक।
झमकना० अ० क्रि० चमकना, नाचना।
झमका० ना० पु० प्रताप, झन।
झमकी० ना० स्त्री० झनक, झलक, चमक।
झमझम० अव्य० लगातार।
झमझमाना० अ० क्रि० चमकना।
झमरझमर० अव्य० बूंद बूंद से।
झमाका० ना० पु० झड़ी, वेगताई।
झमाझम० अव्य० झमझम।
झम्पा० गु० झपाहुआ, ढकाभया, ना० पु० चंगुल।
झर० ना० पु० सोता, झरना, झड़ी, जलन।
झरना० ना० पु० सोता, झरना, झारनेवाला।
झरोखा० ना० पु० झंझरी, खिड़की।
झझर० ना० पु० झंझर।
झर्रा० ना० पु० सोता झाड़नेका करछा, बहुत छेदका सूपविशेष, अ० क्रि० झड़ना, गिरना।
झल० ना० स्त्री० क्रोध, जलजलाहट, आगकी उष्णता।
झलक० ना० स्त्री० चमक, उजाला।
झलकना० अ० क्रि० चमकना।
झलका० ना० पु० फफोला, फोला।
झलकाना० स० क्रि० चमकाना, उज्ज्वल कराना।
झलकी० ना० स्त्री० दृष्टि।
झलझल० ना० पु० चमक, लहके।
झलझलाना० अ० क्रि० चमकना, क्रोधित होना।
झलझलाहट० ना० स्त्री० चमक, परपराहट।
झलना० स० क्रि० झपकना, अ० क्रि० सुधरना।
झलमल० ना० पु० चमक।
झलहाया० गु० बसवासी, ज्वलित।
झलाझल० गु० ज्योतिष्मान्, स्त्री० झलक।
झलाबोर० गु० चमकीला, भड़कीला, ना० पु० चमत्कार।
झलाना० स० क्रि० सुधारना, जोड़ना।
झलार० ना० पु० झाड़ी।
झष० ना० पु० मछली, मत्स्य।
झषकेतु० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नजी।
झाँई० ना० स्त्री० परछाँई, लहसुन, मुखपर श्यामता होजाना।
झाँक० ना० पु० ताकना, हिरण वा पक्षियों का झुण्ड।
झाँकड़० ना० पु० झाड़ी।
झाँकना० स० क्रि० झपकेदेखना, ताकना।
झाँकाझाँकी० ना० स्त्री० देखादाखी, ताका ताकी।
झाँख० ना० पु० हिरणविशेष।
झाँझ० ना० स्त्री० बड़ा मंजीरा, झगड़ा।
झाँझट० ना० पु० झगड़ा, रगड़ा।
झाँझा० ना० पु० कीटविशेष, झगड़ा।
झाँझिया० गु० क्रोधी, बखेड़िया।

**झांझो०** ना० स्त्री० खेलविशेष।

**झांपना०** स० क्रि० ढांपना, छुपाना।

**झांवरा०** गु० काला।

**झांवली०** ना० स्त्री० चोचल, हावभाव।

**झांवा०** ना० पु० अत्यन्त पकी ईंट।

**झांसना०** स० क्रि० उभारना।

**झांसा०** ना० पु० फुसलावा, धोखा।

**झांसी०** ना० पु० बुन्देलखण्ड में नगरविशेष।

**झांसू०** ना० पु० फुसलाऊ, धोखाबाज।

**झाऊ०** ना० पु० छोटा वृक्षविशेष।

**झाग०** ना० पु० फेना।

**झाझा०** ना० पु० मादक वस्तु।

**झाड़०** ना० पु० छोटावृक्ष, जो पीतलआदि का बनता है।

**झाड़खण्ड०** ना० पु० वन, बैजनाथ के पास का वनविशेष, गु० झण्डूला, छन।

**झाड़न०** ना० पु० बुहारन, कचरा, कर्कट, कूड़ा, पोंछन।

**झाड़ना०** स० क्रि० बुहारना, फर्चाकरना, पटकना, निकालना।

**झाड़न्त०** अव्य० सभी।

**झाड़ा०** ना० पु० गुह, मलकात्याग, हगना।

**झाड़ी०** ना० स्त्री० बधना, वन, जंगल।

**झाड़ू०** ना० स्त्री० बढ़नी, बुहारी।

**झापा०** ना० पु० टोकरीविशेष।

**झावा०** ना० पु० चमड़ेका पात्र, तेल, घीमापने के लिये।

**झामा०** ना० पु० झांवा।

**झार०** ना० पु० आगकी लव, ज्वाला, सब, अव्य० कड़ुआहट।

**झारि०** अव्य० सब, तमाम, कमाल।

**झारी०** ना० स्त्री० थाली, झाडी, दो मुखका जलपात्रविशेष।

**झाल०** ना० पु० कड़ुआहट, बड़ी टोकरी, धातुका सुधारना।

**झालना०** स० क्रि० चिकनाना, ओपना, जोड़ना।

**झालर०** ना० स्त्री० आंचल, गुच्छ।

**झालरा०** ना० पु० सोता, गु० बढ़ाहुआ।

**झिझक०** ना० स्त्री० चौंक, भड़क, डर, भय।

**झिझकना०** अ० क्रि० चौंकना, भड़कना, डरना।

**झिझका०** गु० चौंकाहुआ, भयवान्।

**झिझकाना०** स० क्रि० भड़काना, डराना, चौंकाना, भयकाना।

**झिझकी०** ना० स्त्री० भड़की, चौंक, डर।

**झिञ्झा०** ना० पु० जिगनावृक्ष, फूटीकौड़ी।

**झिञ्झाणी०** ना० स्त्री० जिगनावृक्ष।

**झिञ्झा०** ना० स्त्री० फूटीकौड़ी।

**झिड़क०** ना० स्त्री० धमकी, भबकी, गटकी।

**झिड़कना०** स० क्रि० घुड़कना, दबकाना, धमकाना, झटकादेना।

**झिड़काझिड़की०** ना० स्त्री० झगड़ा, झिगड़ी।

**झिड़की०** ना० स्त्री० घुड़की।

**झिनहट्टा०**
**झिनहड्डा०** } गु० सुखटा।

**झिरझिर०** गु० जो पतलीधार से बहता, पतला।

**झिरझिरा०** गु० बहुत पतला।

**झिरझिराना०** अ० क्रि० बहना, तिरतिराना।

**झिलगा०** ना० पु० खाटकी पुरानी और टूटी रस्सी की बिनावट, गु० पुरानीखाट।

**झिलंगा०** ना० पु० पदातिविशेष।

**झिलम०** ना० स्त्री० युद्धमें पहिरनेके लिये लोहे की कुर्ती, टोपपर लोहेका कटोरा, बख्तर।

**झिलमिल०** ना० पु० द्वारविशेष।

**झिलमिलाना०** अ० क्रि० लहराना, चिनगी निकलना।

**झिल्झिका०** ना० स्त्री० झींगुर।

**झिल्ली०** ना० स्त्री० झींगुर, अतिसूक्ष्म चमड़ा, खेड़ी।

**झींकना०** अ० क्रि० पछिताना, शोकित होना, पीनस में आना।

**झींगट०** ना० पु० माझी, पटनी।

**झींगा०** ना० पु० जलकीट प्रसिद्ध।

**झींगुर॰** ना॰ पु॰ कीटविशेष, घुरघुरा।

**झीण॰**
**झीन॰** गु॰ सूक्ष्म, पतला, बारीक।
**झीना॰**

**झीरुका॰** ना॰ स्त्री॰ झींगुर कीट।

**झील॰** ना॰ स्त्री॰ बहुत बड़ा जलाशय, बड़ा-ताल।

**झीसी॰** ना॰ स्त्री॰ फूही, फुहार छोटी २ बूंदें।

**झुकना॰** अ॰ क्रि॰ निहुरना, चलना, क्रोधित होना, व्याकुल होना।

**झुकाना॰** स॰ क्रि॰ निहुराना, लचाना, क्रोधित करना, अ॰ क्रि॰ क्रोधित होना।

**झुकावट॰** ना॰ स्त्री॰ चलावट, निहुराई।

**झुंझलाना॰** अ॰ क्रि॰ चिड़चिड़ाना, जल जलना।

**झुठलाना॰**
**झुठाखना॰** स॰ क्रि॰ झूठा करना, मिथ्या बतलाना, अशुद्ध करना।

**झुण्ड॰** ना॰ पु॰ मंडल, समूह, अखाड़ा।

**झुण्डा॰** ना॰ पु॰ पताका, झंडा।

**झुण्डी॰** ना॰ स्त्री॰ झाँड़ी, वृक्षोंका समूह।

**झुन॰** ना॰ पु॰ थोड़ी समानता।

**झुनझुनाना॰** ना॰ पु॰ खिलौनाविशेष।

**झुनझुनी॰** ना॰ स्त्री॰ पैजनी।

**झुमका॰** ना॰ पु॰ कानका भूषणविशेष, फूल वा फलका गुच्छा, फूलविशेष।

**झुरमुट॰** ना॰ पु॰ झाड़, मंडली, झुमक।

**झुराना॰** अ॰ क्रि॰ सूखना स॰ क्रि॰ सुखाना।

**झुराने॰** गु॰ सूखे।

**झुरियाना॰** स॰ क्रि॰ सिकाना, खोड़ना, पोंछना, उज्ज्वल करना।

**झुरी॰** ना॰ स्त्री॰ शरीरके मांसका सिकोड़।

**झुर्ना॰** अ॰ क्रि॰ कुम्हलाना, सूखना।

**झुलकाना॰** स॰ क्रि॰ जलादेना, भुलसाना।

**झुलना॰** अ॰ क्रि॰ लटकना, डुलना।

**झुलझुली॰** ना॰ स्त्री॰ कानके पात।

**झुलसना॰** अ॰ क्रि॰ भुलसना, जलजाना।

**झुलसाना॰** स॰ क्रि॰ भुलसाना, जलादेना।

**झुल्ला॰** ना॰ पु॰ पहिरने का वस्त्रविशेष।

**झूंझल॰** ना॰ पु॰ क्रोध का आवेश।

**झूंटर॰** ना॰ स्त्री॰ भूमि जिस में वर्ष में दो बार अन्न बोतेहैं।

**झूंठनझांठन॰** ना॰ पु॰ छूटा, बचा।

**झूठ॰** गु॰ मिथ्या, अशुद्ध।

**झूठा॰** गु॰ मिथ्यावादी, छूतहुआ, ना॰ पु॰ उच्छिष्ट खाना खायके रहगया।

**झूना॰** ना॰ पु॰ पकानारियल, महीन वस्त्र, चूल्हे में ईंधन और आग रखना।

**झूमक॰** ना॰ स्त्री॰ झुमट।

**झूमझूम॰** ना॰ पु॰ धन, लटक लटक।

**झूमना॰** अ॰ क्रि॰ लहरना, हिलाना, ऊंघना, उमंडना, घिरना।

**झूरना॰** स॰ क्रि॰ कूटना, पेड़से फल झड़ना, सूखना।

**झूरा॰** गु॰ सूखा, मुरझायाहुआ।

**झूल॰** ना॰ स्त्री॰ बैलादि पशुओं का ओढ़ना।

**झूलना॰** अ॰ क्रि॰ डोलना, हिलना, लटकना, ना॰ पु॰ छन्दविशेष।

**झूला॰** ना॰ पु॰ हिंडोला, ढाख वृक्ष।

**झोंक॰** ना॰ स्त्री॰ ढकेल, धक्का, झकोड़।

**झोंकना॰** स॰क्रि॰ ढकेलना, फेंकना, ईंधन भाड़ में डालना।

**झोंटा॰**ना॰पु॰
**झोंटी॰**ना॰स्त्री॰ शिरके पीछे के बाल झूले का हिलाना।

**झोंपड़ा॰** ना॰ पु॰
**झोंपड़ी॰** ना॰ स्त्री॰ मढ़ी छप्पर का छोटा घर।

**झोंपा॰** ना॰ पु॰ फलका गुच्छा, बाल, घिराव।

**झोंरा॰** ना॰ पु॰ गुच्छा।

**झोक॰** ना॰ स्त्री॰ झोंक।

**झोका॰** ना॰ पु॰ झोंका, ठोकर, ठेस, झकोरा।

**झोझ॰** ना॰ पु॰ खोंता, ओझ, बड़ापेट।

**झोझा॰** ना॰ पु॰ ओझा, बड़पेटा, बड़ापेट।

झोंटिंग० ना० पु० प्रेतभेद।
झोटी० ना० स्त्री० चोटी।
झोल० ना० स्त्री० कपड़े की सकोड़ वा चुनत, बच्चे।
झोला० ना० पु० थैला, अर्द्धांग।
झोली० ना० स्त्री० थैली।
झौंरा० गु० साँवला, पीला।
झौंसना० अ० क्रि० बहुत जलजाना।
झौंसा० गु० जो बहुत जलगया।
झौड़० ना० पु० झगड़ा।
झौरी० ना० स्त्री० खेतकी घास।

[ट]

टक० ना० स्त्री० स्वभाव, ताक, दृष्टि।
टकटकी० ना० स्त्री० घूर, ताक।
टकना० अ० क्रि० सिलना, सिलजाना।
टकराना० स० क्रि० टकर खिलवाना, टकर मारना, अ० क्रि० टटोलना।
टकवाना० स० क्रि० सिलवाना, सिलाना।
टकसाल० ना० पु० स्थान, जहां रुपया आदि बनाया जाता है।
टकसालिया० } ना० पु० टकसाल का काम
टकसाली० } करनेहारा।
टका० ना० पु० दो पैसे।
टकाई० ना० स्त्री० सिलाई कर।
टकी० ना० स्त्री० ताक, टुकी।
टकुआ० ना० पु० तकला, तकुआ।
टकैत० } गु० धनवान्, मालदार।
टकैता० }
टकोर० } ना० पु० चुचकारी, चुमकारी, अति छोटा कच्चा आंब, ढोल बजाने की
टकोरा० } गति वा शब्द।
टकोरना० स० क्रि० सेंकना,ततारना।
टकौना० ना० पु० टका।
टक्कर० ना० स्त्री० ठोकर, ठेलठेली, शिरसे शिर लड़ाना, जैसे मेंढे लड़ाते हैं।
टखना० ना० पु० गुल्फ, घुटना।
टघलना० अ० क्रि० पिघलना।
टघलाना० स० क्रि० पिघलाना।
टंक० ना० पु० चार माशे की तौल, खड्ग।
टंकण० ना० पु० सोहागा।
टंकोर० ना० स्त्री० धनुष के रोदे का शब्द।
टंकोरना० स० क्रि० धनुष की पनच झाड़ना।
टंगना० अ० क्रि० लटकना।
टंगड़ी० ना० स्त्री० टांग, गोड़।
टञ्च० गु० सूम, कृपण।
टटका० गु० नया, नवीन, ना० पु० उतारा-पुतारा।
टटकी० ना० स्त्री० नई, नवीन, ताज़ी।
टटवानी० ना० स्त्री० छोटी घोड़ी।
टटिया० ना० स्त्री० टट्टी, झांप, द्वार बन्द करने को जो तृणादि की बनती है।
टटीहरा० ना० पु० } पक्षीविशेष।
टटीहरी० स्त्री० }
टटुआ० ना० पु० छोटा घोड़ा।
टटुई० ना० स्त्री० छोटी घोड़ी।
टटोलना० स० क्रि० टोयाटोई करना, अँगुलियों से दबाना।
टड्डी० ना० स्त्री० चांदी, बाड़।
टट्टर० } ना० पु० बड़ी टट्टी।
टट्टा० }
टट्टी० ना० स्त्री० टटिया, फरकिया।
टट्टू० ना० पु० छोटा घोड़ा।
टण्टा० ना० पु० बखेड़ा, लड़ाई, खटापटी।
टप० ना० पु० कूद फांद, बूंद।
टपक० ना० स्त्री० पीड़ा, टपकने का शब्द।
टपकना० अ० क्रि० टपटपाना, चूना, छना, रिसना, टीसना।
टपका० ना० पु० पानी की बूंद, फल जो वृक्ष से पककर गिरता है यथा आंब।
टपकाना० स० क्रि० छुआना, छानना, रसाना।
टपजाना० अ० क्रि० भूलजाना, कूदजाना।
टपपड़ना० स० क्रि० औरके काममें हाथदेना।

टपना० अ० क्रि० भूलना, कूदना।
टपाना० स० क्रि० भुलाना, फंदवाना, कुदवाना।
टप्पा० ना० पु० डाकघर, डाकघर, मैदान,जहाँ तक गोली जाती है, रागिनीविशेष।
टमक० ना० स्त्री० जो शब्द पानी गिरने से किसी गड्ढे वा बर्त्तन में होता है।
टमकना० अ० क्रि० चूना, टमकहोना,बोलना।
टर० ना० स्त्री० शेखी, ऐंठ, गु० मतवाला, अचेत।
टरटर० ना० स्त्री० बकबक।
टरटराना० स० क्रि० बकबक करना।
टैंरटरी० ना० स्त्री० बकबकी।
टरना० अ० क्रि० डुलना, टलना, हटना।
टराना० स० क्रि० टलवाना, हटाना।
टर्रा० गु० मगरा, दुष्ट, बकी, बलवान्।
टर्राना० स० क्रि० बकबक करना, मगराना, ऐंठके बात करना।
टलजाना० } अ० क्रि० हटजाना, जाता
टलना० } रहना।
टलप० ना० स्त्री० टुकड़ा, छांट।
टलमलाना० अ० क्रि० डगमगाना, ललचाना।
टलाटली० ना० स्त्री० मिष, हीलाबाजी।
टलाना० स० क्रि० हटाना, छिपाना।
टवर्ग० ना० पु० टकारादि पांचअक्षर।
टसक० ना० स्त्री० चमक, टीस।
टसकना० अ० क्रि० हिलना, चसकना, चटना।
टसकाना० स० क्रि० हिलाना, चसकाना।
टसना० अ० क्रि० मसकना, फटना।
टहक० ना० स्त्री० गांठकी पीड़ा।
टहकना० अ० क्रि० दुखना, पीड़ापाना।
टहटह० } ना० पु० सुन्दरता, नवीन।
टहटहा० }
टहना० ना० पु० शाखा, डाल।
टहनी० ना० स्त्री० शाखी, डाली।

टहल० ना० स्त्री० गृहस्थी, सेवा, काम।
टहलना० स० क्रि० हवाखाना, बाहर फिरना।
टहलनी० ना० स्त्री० गृहस्थिनि, दासी, लौंडी।
टहलाना० स० क्रि० चलाना, फिराना, हवाखिलाना।
टहलुआ० ना० पु० सेवक, दास, परिश्रमी।
टहलुई० ना० स्त्री० दासी, लौंड़ी।
टहो० ना० पु० जन्मते पुत्रका शब्द।
टहोका० ना० पु० घूंसा, चपेटा।
टांक० ना० पु० टंक।
टांकना० स० क्रि० सीवना, लिखना।
टांका० ना० पु० लपकी, तेपची, सांठन,जोड़न।
टांकी० ना० स्त्री० चट, खसरा, कुदरा, कुल्हाड़ी।
टांकू० गु० टांकनेहारा।
टांग० ना० स्त्री० एंड़ीसे घुटने तक का नाम, लटकाव।
टांगन० ना० पु० पहाड़ी घोड़ाविशेष।
टांगना० स० क्रि० लटकाना, हिलगाना।
टांगी० ना० स्त्री० टांकी।
टांच० } गु० हठीला, ढेढ़, कुजाति, ऊंजड़।
टांचड़ा० }
टांट० ना० स्त्री० चांदी।
टांठा० गु० पोढ़ा, कड़ा, ठोस, कम।
टांठाई० ना० स्त्री० पोढ़ाई, कड़ाई।
टांड़० ना० पु० मचान।
टांड़ा० ना० पु० खेप, बनिजार की वस्तु।
टाट० ना० पु० सनका बिनाहुआ बिछौना, अजाड़।
टाटक० गु० टटका।
टाटा० ना० पु० टांटा, बड़ी टट्टी।
टाटी० ना० स्त्री० टट्टी।
टाड़ी० ना० स्त्री० छोटी कुल्हाड़ी।
टानना० स० क्रि० तानना, खैंचना।
टाप० ना० स्त्री० घोड़े के खुरका शब्द, घोड़े की अगले खुरोंकी मार।
टापना० अ० क्रि० टापमारना, ढूंढना।

टापा० ना० पु० खांचा।

टापू० ना० पु० द्वीप, जजीरह।

टाबर० ना० पु० छोटीझील।

टारना० स० क्रि० टालना।

टाल० ना० स्त्री० टालमटोल, छलकरके काल काटना, अन्न वा लकड़ीआदिका ढेर, टाल, मल्लयुद्ध करने में छल।

टालटोल० ना० पु० टालमटोल।

टालना० स० क्रि० छल करके बातफेरना, वा बदलना वा उड़ाना, हटाना।

टालमटोल० ना० स्त्री० चकरमकर, हीलाबाजी।

टाला० ना० पु० टाल।

टिकटिकी० ना० स्त्री० चिपकली।

टिकठी० ना० स्त्री० काठकी तिपाई वा चौपाई, अरथी।

टिकना० अ० क्रि० रहना, ठहरना।

टिकली० } ना० स्त्री० बिन्दी जिसको स्त्रियां
टिकुली० } माथेपर लगाती हैं।

टिकाऊ० गु० ठहराऊ, चलाऊ।

टिकाना० स० क्रि० रखना, ठहराना, अटकाना।

टिकाव० ना० पु० ठहराव, अटकाव।

टिकासुर० ना० पु० टिकनेकी जगह, टिकाव।

टिकासा० गु० टिकनेहारा, ठहरनेवाला।

टिकिया० ना० स्त्री० बाटी, अंगाकड़ी, छोटीरोटी, किसी वस्तुको बांटके गोलाकार चपटी वस्तु बनाना।

टिकोर० ना० पु० लोवढ़ी, लोपड़ी।

टिक्कड़० } ना० पु० अंगाकड़ी, कड़ी गोलरोटी
टिक्कर० } विशेष।

टिकली० ना० स्त्री० टिकली।

टिक्की० ना० स्त्री० टिकिया।

टिघलना० अ० क्रि० पिघलना, गलना।

टिघलाना० स० क्रि० पिघलाना, गलाना।

टिटकारना० स० क्रि० टिकटिक करके पशुको चलाना वा हांकना।

टिटकारी० ना० स्त्री० टिकटिक करना।

टिटीहरी० } ना० स्त्री० पक्षीविशेष।
टिट्टिभ० }

टिड्डा० ना० पु० } उड़ता कीड़ा।
टिड्डी० स्त्री० }

टिपका० ना० पु० रंगका चिह्न जो अँगुली से लगाहै।

टिप्पन० ना० पु० टीका, विवर्ण।

टिप्पस० ना० स्त्री० अभिमान, दाव।

टिमाना० स० क्रि० प्रतिदिन थोड़ीसी जीविका देना।

टिमाव० ना० पु० प्रतिदिन थोड़ीसी जीविका।

टिमटिम० ना० पु० सर्राटा, शब्द।

टिमटिमाना० अ० क्रि० झलझलाना, जगमगाना।

टिहरा० ना० पु० छोटागांव, पुरवा।

टिहरी० ना० स्त्री० छोटीसी बस्ती।

टींट० ना० स्त्री० करील का फल।

टीक० ना० स्त्री० शिर वा गलेका गहना।

टीका० ना० पु० तिलक, टिप्पन, माथेका गहना विशेष, अर्थ कहना वा लिखना, ब्याहमें कन्या की ओर से लग्नबन्धन के लिये प्रथम जो कुछ जाता है, राज्याभिषेक।

टीटली० ना० स्त्री० औषधिविशेष।

टीड़ी० ना० स्त्री० टिड्डी।

टीप० ना० स्त्री० ऋणपत्र, तमस्सुक, तान को खेंचना, स्वर उड़ाना, दबाहट।

टीपटाप० ना० स्त्री० बनावट, सजावट।

टीपना० स० क्रि० दाबना, टटोलना, निचोड़ना, बिन्दी लगाना, लिखना।

टीला० ना० पु० ढाल, पहाड़ी।

टीस० ना० स्त्री० पीड़ा, टपक, धड़क।

टीसना० अ० क्रि० टीसमारना, धमकना, धड़कना।

टुक० गु० थोड़ा, अल्प, ज़रा।

टुकड़ा० ना० पु० एक खण्ड, चिट।

टुकसा० गु० थोड़ासा।

टुंगा० ना० पु० छोटी पूंछ।

टुच्चा०, टुचा० } ना० पु० लुच्चा, गुण्डा, लपका, तुच्छ।

टुंजा० ना० पु० नन्हा।

टुण्टुक० ना० पु० स्योनावृक्ष।

टुणटुनाना० अ० क्रि० गुनगुनाना, धीरज से अलापना, धीरे धीरे बजाना।

टुण्ड० ना० पु० हाथकटा, डालीकटा वृक्ष।

टुण्डा० गु० हाथ कटा, लूला, अपांग।

टुण्डियाचढ़ाना० स० क्रि० हाथ पीछे बांधना।

टुण्डो० ना० स्त्री० नाभि, गु० जिस स्त्रीका हाथ कटा वा टूटाहो।

टुलकना०, टुहुकना० } अ० क्रि० रोकना, कूकना।

टूं० ना० पु० वायु सड़नेका शब्द अर्थात् पादने का शब्द।

टूंगना० स० क्रि० चींचियाना, चिचोरना, खुटकना।

टूंड़ी० ना० स्त्री० नाभि, टूंठ।

टूक०, टूका० } ना० पु० टुकड़ा, ढोलक का एक शब्द।

टूट० ना० स्त्री० खण्डन, फूटना, टोटा, लिखनेमें जो भूलके ऊपर लिखादिया, त्रुटि।

टूटना० अ० क्रि० हुमकना, दौड़ना, चढ़ाई कराना, फूटना, फटना, क्षतहहोना, गढ़का छूटना, पक्षीका ऊपरसे नीचे उतरना।

टूटा० गु० फूटा टुकड़े भया, ना० पु० टोटा, न्यूनता।

टूम० ना० स्त्री० थोड़ी बात, भूषणविशेष, छतरी।

टूमटाम० ना० पु० कुछ थोड़ी बात।

टूसा० ना० पु० आककाफल, मदारकाफल।

टूसी० ना० स्त्री० कोपल, कली।

टेंगरा० ना० पु०, टेंगरी० स्त्री० } मछलीविशेष।

टेंट० ना० पु० करील वा कपास का पका फल, फुट्टी।

टेंटर० ना० पु० फलविशेष, आंखका दीदा बढ़ा हुआ अर्थात् आंखका निकाम होजाना।

टेंटा० ना० पु०, टेंटी० स्त्री० } करीलका बड़ा पकाफल, व्यर्थभाषण, कटिरोग विशेष, कटि, बैलका कांधा।

टेंटुआ० ना० पु० नरी, सांसी, नरेटी गलेकी पोंगली, हड्डी।

टेंटें० ना० पु० चेंचें, किलकिलाहट।

टेई० ना० स्त्री० आड़, थूनी, क्रि० पैनी करी।

टेक० ना० स्त्री० थूनी, अड़, टेकनी, प्रतिज्ञा।

टेकन० ना० स्त्री० आड़, थांभ।

टेकना० स० क्रि० आड़ना, थांभना, सहारा लगाना।

टेकनी० ना० स्त्री० टेकन, थूनी।

टेकर०, टेकरा० } ना० पु० टीला, ऊंचा।

टेढ़० ना० स्त्री० वक्रता, कज।

टेढ़ा० गु० वक्र जो सूधा नहीं है।

टेढ़ाई० ना० स्त्री० वक्रता, बांकपन, कज।

टेढ़ी० ना० स्त्री० गर्व, अहंकार, हठ, बांकी।

टेनी० ना० स्त्री० छोटाडण्डा जो अहीर रखतेहैं।

टेम० ना० स्त्री० दीपक की जलन वा लय वा जोति।

टेर० ना० स्त्री० स्वर, लय, पुकार।

टेरना० अ० क्रि० पुकारना, ललकारना, अलापना।

टेलना० स० क्रि० पेलना, घुसेड़ना।

टेव० ना० स्त्री० चाल, चाट, स्वभाव।

टेवकिया० ना० स्त्री० छोटी टेवकी।

टेवकी० ना० स्त्री० थूनी, खम्भा थाम्भल।

टेवना० स० क्रि० धाढ़देना, बाढ़रखना वा रखाना।

टेवा० ना० पु० जन्मपत्री का देखना वा निकालना, चाट।
टेहरा० ना० पु० छोटागांव, पुरवा।
टेहला० ना० पु० विवाहकी रीति।
टोआई० ना० स्त्री० छुआई।
टोटा० ना० पु० पटाका, मुर्रा, पोड़, बारूत की पुड़िया, बांसका पोढ़।
टोटी० ना० स्त्री० पर्नाला, मोरी।
टोक० } ना० स्त्री० अटकाव, रुकाव,
टोकटाक० } छेड़छाड़।
टोकना० स० क्रि० पूछना, रोकना, डाहलगाना, बुरीदृष्टि से देखना।
टोकरा० ना० पु० झौरा, डलिया, झौआ।
टोकरी० ना० स्त्री० झौरी, डलिया।
टोकाटोकी० ना० स्त्री० रुकाव, पूछपाछ, छेड़छाड़।
टटका० ना० पु० मोहनी, लटका, वशीकरण।
टोटरु० ना० पु० घू घू विशेष।
टोटा० ना० पु० घटी, हानि, न्यूनता।
टोड़ी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
टोना० ना० पु० जादू, वशीकरण, स० क्रि० टटोलना।
टोनहा० ना० पु० नटवा, ओझा, बन्हा, जादूगर।
टोनहाई० }
टोनही० } ना० स्त्री० नटिनी, जादूगरनी।
टोनहैया० }
टोप० } ना० पु० कानतक शिरढकने का वस्त्र
टोपा० } विशेष।
टोपी० ना० स्त्री० शिरढकने का वस्त्र विशेष, कुलाह।
टोरा० ना० पु० भीतिमें पानी के बचावके लिये आड़लगाकर छाना अर्थात् छज्जा निकालने की वस्तु, टोड़ा।
टोल० ना० स्त्री० सभा, संगति।
टोला० ना० पु० खंड, बस्ती का मुहल्ला।
टोली० ना० स्त्री० टोल, समूह।
टोहना० स० क्रि० ढूंढना, टटोलना।
टोना० ना० पु० टोनहा।

## [ठ]

ठई० अ० क्रि० ठहराई मुकर्ररकी।
ठकठक० ना० पु० बहुत परिश्रम का कार्य्य, गूढ़ता, शब्द विशेष।
ठकठकाना० स० क्रि० ठोंकना, खटखटाना।
ठकठकिया० ना० पु० बखेड़िया, झगड़ालू।
ठकठेला० ना० पु० धकापकी, झगड़ा, बखेड़ा।
ठकठौआ० ना० स्त्री० पनसोई।
ठकुरसोहाती० गु० मुखदेखी बातकहना, श्रोता के मन भावित वार्त्ता करना।
ठकुराई० ना० स्त्री० ईश्वरता, प्रधानता, राज्य।
ठकुरायन्० ना० स्त्री० ठाकुरकी स्त्री, रानी।
ठग० ना० पु० गठिकटा, चोर, प्रतारक, धोखा देनेहारा।
ठगई० ना० स्त्री० प्रतारण, चोरी, ठगाई।
ठगना० स० क्रि० छलना, चोराना, धोखादेना।
ठगनी० ना० स्त्री० ठगकी स्त्री, चोट्टी।
ठगाई० ना० स्त्री० प्रतारण, चोरी, छल।
ठगाना० स० क्रि० छलाना, चोरीकरवाना।
ठगिन्० ना० स्त्री० ठगिनी।
ठगिया० ना० पु० ठग, प्रतारक, चोर, छली।
ठगौरी० ना० स्त्री० ठगई।
ठचरा० ना० पु० बखेड़ा झगड़ा।
ठठ० ना० पु० भीड़, मंडली।
ठठक० ना० स्त्री० रुकाव, अटकाव, डर डिगाव।
ठठकना० अ० क्रि० रुकना, अटकना, आश्चर्य में हो जाना, डिगना।
ठठना० स० क्रि० बनाना, सजना, दुरुस्तकरना, अ० क्रि० पिटना, मारे जाना।
ठट्टा० ना० पु० आड़, घेरा।
ठठरी० ना० स्त्री० ठाट, रथी, दुर्बल शरीर।

**ठठाना०** स० क्रि० पीटना, मारना, कूटना, दुःख में अपना शिर पीटना, सजाना।

**ठठेरा०** ना० पु० कशेरा, जातिविशेष।

**ठठेरिन०** } **ठठेरी०** } ना० स्त्री० ठठेरेकी स्त्री।

**ठठोर०** } **ठठोल०** } गु० हसोड़, ठट्ठाबाज़।

**ठठोली०** ना० स्त्री० परिहास, हांसी।

**ठट्ठ०** ना० पु० ठठ।

**ठट्ठा०** ना० पु० परिहास, खिल्ली।

**ठड्डा०** ना० पु० गुड्डीके बीचका काष्ठ, मुड्ढा।

**ठण्ढ०** ना० स्त्री० शीत, जाड़ा, हिम।

**ठण्ढक०** ना० स्त्री० शीतलता, सरदी।

**ठण्ढा०** गु० शीतल, सर्द।

**ठण्ढाई०** ना० स्त्री० शीतलता, ठण्ढी औषधि, जुड़ाई, बनाई हुई भंग।

**ठण्ढी०** ना० स्त्री० शीतल।

**ठण्ढा०** गु० जाड़ा।

**ठनकना०** अ० क्रि० टीसना, टपकना, झनकना।

**ठनठनाना०** अ० क्रि० झनझनाना, झनकना।

**ठनाक०** ना० पु० झनक, झनकार।

**ठप्ना०** अ० क्रि० ठहरना, जचना।

**ठपना०** अ० क्रि० छपना, छपजाना, भरजाना।

**ठप्पा०** ना० पु० छापनेका यंत्र, सांचा, सिक्का, ठस्सा।

**ठमकना०** अ० क्रि० मकड़ाकर चलना।

**ठरन०** ना० स्त्री० बहुत जाड़ा, बड़ीसर्दी।

**ठरिया०** ना० पु० माटीका हुक्का विशेष।

**ठर्ना०** ना० पु० मादक वस्तु विशेष, अ० क्रि० ठठुरजाना।

**ठवन०** ना० स्त्री० चाल, उठनेकीरीति।

**ठसक०** ना० स्त्री० महत्त्व, पति, देखाव, सजाव।

**ठसकना०** अ० क्रि० ठुसकना, स० क्रि० पटकना।

**ठसका०** ना० पु० पटकी, अहंकार।

**ठसनी०** ना० स्त्री० ठांसनेकी वस्तु।

**ठसाठस०** गु० कचाकच, मचामच, गचागच।

**ठस्सा०** ना० पु० अहंकार, सांचा, ढांचा।

**ठहरठहर०** गु० कलहना।

**ठहरना०** अ० क्रि० रुकना, रहना, ठीकहोना, निपटना।

**ठहराव०** ना० पु० रुकाव, निपटाव।

**ठहराना०** स० क्रि० रखना, रोकना, निपटाना।

**ठहाका०** ना० पु० धमाका, भदाका, भड़ाका।

**ठां०** } **ठांव०** } ना० पु० स्थान, जगह।

**ठांसना०** स० क्रि० ठूंसना घुसेड़ना।

**ठाई०** ना० स्त्री० ठांव, ठौर।

**ठाउ०** ना० पु० ठांव, ठौर।

**ठाकुर०** ना० पु० ईश्वर, देवता, शालग्राम, मूर्तिदेश, पति, राजा, नाई।

**ठाकुरद्वारा०** ना० पु० देवालय, धौहरा।

**ठाठ०** } **ठाट०** } ना० पु० ठठरी, सैंताव, चुकौता, भड़क, भीड़भाड़, समूह, रचना।

**ठाढ़ा०** गु० खड़ा, सीधा जो बेड़ानहीं।

**ठाढ़०** गु० ऊंचा, औघट, खड़ा।

**ठाढ़ा०** } **ठाढ़ी०** } गु० खड़ा, खड़ी।

**ठानना०** स० क्रि० मनलगाना, ठहराना, निश्चय करना।

**ठाला०** गु० खाली, कार्य्य रहित समय।

**ठाहर०** ना० पु० ठिकाना, जगह।

**ठिकरा०** ना० पु० फूटे बर्त्तनका टुकड़ा, ठीकरा।

**ठिकाना०** ना० पु० स्थान, वास, छोर, सिवाना।

**ठिकानी०** गु० ठिकाने वाला, ठिहारा।

**ठिंगना** गु० नाटा, छोटा बासन, बेंठा।

**ठिठक०** ना० स्त्री० आश्चर्य में होना, भयवश होना।

**ठिठकना०** अ० क्रि० भयवश होकर या आश्चर्यित होकर खड़ा होना।

ठिठरना० अ० क्रि० जमना, ठंढ होना, अकड़जाना।

ठिठरा० गु० अकड़ा, शून्य, जड़ाया हुआ।

ठिठराहट०
ठिठुर० } ना० स्त्री० ठण्ढक, अकड़ाहट।

ठिठुरना० अ० क्रि० ठिठरना।

ठिठुरा० गु० ठिठरा।

ठिलिया० ना० स्त्री० घड़ा, गगरी।

ठीक० गु० शुद्ध, पूरा, योग्य, सत्य, उचित अदाता, लीचड़, ना० पु० जोड़।

ठीकठाक० गु० शुद्ध, योग्य, दुरुस्त।

ठीकमठाक० अव्य० शुद्धतासे।

ठीकरा० ना० पु० ठिकरा।

ठीकरी० ना० स्त्री० छोट ठिकरा, गिटकी, योनि में स्थान विशेष।

ठीका० ना० पु० भाड़ा, चुकौता, इजारह।

ठुकराना० स० क्रि० ठोकर मारना।

ठुड्डी० ना० स्त्री० ठोढ़ी, जोन्हरी वा मखाना जो भूननेसे खिला नहीं अर्थात् लावा नहीं भया।

ठुनुक० ना० स्त्री० सिसक।

ठुनुकना० अ० क्रि० सिसकना।

ठुमक० ना० स्त्री० सुन्दरचालसे चलन, मटक।

ठुमकना० अ० क्रि० सुडौल से चलना, अकड़ से चलना।

ठुमका० गु० छोटा, नाटा, बांठा।

ठुमकी० गु० आलसी, ठिंगनी, ना० स्त्री० पतंग को उड़ा के हिलाना।

ठुसकना० अ० क्रि० हवा छोड़ना, पादना, धीमे धीमे रोना।

ठुसकी० ना० स्त्री० शब्द रहित वायु को छोड़ना।

ठुसाना० स० क्रि० ठसाना, ठांसना।

ठूंठ० ना० पु० पत्ररहित तोड़ीहुई डाली वा डाल पात रहित वृक्ष, टुण्ड।

ठूंठा०
ठूंठिया० } गु० टुण्डा वृक्ष जिसकी डालियां काटी गई, सूखा वृक्ष।

ठूंठी० ना० स्त्री० खूंटी, अनाजकी।

ठेघुना० ना० पु० ठेवना।

ठेंगा० ना० पु० लाठी, अंगुष्ठ, लिंग।

ठेंगाबाजना० स० क्रि० बिगाड़ना।

ठेंठ० गु० निपट, चोखा, केवल, निरा।

ठेंठी० ना० स्त्री० कान का मैल, डट्ठा, धोती।

ठेक० ना० स्त्री० टेकनी, आड़, बड़ाबोरा जो अन्न से भरा है।

ठेका० ना० पु० ठट्ठा, ठीका, इजारह।

ठेकी० ना० स्त्री० शिरसे बोझ उतारके सुस्तानेका स्थान, जहां अन्न वा लकड़ी का गंज है।

ठेई० ना० स्त्री० ठट्ठा।

ठेलना० स० क्रि० ढकेलना, रेलना, झोंकना, हटाना।

ठेला० ना० पु० धक्का।

ठेलाठेली० ना० स्त्री० धक्का धक्की।

ठेवना० ना० पु० घुटना, जानु।

ठेस० ना० स्त्री० ठोकर, चपेट, झोंक।

ठेसना० स० क्रि० छेदना, ठोकरलगाना, ठांसना।

ठेसरा० ना० पु० नाकचढ़ी।

ठोंकना० स० क्रि० मारना, गाड़ना, अंगुली से बजाना।

ठोंग० ना० स्त्री० चोंचवा अंगुली से मारना।

ठोंगना०
ठोंगाना० } स० क्रि० चोंचियाना, चिन्होरना।

ठोंक० ना० स्त्री० चोंच, ठोर।

ठोक० ना० स्त्री० मार कूट, ठोकने का शब्द।

ठोकर० ना० स्त्री० ठेस, ठेसलगने की वस्तु, पांवकी हूल।

ठोढ़ी० ना० स्त्री० ठुड्डी।

ठोल० ना० स्त्री० चोंच।

ठोला० ना० पु० शुकादिके निमित्तपात्र जिस में दानापानी रखते हैं अंगुलियों की गांठ।

**ठोस०** गु० ठांठा, जो खोखला नहीं है।
**ठोसना०** स० क्रि० ठांसना।
**ठोसाई०** ना० स्त्री० ठांठाई, दृढ़ता।
**ठौर०** ना० स्त्री० स्थान, जगह।

[ ड ]

**डकराना०** अ० क्रि० कूकमारके रोना।
**डकार०** ना० स्त्री० उद्गार, आरोग्य।
**डकारना०** अ० क्रि० ढिकारना, हुंकारना और पचाजाना।
**डकैत०** ना० पु० डाकू, चोर, बटमार।
**डकैती०** ना० स्त्री० चोरी, बटमारी, डाका।
**डकौत०** } ना० पु० वर्णसंकरकीजाति विशेष
**डकौतिया०** } जिसका बाप ब्राह्मण और महतारी ग्वालिनि थी।
**डग०** ना० पु० चलावा, फाल, पद, डेग।
**डगडगाना०** अ० क्रि० हिलना, चमचमाहट से चलना।
**डगना०** अ० क्रि० हिलना, डिगना।
**डगमग०** गु० चंचल, चलायमान।
**डगमगाना०** अ० क्रि० खड़खड़ाना, हिलना।
**डगर०** ना० स्त्री० मार्ग, सड़क, पैंड़ा।
**डगरना०** अ० क्रि० हिलना, फिरना।
**डगरा०** ना० पु० बांसका बनायाहुआ पात्र विशेष।
**डग्गा०** ना० पु० दुर्बल घोड़ा विशेष।
**डङ्क०** ना० पु० चमक, बिच्छू आदि का विषयुक्त कांटा।
**डङ्का०** ना० पु० टका, धौंसा, नक्कारह।
**डङ्किनी०** ना० स्त्री० डाकिनी।
**डङ्कियाना०** स० क्रि० डंकमारना, चमकना।
**डङ्कीला०** गु० जिस जंतु के डंक हो।
**डटना०** अ० क्रि० अड़ना, भिड़ना, तकना, बनना।
**डटैया०** ना० पु० डटनेवाला।
**डढ़ना०** अ० क्रि० जलजाना, भुनजाना।
**डढ़मुण्डा०** गु० दाढ़ी रहित।
**डढ़ियल०** गु० दाढ़ीवाला।

**डढुआ०** }
**डढ़ोई** } गु० जलाहुआ, जलगया।
**डण्ड०** ना० पु० बाहु, भुजा, व्यायाम करना, साधन विशेष, दंड।
**डण्डवत०** ना० स्त्री० दण्डवत, प्रणाम विशेष, पायंलागी।
**डण्डा०** ना० पु० सोंटा, सीढ़ीका पाया, दंडा।
**डण्डिया०** ना० पु० स्त्रियों के पहिरनेका वस्त्र विशेष और बाज़ारका कर उगाहनेहारा।
**डण्डी०** ना० स्त्री० बैंठी, बेंट, तराजू के पलड़ों में लगाने का काष्ठ, संन्यासी, हरसिंघाड़ आदिकी नली, डण्ठी।
**डंडीर०** ना० स्त्री० धारी, लकीर, लीख।
**डपटना०** अ० क्रि० पुकारना, डाटना, सरपट दौड़ना।
**डफ०** ना० पु० बाजा विशेष।
**डफारना०** अ० क्रि० कूकमारना, बिलखना।
**डफाली०** ना० पु० डफ बजानेहारा।
**डब०** ना० पु० बल, पराक्रम, जेब, चमड़ा जिससे कुप्पा बनाते हैं।
**डबका०** ना० पु० टटका, कूपकाजल, गु० मोटा।
**डबडबाना०** अ० क्रि० भरना, जैसे आंख आंसू से भरआती है।
**डबरा०** ना० पु० सीलीभूमि, लिवार, छपरी।
**डबरिया०** गु० खब्बा, बांयाहाथा, बामहत्था।
**डबोना०** स० क्रि० डुबाना।
**डब्बा०** ना० पु० बड़ी डिबिया।
**डब्बू०** ना० पु० लोहेका कच्छी।
**डमरुआ०** ना० पु० घुटना की गांठि।
**डमरु०** ना० पु० बाजा विशेष।
**डमरुमध्य०** ना० पु० डमरू का मध्यभाग, खाकनाय जो अपने से दो बड़े स्थल के भागों को मिलावे।
**डर०** ना० पु० भय, भीत, शंका।
**डरना०** }
**डरपना०** } अ० क्रि० भयखाना।

डरपोक॰ गु॰ डरनेवाला, भयवान्।
डरवैया॰ गु॰ भयवान्, हेठा, डरपोक।
डराऊ॰ गु॰ भयंकर।
डराक॰ गु॰ भयवान्।
डराना॰ } स॰ क्रि॰ भय देना, भय खि-
डरावना॰ } लाना।
डरी॰ ना॰ स्त्री॰ मांसकी बोटी, छोटाटुकड़ा, ढेला।
डरीला॰ गु॰ मांस बोटियों वाला।
डरौना॰ गु॰ डराऊ।
डलवा॰ ना॰ पु॰ टोकरा।
डलवाना॰ स॰ क्रि॰ झोंकवाना, गिरवाना, घुसड़ाना।
डला॰ ना॰ पु॰ बड़ा टुकड़ा वा ढेला टोकरा।
डलिया॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी टोकरी।
डली॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा टुकड़ा वा ढेला, सुपारी।
डस॰ ना॰ स्त्री॰ तराजू की रस्सी, दशा।
डसना॰ स॰ क्रि॰ काटना, चमकना, डंकियाना।
डसौना॰ ना॰ पु॰ विछौना।
डहक॰ ना॰ पु॰ गुफा, खोह, चोरगड़हा, लालच, बिगाड़, डौंक।
डहकना॰ अ॰ क्रि॰ डौंकना, लालच करना, बिगड़ना।
डहकाना॰ स॰ क्रि॰ निराशकरना, ललचाना, बिगाड़ना।
डहडहा॰ गु॰ प्रफुल्लित, खिलाहुआ, चैतन्य।
डहडहाना॰ अ॰ क्रि॰ खिलना, फूलना।
डांक॰ ना॰ पु॰ जगजगा, बिच्छू आदिकाडंक।
डांग॰ ना॰ स्त्री॰ लाठी, पहाड़ की चोटी।
डांगर॰ गु॰ दुर्बल, ना॰ पु॰ दुर्बलपशु, मूली का फूलाहुआ पत्ता।
डांटना॰ स॰ क्रि॰ ताड़न करना, घुड़कना।
डांठल॰ ना॰ पु॰ } डण्डी,
डांठी॰ ना॰ स्त्री॰ } बोंट।

डांड॰ ना॰ पु॰ बदला, दंड, ताड़ना, नावखेवने का अस्त्र, चापू रांढ़, डण्डीर।
डांड़ना॰ स॰ क्रि॰ बदलालेना, दण्ड लेना।
डांड़ा॰ ना॰ पु॰ मेंड़, सिवाना, धूरा।
डांड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ खेवनेहारा, खेवैया।
डांमाडोल॰ ना॰ पु॰ इधर से उधर रवड़ना।
डांवरू॰ ना॰ पु॰ शेरका बच्चा।
डांस॰ ना॰ पु॰ डंक, मच्छड़।
डाक॰ ना॰ स्त्री॰ टप्पा, अन्तररहितगमन, डाकिनी का पति, डाका, डाक।
डाकना॰ स॰ क्रि॰ वमनकरना, उछालकरना।
डाका॰ ना॰ पु॰ चोरोंका धावा।
डाकिन्॰ } ना॰ स्त्री॰ डायन्, चुड़ैल, यो-
डाकिनी॰ } गिनी भेद।
डाकिया॰ ना॰ पु॰ डाकू, डाक लेजानेवाला।
डाकी॰ गु॰ खाऊ, पेटू।
डाकू॰ ना॰ पु॰ डकैत, चोर, बटमार।
डाट॰ ना॰ स्त्री॰ घुड़क, धमक, ददढी।
डाटना॰ स॰ क्रि॰ डांटना, क्रोधसे देखना।
डाढ़॰ ना॰ स्त्री॰ पिछले दांत।
डाढ़ी॰ ना॰ स्त्री॰ ठुड्डी परके बाल।
डाब॰ ना॰ पु॰ परतला, कच्चा नारियल, तृण विशेष।
डाबर॰ ना॰ पु॰ हाथ धोने का पात्र, गोल तालाब, झाबर।
डाभ॰ ना॰ पु॰ कुशा, डाब, दर्भ।
डाभर॰ ना॰ पु॰ धूना, राल।
डायन्॰ ना॰ स्त्री॰ डाकिनी।
डार॰ ना॰ स्त्री॰ डाली, डाल।
डारना॰ स॰ क्रि॰ डालना।
डारिम॰ ना॰ पु॰ दाड़िम, अनारफल।
डाल॰ ना॰ स्त्री॰ डाली, शाखा, टहनी।
डालना॰ स॰ क्रि॰ फेंकना, घुसेड़ना, झोंकना।
डाला॰ ना॰ पु॰ डोला, बड़ीडाली।
डाली॰ ना॰ स्त्री॰ टहनी, शाखा फलादिका भेद, पुष्पादि रखने के लिये बांस का पात्र।

**डासन०** ना० पु० बिछौना।
**डासना०** स० क्रि० बिछाना।
**डाह०** ना० पु० द्रोह, द्वेष, पेटमें आगिपड़ना।
**डाहना०** अ० क्रि० वैरीहोना, द्वेषीबनना।
**डाही०** ना० स्त्री० द्रोही, द्वेषी, कलेजेपर आगि जलना, मंदाग्नि।
**डिगना०** अ० क्रि० हिलना, लहकना, हटना, टलना, चलायमान होना।
**डिराना०** स० क्रि० हिलाना, चलाना।
**डिरना०** स० क्रि० देखना, टुकीलगाना।
**डिठियारा०** गु० देखनेवाला, द्रष्टा।
**डिएडर०** ना० पु० समुद्रफेन।
**डिण्डुभ०** ना० पु० सांप।
**डिण्डिम०** ना० स्त्री० डमरू।
**डिबिया०** ना० स्त्री० ढकने समेत काठकागोल पात्र विशेष।
**डिब्बा०** ना० पु० बड़ीडिबिया।
**डिब्बी०** ना० स्त्री० डिबिया।
**डिम्भ०** ना० पु० दम्भ, पाखण्ड, अहंकार।
**डिम्भी०** गु० पाखण्डी, दम्भी।
**डींग०** ना० पु० बड़ाई, अपनी बड़ाई।
**डींगमारना०** अ० क्रि० निज बड़ाई करना।
**डीठ०** / **डीठि०** } ना० स्त्री० दृष्टि, नज़र।
**डील०** ना० पु० तनु, कद।
**डीला०** ना० पु० ढेला, मिट्टी का टुकड़ा।
**डीह०** ना० पु० खेड़ा, उजाड़ गांव।
**डीहा०** ना० पु० टीला।
**डुक०** ना० पु० मुक्का, घूसा।
**डुकरवा०** ना० पु० बुढ़वा, बुड्ढा।
**डुकरिया०** ना० स्त्री० बुढ़िया।
**डुगडुगाना०** अ० क्रि० डंका बजाना, तिग-तिमाना।
**डुबकी०** ना० स्त्री० बुड़की, गोता।
**डुबाना०** स० क्रि० बोरना, डुबोना।
**डुबाव०** ना० पु० जलस्थान जो बूड़ने के योग्यहै।
**डुबोना०** स० क्रि० बोरना, डुबाना।
**डुरियाना०** स० क्रि० फिराना, रस्सी में बांध के ले चलना।
**डुलना०** अ० क्रि० हिलना, चलना।
**डुलाना०** स० क्रि० हिलाना, चलाना।
**डूंगर०** ना० पु० पहाड़, वृक्षादि, व्रजविलासे यथा, क्षणही में सब खोदि बहावे, डूंगर को घरनाम मिटावे।
**डूब०** ना० पु० डुबकी।
**डूबना०** अ० क्रि० डुबकी मारना, बूड़ना, उछ-ड़ना, चिन्ता में होना।
**डूबा०** गु० बूड़ाभया।
**डेग०** ना० पु० डग, फलास।
**डेढ़०** गु० एक और आधा १$\frac{1}{2}$।
**डेढ़गति०** ना० स्त्री० नाच विशेष।
**डेरा०** ना० पु० देरा, घर, तम्बू, गु० भेंगा।
**डेल०** / **डेला०** } ना० पु० ढेला।
**डेवढ़ा०** गु० एक और आधा, डेढ़गुणा।
**डेवढ़ाना०** स० क्रि० डेवढ़ा करना वा लेना।
**डेवढ़ी०** ना० स्त्री० देहली।
**डेहुड़०** ना० स्त्री० बन्दूकों की बाढ़ि दगना।
**डेहुड़ी०** ना० स्त्री० डेवढ़ी।
**डैन०** ना० पु० पंख, पक्ष।
**डैना०** ना० पु० डाल।
**डोई०** ना० स्त्री० काठ की कर्छी।
**डोंगा०** ना० पु० / **डोंगी०** ना० स्त्री० } छोटी एक काठ की नाव।
**डोड़ी०** ना० स्त्री० ढिंढोरा।
**डोरा०** ना० पु० दो मुख का सांप।
**डोकर०** / **डोकरा०** } गु० बुड्ढा, बूढ़ा।
**डोकरी०** ना० स्त्री० बुड्ढी।
**डोब०** ना० पु० डूब।
**डोबा०** ना० पु० ताल, पोखरा, मूर्च्छा।

डोम० } नाः पु० जाति विशेष।
डोमड़ा० }
डोमिनी० ना० स्त्री० डोम की स्त्री।
डोर० ना० स्त्री० रस्सी।
डोरा० ना० पु० सींवने का सूत, रस्सा, धागा, धार, लगाव।
डोरिया० ना०पु० सूती, मालदई, कपड़ा विशेष।
डोरी० ना० स्त्री० रस्सी।
डोल० ना० पु० पानी भरने के लिये लोहे वा चमड़े का पात्र विशेष, जन्माष्टमी में कृष्ण जन्मके लिये मण्डप विशेष।
डोलची० ना० स्त्री० छोटा डोल।
डोलना० अ० क्रि० हिलना, टलना, फिरना, झूलना।
डोला० ना० पु० पालकी विशेष।
डोली० ना० स्त्री० पालकी विशेष, जो स्त्रियों के लिये है।
डौंजा० ना० पु० गर्गज, मचान।
डौंड़ी० ना० स्त्री० डोंड़ी, मनादी।
डौढ़ी० ना० स्त्री० डेवढ़ी ड्योढ़ी, गु० ड्योढ़ा।
डौल० ना० पु० प्रकार, ढब, ब्योंत, स्वरूप, आकार।
ड्योढ़ा० गु० डेवढ़ा।
ड्योढ़ी० ना० स्त्री० डेवढ़ी, गु० डेढ़गुणा।

[ढ]

ढक० ना० पु० तौल विशेष।
ढकना० स० क्रि० ढपना, छुपना, ना० पु० ढापने की वस्तु विशेष।
ढकनी० ना० स्त्री० चपनी।
ढकार० ना० स्त्री० ढकार, डकार।
ढकेल० ना० पु० रेल धक्का।
ढकेलना० स० क्रि० ठेलना, रेलना, झोंकना।
ढकेलू० ना० पु० ढकेलने हारा।
ढक्का० ना० पु० बाजा विशेष।
ढंग० ना० पु० चाल, लक्षण, निशान।
ढट्टा० ना० पु० टेपी।
ढड़कौवा० ना० पु० जंगलीकौआ, ढाढ़।
ढड़वा० ना० पु० पक्षी विशेष।
ढण्ढोरना० स० क्रि० ढूंढ़ना।
ढण्ढोरा० ना० पु० राजा की ओरसे कोई आज्ञा सुनाने को बाजा बजाके कहना।
ढण्ढोरिया० ना० पु० ढंढोरा बजानेहारा।
ढनमनना० अ० क्रि० गिर पड़ना।
ढनमनी० गु० स्त्री० गिरपड़ी हुई।
ढपढपाना० स० क्रि० ढोलको पीटना।
ढपना० अ० क्रि० छिपना।
ढब० ना० पु० डौल, रूप, चाल, रीति, बनावट हथौटी।
ढबरा० गु० गँदला, मैला।
ढबीला० गु० सजीला, सुडौल।
ढबुआ० ना० पु० पैसा।
ढमलाना० अ० क्रि० डगराना।
ढलकना० अ० क्रि० डगरना, फिरना, बहना।
ढमका० गु० चोंधना, झका, छलका।
ढलकाना० स० क्रि० औंधाना, बहाना।
ढलना० अ० क्रि० गिरना, पिछलना, बीटना, छलकना, डगरना, झुकना, भरजाना।
ढलमलाना० अ० क्रि० डगमगाना।
ढलाना० स० क्रि० सांचे में ढालना, बहाना।
ढलैत० ना० पु० ढाल तलवार बांधनेहारा।
ढवाना० स० क्रि० गिरवाना, उजड़वाना।
ढहना० } अ० क्रि० गिरपड़ना, उजड़ना।
ढहपड़ना० }
ढाई० गु० अढ़ाई २½।
ढांकना० स० क्रि० ढांपना, छुपाना।
ढांग० ना० स्त्री० कन्दला, शिखर।
ढांचा० ना० पु० ठाठ, घर, सांचा, खाट का घेरा।
ढांपना० स० क्रि० ढांकना, छुपाना।
ढांसना० स० क्रि० दोषदेना।
ढांसा० ना० पु० छिम, दोष।

ढाक० ना० पु० पलाशकावृक्ष, युद्दरत, हुवाव, सांप का विष उतारने में एक प्रकारका बाजा।
ढाका० ना० पु० बंगालेकानगर विशेष।
ढाटा० ना० पु० डाढ़ीबन्धन, ढट्ठा।
ढाटी० ना० स्त्री० कसन यन्त्रणा, फांदा जो घोड़ेके मुखपर बांधते हैं।
ढाढ़स० ना० स्त्री० धीरज, सदमापन, दिलासा, शान्ति, भरोसा।
ढाढ़िन० ना० स्त्री० ढाढ़ी की स्त्री।
ढाढ़ी० ना० पु० जाति विशेष जो बजाते और गाते हैं।
ढाना० स० क्रि० गिराना, उजाड़ना।
ढाबर० गु० मैला, गंदला।
ढाबा० ना० पु० जाल, ओरी, ओलती।
ढार० ना० स्त्री० भांति, कानका गहना विशेष।
ढारना० स० क्रि० ढालना।
ढारी० गु० भरीहुई।
ढारू० गु० ढलू।
ढाल० ना० पु० उतारू ना० स्त्री० फरी।
ढालना० स० क्रि० सांचेमें उतारना, औंधाना, बिगाड़ना।
ढालवा० गु० उतारू, जो सांचे में उतारागया।
ढालू० गु० उतारू, बेंड़ा बिगाड़ू, सांचे का उतारना।
ढाहना० स० क्रि० गिराना, उजाड़ना।
ढाहा० ना० पु० नदीका कराड़।
ढिग० ना० स्त्री० पास, समीप।
ढिठाई० ना० स्त्री० चंचलता, गुस्ताखी।
ढिढ़िम० ना० पु० टटीहरी, पक्षी।
ढिबका० ना० पु० उभार, घुमड़ा।
ढिमढिमी० ना० स्त्री० खंजरी विशेष।
ढिल्लड़० } गु० आलसी, सुस्त।
ढिल्लर० }
ढीठ० } गु० चंचल, निडर, बेअदब, धौताल
ढीठा० } मगरा।
ढिठौरे० गु० धौतालों वा चंचलतासे।
ढील० ना० स्त्री० आसक्त, विलम्ब, देर, छूट।
ढीलाई० ना० स्त्री० शिथिलता, आलस्य।
ढीहा० ना० पु० टीला।
ढुकना० अ० क्रि० झुकना, शिरझुकाना।
ढुकी० ना० स्त्री० ताक।
ढरना० अ० क्रि० फिरना, लुढ़कना।
ढुलना० अ० क्रि० ढुलना, ढरना, मरना।
ढुलाई० ना० स्त्री० उठवाने का पैसा वा काम।
ढुलवाना० } स० क्रि० उठवाना, छलकाना।
ढुलाना० }
ढूआ० ना० पु० तूदा, मेंड़, मिट्टी का पिण्ड।
ढूंढ़ढांढ़० ना० पु० खोज, झाड़ी झूड़ी।
ढूंढ़न० ना० पु० खोज।
ढूंढ़ना० स० क्रि० खोजना, तलाश करना।
ढुंढार० ना० पु० देशविशेष।
ढूंढ़िया० ना० पु० जैनलोगों में भिखारी, गु० ढूंढनेवाला, ढूंढ़ाव।
ढूक० ना० स्त्री० ढुकी, ताक, पैढ़।
ढूकना० अ० क्रि० बन्दकरना, सूंघना, छपिके पास आना, पैठना।
ढूसर० ना० पु० जातिविशेष।
ढेकली० ना० स्त्री० कूपसे जल निकालने का यन्त्र।
ढेंका ना० पु० } कूटने का यन्त्र।
ढेंकी० ना० स्त्री० }
ढेंढ़स० ना० पु० तरकारी विशेष।
ढेंढ़ी० ना० स्त्री० पोस्ताकाफूल।
ढेंढ़ा० ना० पु० गर्भ, गर्भता, बड़ापेट, दोनोंपैरों का बीच, गदरा।
ढेंक० ना० पु० पक्षी विशेष।
ढकुली० ना० स्त्री० रहटी, चरखी।
ढेढ़० ना० पु० चमारकीजाति विशेष, कौआ।
ढेढ़ी० ना० स्त्री० कानकागहना विशेष।
ढेर० ना० पु० राश, टाल, बहुतात।
ढेरा० ना० पु० भेंगा, जिससे पानी ऐंठते हैं।
ढेरी० ना० स्त्री० छोटाढेर।

ढेला॰ ना॰ पु॰ माटीका ढोंदा।
ढेलाचौथ॰ ना॰ स्त्री॰ भादों की चौथ।
ढैया॰ ना॰ स्त्री॰ अढ़ैया।
ढैयाटेकर॰ गु॰ जो उजड़गया।
ढोवा॰ ना॰ पु॰ पर्व वा त्योहारमें फल वा फूल जो छोटे लोग लातेहैं।
ढोक॰ ना॰ स्त्री॰ दण्डवत्, पियास।
ढोकना॰ स॰ क्रि॰ पीना, घूंटना।
ढोका॰ ना॰ पु॰ पत्थर आदि का टुकड़ा, ढेर।
ढोटा॰ ना॰ पु॰ लड़का।
ढोना॰ स॰ क्रि॰ लेजाना, उठाना।
ढोर॰ ना॰ पु॰ गायगोरू।
ढोरा॰ ना॰ पु॰ ताजिया जो मुसल्मानबनाते हैं।
ढोरी॰ ना॰ स्त्री॰ ढौरी चौंप।
ढोल॰ ना॰ पु॰ बाजा विशेष।
ढोलक॰ ना॰ पु॰ छोटा ढोल।
ढोलकिया॰ ना॰ पु॰ ढोलबजानेहारा।
ढोलकी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटाढोल।
ढोलन॰ ना॰ पु॰ प्यारा, रसिया।
ढोलना॰ ना॰ पु॰ ढोलके समानयन्त्र विशेष।
ढोला॰ ना॰ पु॰ छोकरा, राग विशेष।
ढोलिया॰ } ना॰ पु॰ ढोल बजाने हारा।
ढोलैत॰ }
ढोली॰ ना॰ स्त्री॰ दोसौ पानका परिमाण।
ढौंचा॰ गु॰ साढ़ेचार ४½।
ढौरी॰ ना॰ स्त्री॰ डोरी, दुहक, चौंप।

[त]

तंई॰ अव्य॰ तलक, लग, ना॰ स्त्री॰ दृष्टि, ताक।
तऊ॰ अव्य॰ तौभी, तथापि, तदपि।
तक॰ अव्य॰ तलक, लग, ना॰ स्त्री॰ दृष्टि, ताक, तराजू, तखड़ी।
तकतक॰ ना॰ पु॰ पशु आदि चलाने का शब्द।
तकना॰ स॰ क्रि॰ ताक लगाना, अ॰ क्रि॰ दृष्टि देना।
तकला॰ ना॰ पु॰ तकुआ।
तकली॰ ना॰ स्त्री॰ अटेन, परेता।
तकवाहा॰ ना॰ पु॰ रक्षक, चौकीदार, पहरू।
तकाना॰ स॰ क्रि॰ टुकी लगाना, लखाना।
तकिया॰ ना॰ स्त्री॰ सिरहने की वस्तु विशेष।
तकुआ॰ ना॰ पु॰ सूत कातने के लिये लोहे की शलाका जो चरखे में लगती है।
तक्र॰ ना॰ पु॰ मट्ठा, छाछ।
तखड़ी॰ } ना॰ स्त्री॰ तुला, तराजू।
रखरी॰ }
तखान॰ ना॰ स्त्री॰ बढ़ई।
तगण॰ ना॰ पु॰ जिसके अन्तका अक्षर लघुहोता है, गण विशेष।
तगना॰ स॰ क्रि॰ तागा डालना।
तगाई॰ ना॰ स्त्री॰ सिलाई, सिलाईका पैसा।
तगाना॰ स॰ क्रि॰ तागा डलाना, सिलाना।
तग्गा॰ ना॰ पु॰ सीने के लिये बनाया हुआ सूत।
तगड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ करधनी।
तंगा॰ ना॰ पु॰ दो पैसा।
तचना॰ अ॰ क्रि॰ गर्म होना।
तचाना॰ स॰ क्रि॰ गर्म करना वा कराना।
तच्छरीर॰ ना॰ पु॰ उसका शरीर।
तज॰ ना॰ पु॰ औषधि, वृक्ष विशेष।
तजन॰ ना॰ स्त्री॰ छोड़न, त्यागन।
तजना॰ स॰ क्रि॰ त्यागना, छोड़ना।
तजिय॰ अव्य॰ छोड़िय।
तज्जन॰ ना॰ पु॰ उसका मनुष्य।
तट॰ ना॰ पु॰ तीर, पास, किनारा।
तटस्थ॰ गु॰ तीरवासी।
तटिनी॰ ना॰ स्त्री॰ नदी।
तट्टीका॰ ना॰ पु॰ उसका टीका।
तड़॰ ना॰ पु॰ पक्ष।
तड़क॰ ना॰ स्त्री॰ तर्क, टेढ़ई, आड़।
तड़कना॰ अ॰ क्रि॰ फटना, फूटना।
तड़का॰ ना॰ पु॰ प्रातःकाल, भोर।

**तड़के०** अव्य० सबेरे।

**तड़तड़ाना०** अ० क्रि० रिसाना, झिरझिराना, फटने का शब्द।

**तड़प०** ना० स्त्री० चटक, झपट, उचक, उतावली।

**तड़पना०** अ० क्रि० तलफना, धड़कना, कुदकना, फटफटाना, हाथ पांव पटकना।

**तड़पाना०** स० क्रि० तलफाना, धड़काना।

**तड़पीला०** गु० फुर्त्तीला, चटपटिया।

**तड़फ०** ना० स्त्री० व्याकुलता, धड़क।

**तड़फड़ाना०** अ० क्रि० धड़कना, घबराना।

**तड़फड़ाहट०** ना० स्त्री० व्याकुलता, घबराहट।

**तड़फना०** अ० क्रि० व्याकुल होना, फटफटाना।

**तड़फाना०** स० क्रि० तड़पाना।

**तड़ा०** ना० पु० टापू, द्वीप।

**तड़ाक०** गु० भड़कीला, चमकीला।

**तड़ाका०** ना० पु० मारने का शब्द, चटाका।

**तड़ाग०** ना० पु० तालाब, पोखरा।

**तड़ांड़ा०** ना० पु० जलकी धारा, तेरड़ा।

**तड़ाया०** ना० पु० चटक, भड़क।

**तड़ावा०** ना० पु० हूहा, बनाव।

**तड़ित्०** ना० स्त्री० बिजली।

**तड़ित्वान्०** ना० पु० मेघ।

**तण्डुल०** ना० पु० तन्दुल, चावल।

**तत्०** अव्य० वह, सो, तौन, समूह ना० पु० ईश्वर।

**तताना०** स० क्रि० गर्म करना।

**ततड़ा०** ना० पु० पानी गर्म करने का पात्र विशेष।

**तत्कन्द०** ना० पु० अदरक, बराहीकन्द।

**तत्काल०** अव्य० उसीसमय।

**तत्तत्कार्य्य०** ना० पु० उसी उसी काम में।

**तत्ता०** गु० गर्म, ज्वलित, क्रोधी।

**तत्पर०** गु० आसक्त, चतुर, निपुण, सचेत।

**तत्फल०** ना० पु० पीलु वृक्ष, गजपीपरि, जामुन वृक्ष, उसकाफल।

**तत्त्व०** ना० पु० सार, प्रकृति, यथार्थ, मूल, सत भाव, जो किसी से बना न हो।

**तत्त्ववल्का०** ना० स्त्री० मुरहरी।

**तत्त्वज्ञ०** गु० मनुष्यादि जो बोलसके, बातकरे, तत्त्व वस्तु जाननेहारा, यथा ब्रह्मवेत्ता।

**तत्त्वज्ञान०** ना० पु० ब्रह्मज्ञान, अध्यात्मज्ञान।

**तत्क्षण०** अव्य० उसीसमय, तुरन्त, उसीक्षण।

**तत्र०** अव्य० तहां।

**तथा०** अव्य० तिसी प्रकार, तैसा, वैसाही।

**तथाच०** अव्य० जैसे, चुनांचिः।

**तथापि०** अव्य० तौभी।

**तद्०** अव्य० तब, तिससमय।

**तदनन्तर०** अव्य० तिसके पीछे।

**तदनु०** अव्य० तेहि अनुसार, तिसपीछे।

**तदा०** अव्य० तब, तहां।

**तदपि०** अव्य० तौभी।

**तद्गत०** गु० उस में गयाहुआ।

**तद्गति०** ना० स्त्री० उसकीदशा, उसकीमाया।

**तद्गुणविशिष्ट०** गु० वहगुण जिसमें है।

**तद्धवि०** ना० पु० उसके यज्ञका द्रव्य।

**तद्भय०** ना० पु० उसके डर।

**तद्भावबोधक०** गु० उसभावका बोधक।

**तद्धी०** अव्य० तिसी समय, तभी।

**तन०** ना० पु० शरीर, देह, पुत्र, और विस्तार।

**तनक०** गु० थोड़ा, अल्प।

**तनय०** ना० पु० पुत्र, लड़का, सुत।

**तनया०** ना० स्त्री० पुत्री, कन्या, सुता।

**तनापा०** ना० पु० जवानी, तरुणाई।

**तनी०** ना० स्त्री० अँगरखे का बन्धन, तनया।

**तनु०** ना० पु० शरीर, देह।

**तनुक०** गु० थोड़ा, अल्प।

**तनुजा०** ना० स्त्री० तनया, पुत्री।

**तनुत्राण०** ना० पु० बख़्तर, कवच।

**तनूदरी०** ना० स्त्री० स्त्री, नारी, अबला।

**तनूरुह०** ना० पु० शरीर के बाल।
**तनोति०** अ० क्रि० विस्तारकर।
**तन्त०** ना० पु० तार, सुख,सिद्धि,तुरन्त, सन्तान, औषधि, तदबीर।
**तन्तनाना०** अ० क्रि० पिनपिनाना, मन्नाना।
**तन्तनाहट०** ना० स्त्री० मन्नाहट, जलन से जो पीड़ा।
**तन्तु०** ना० पु० सूत्र, तार।
**तन्तुना०** ना० पु० ततुना, तार।
**तन्त्र०** ना० पु० तोटका, लटका, शास्त्रोक्त मन्त्र शिवकृत ग्रन्थ विशेष, वीणा।
**तन्त्री०** गु० तन्त्रका करनेवाला, गानेवाला।
**तन्त्रीनाद०** ना० पु० वीणाका शब्द।
**तन्द्रा०** ना० स्त्री० थकाई, श्रम, मूर्च्छा।
**तन्द्री०** ना० स्त्री० भौंह, भृकुटी।
**तन्दुल०** ना० पु० चावल।
**तन्ना०** अ० क्रि० खिचना, फैलना।
**तन्नाना०** अ० क्रि० पिनपिनाना,क्रोधितहोना।
**तन्नेत्र०** ना० पु० उसकी आंखि।
**तन्मय०** गु० उसमें भराहुआ।
**तन्मात्र०** अव्य० केवल, वह।
**तप०** ना० स्त्री० ताप, उष्ण, ना० पु० तपस्या, माघका महीना।
**तपत०** ना० स्त्री० उष्ण, गु० गर्म, तत्ता।
**तपन०** ना० पु० उष्ण, ज्वलन, सूर्य्य, और भिलावांवृक्ष।
**तपना०** अ० क्रि० ऐश्वर्य्यवान् होना, उष्णहोना, अतितेजयुतहोना।
**तपनीय०** ना० पु० सूर्य्य।
**तपलोक०** ना० पु० स्वर्गविशेष, लोक विशेष।
**तपसी०** ना० पु० तपस्वी।
**तपस्य०** ना० पु० फागुनमास, यथा मधुस्तथा माधव संज्ञकं च शुक्रः शुचिश्चाथनभो नभस्यौ, तथेषु ऊर्जश्च सहस्सहस्यौ तपस्तपस्याविति तेक्रमेण १।
**तपस्या०** ना० स्त्री० तप, योग, ईश्वर भजन।
**तपस्विनी०** ना० स्त्री० तपस्या करनेहारी स्त्री।
**तपस्वी०** ना० पु० तपस्या करने हारा योगी।
**तपा०** ना० पु० अचक, योगी, जोगी।
**तपाना०** स० क्रि० गर्म करना तताना, अरपना।
**तपास०** ना० स्त्री० किरण, धूप, परिश्रम दौड़ धूप।
**तपिच्छ०** ना० पु० तापिच्छ, तमाल वृक्ष।
**तपी०** ना० पु० तपा, मुनि।
**तपेश्वर०** } **तपेश्वरी०** } **तपोधन०** } ना० पु० तपी, मुनि।
**तपोधना०** ना० स्त्री० मुण्डी, और तपोधन की स्त्री, तपेश्वरिन स्त्री।
**तपोमय०** गु० तपस्यायुक्त।
**तप्त०** गु० तत्ता, गरम, तपत।
**तप्तांग०** ना० पु० ज्वर विशेष, देहगरम।
**तब०** अव्य० तिससमय।
**तबी०** } **तभी०** } अव्य० तिसीसमय।
**तम०** } **तमः०** } ना० पु० अन्धकारका गुण, अंधेरा तमोगुण, राहुग्रह, क्रोध, अज्ञान, अंति, पदांत में बहुतातका बोधक।
**तमक०** ना० स्त्री० गर्व, घमण्ड, मुखका लाल होना, झुन्नाहट, टर्र।
**तमकना०** स० क्रि० मुखलाल होना, दहकना, दगदगाना, निष्कारणक्रोध।
**तमका०** ना० पु० धूपकीमार, बहुतगर्मी।
**तमचुर०** ना० पु० कुक्कुट, मुरगा।
**तमतमाना०** अ० क्रि० मुख में लाली होना, दगदगाना।
**तमस०** ना० पु० तम, मनु विशेष।
**तमस्विनी०** ना० स्त्री० राति, रैन।
**तमारि०** ना० पु० सूर्य्य।
**तमाल०** ना० पु० वृक्ष विशेष, तिलक जो चन्दन से बनाते हैं।

**तमालपत्र०** ना० पु० तमाकू।
**तमिस्र०** ना० पु० तम, अन्धकार।
**तमी०** ना० स्त्री० रात, निशा।
**तमीचर०** ना० पु० निशाचर चोर, उल्लू, चमगीदड़।
**तमोगुण०** ना० पु० मनोवृत्ति विशेष वा दोष जिससे काम क्रोधादि उपजते हैं।
**तमोल०** ना० पु० ताम्बूल, पान।
**तमोलिन्०** ना० स्त्री० तमोली की स्त्री।
**तमोली०** ना० पु० जाति विशेष जो पान बेचते हैं।
**तम्बू०** ना० पु० रावटी, पाल, कपड़े का कोठा।
**तम्बूल०** ना० पु० ताम्बूल।
**तम्बेरम०** ना० पु० स्तम्बेरम, हाथी।
**तर०** अव्य० तल, पदान्त में अधिकता का चिह्न, बहुतात का सूचक।
**तरई०** ना० स्त्री० तारा, नक्षत्र।
**तरकारी०** ना० स्त्री० भाजी।
**तरंग०** ना० पु० लहर, उमंग, ललक।
**तरंगिनि०** } **तरंगिनी०** } ना० स्त्री० नदी।
**तरंगी०** ना० पु० बहुरंगी, लहरी।
**तरण०** ना० पु० व्यतिक्रम, पारहोना, उद्धार होना।
**तरणि०** ना० पु० सूरज, नाव।
**तरणी०** ना० स्त्री० नाव, तरनी।
**तरन०** ना० पु० तरण।
**तरफना०** अ० क्रि० तड़फड़ाना।
**तरबूज़०** ना० पु० हिन्दवाना, फल विशेष।
**तरल०** गु० चंचल, तीक्ष्ण ओछा, ना० पु० धतूरा वृक्ष।
**तरलता०** ना० स्त्री० चंचलता, तेजी।
**तरला०** ना० पु० बांस विशेष, गु० जो सबसे नीचला वा दूसरे से नीचला।
**तरलाई०** ना० स्त्री० तरलता।
**तरव०** ना० पु० वृक्ष।
**तरवर०** ना० पु० बड़ा वृक्ष।
**तरस०** ना० पु० शीघ्र, जल्दी, लालच, दया, कृपा, कल्क।
**तरसना०** अ० क्रि० जी लगाकर रहना, ललचाना, दयालुहोना, पसीजना।
**तराई०** ना० स्त्री० दलदल, चराओ, नीचान।
**तरान्०** ना० पु० उगाही, प्राप्त।
**तराना०** स० क्रि० पारकराना, पैराना, बचाना।
**तरि०** } **तरी०** } ना० स्त्री० नाव, नौका।
**तरीन०** ना० स्त्री० तरीका बहुवचन, नावें।
**तरु०** ना० पु० वृक्ष।
**तरुण०** गु० युवा, जवान।
**तरुणता०** } **तरुणाई०** } ना० स्त्री० यौवन, किशोर, जवानी।
**तरुणी०** ना० स्त्री० युवती, जवान स्त्री।
**तरेड़ा०** ना० पु० टोंटीसे पानी का गिरना।
**तरैया०** ना० पु० तारागण, तारा, कविवाक्ये यथा ( दोहा० यथा तरैया प्रात के सब नृपभये उदास, लखिदिनमणि कर राम छवि सकुचाने चहुआस )।
**तरोस०** ना० पु० किनारा, बिहारीलाल सप्तशतिकायां ( श्यामसुरतिकरि राधिका तकति तरणिजातीर, अंसुनकरत तरोसको खिनक खरोंहोनीर )।
**तरौना०** ना० पु० कर्ण भूषण विशेष, बिहारीलाल सप्तशतिकायां ( लसत श्वेत सारी ढप्यो तरल तरौनाकान, परयो मनौ सुरसरि सलिल रविप्रति बिम्ब विहान )।
**तर्क०** ना० स्त्री० बुद्धिसे विवेचना, अनुमानोक्ति, न्यायशास्त्र, दलील।
**तर्कण०** ना० पु० कूदन, नई बात बनाना, शंका करना।
**तर्कित०** गु० शंकित, लंघित, तर्क कियागया।
**तर्की०** ना० स्त्री० तरपतिया, ताड़पत्र रचित कानका भूषण विशेष।

तर्कुल० ना० पु० ताड़का फल।
तर्खा० गु० धारा जो बहुत शीघ्र बहती है।
तर्जन० ना० पु० कोप।
तर्जना० अ० क्रि० कोपकरना, कूदना।
तर्जनी० ना० स्त्री० अंगुष्ठके पासकी अंगुली।
तर्तराना० गु० जो बहुत चिकना गोलाई से जो टपकता है, अ० क्रि० सन्नाटा भरना, गलफटाकी करना।
तर्तराहट० ना० स्त्री० सन्नाटा, गीदड़भबकी, गलफटाकी।
तर्पण० ना० पु० पित्रादिके निमित्त जलदानदेना, मंगल, हुलास।
तर्राना० अ० क्रि० बड़बड़ाना, खुनसाना, कुड़कुड़ाना।
तर्रारा० ना० पु० शीघ्रता।
तर्वरिया० ना० पु० खड्ग, तलवार बांधनेहारा।
तर्स० ना० स्त्री० दया, कृपा, रहम्।
तर्सौं० अव्य० परसों के आगेका दिन।
तल० ना० पु० अधोभाग, पाताल, विशेष, दृष्टि।
तलक० अव्य० तक, लग।
तलछट० ना० स्त्री० निचोड़, मैल, खूद।
तलतलाना० स० क्रि० हिलाना।
तलना० स० क्रि० घी वा तेलमें भूनना।
तलपट० गु० मलेमेट, चौपाट।
तलफना० अ० क्रि० तरफना।
तलमलाना० अ० क्रि० ललचाना।
तलवरिया० ना० पु० तर्वरिया।
तलवार० ना० पु० खड्ग, तरवार।
तला० ना० पु० पैंदा, थाह, जूती के नीचे का भाग, पक्ष, देवता।
तलातल० ना० पु० पाताल विशेष।
तली० ना० स्त्री० तला, बुकनी, निस्पर्शी।
तलुआ० } ना० पु० पांवके नीचे का भाग।
तलूआ० }
तले० अव्य० नीचे।

तलया० ना० स्त्री० छोटातालाब।
तल्प० ना० स्त्री० शय्या, सेज, बिस्तर।
तल्लीला० ना० स्त्री० उसकी लीला।
तवर्ग० ना० पु० तकारादि पांच अक्षर।
तवल्कार० ना० पु० त्कार तेरालिखाहुआ।
तष्टना० स० क्रि० भागदेना, बांटना।
तष्टित० गु० भाजित, बांटागया।
तसला० ना० पु० खानापकानेकापात्र विशेष।
तस्कर० ना० पु० चोर।
तस्करता० ना० स्त्री० }
तस्करत्व० ना० पु० } चोरी।
तस्करी० ना० स्त्री० }
तस्मिन्० सर्व्व० तौनमें, उसमें।
तस्य० सर्व्व० उसका।
तस्सू० ना० पु० माप विशेष, फ़ारसी शब्द है।
तहां० अव्य० तिसस्थान, उस जगह।
तहियां० गु० पहिले।
तहीं० अव्य० तिसी वा उस स्थान।
तक्षक० ना० पु० मुख्यसांप।
तज्ञ० गु० ज्ञाता, ज्ञानी, स्वरूप साजा।
ता० सर्व्व० उसको।
ताइत० ना० पु० यन्त्र, गण्डा।
ताई० ना० स्त्री० चाची।
ताऊ० ना० पु० बड़ा चचा।
तांगा० ना० पु० गाड़ी विशेष जो सजी नहीं है।
तांत० ना० स्त्री० चमड़े की रस्सी।
तांतबांधना० स० क्रि० बक्का को चुपाना।
तांता० ना० पु० पांति, पंक्ति, तार।
तांती० ना० पु० धुनिया, बिहना, पटकार।
तांबड़ा० ना० पु० तांबेका वर्ण, माणिक्य के समान झूठापत्थर।
तांबा० ना० पु० धातु विशेष।
ताक० ना० पु० दृष्टि, दुक्की।
ताकना० स० क्रि० देखना, झांकना, घूरना।
ताकवाक० ना० स्त्री० ठीक समय, दृष्टिरखना।

**ताग॰** ना॰ पु॰ सूत, धागा।
**तागना॰** स॰ क्रि॰ सींवना, सूत डालना।
**तागा॰** ना॰ पु॰ सूत, धागा।
**ताजक॰** ना॰ पु॰ ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष।
**ताजन॰** ना॰ पु॰ कोड़ा।
**ताटंक॰** ना॰ पु॰ कर्णभूषण विशेष।
**ताड़॰** ना॰ पु॰ वृक्ष विशेष, ना॰ स्त्री॰ पहिचान।
**ताड़क॰** ना॰ पु॰ ताटङ्क, ताड़ने हारा।
**ताड़न॰** ना॰ पु॰ झिड़की, दंड, डांट।
**ताड़ना॰** स॰ क्रि॰ पहिचानना, बूझना, अटकलना दण्डदेना, मारना।
**ताड़नीय॰** गु॰ ताड़ना करने के योग्य।
**ताड़का॰** ना॰ स्त्री॰ सुबाहुकी माता, राक्षसी।
**ताड़ित॰** गु॰ ताड़न दियागया, मारागया।
**ताड़ी॰** ना॰ स्त्री॰ ताड़कारस।
**ताण्डव॰** ना॰ पु॰ ताण्डव, नृत्य विशेष।
**तात॰** ना॰ पु॰ पिता, गुरु, मित्र, पुत्र, भाई, शत्रु, सेवकादिका बोधक, गु॰ तत्ता, गरम, उष्ण।
**तातनी॰ / तातनो॰** } सर्व्व॰ उसकी, उसका।
**तातें॰ / ताते॰** } सर्व्व॰ तिससे, उससे, तिसकारण।
**तात्कालिक॰** गु॰ उसी समयका।
**तात्पर्य॰** ना॰ पु॰ अभिप्राय, प्रयोजन, मतलब, हासिल।
**तादात्म्य॰** ना॰ स्त्री॰ तत्स्वरूपता।
**तादृश॰** गु॰ वैसाही।
**तान॰** ना॰ स्त्री॰ रागका जो उच्चारण, स्वर।
**तानसेन॰** ना॰ पु॰ रागी विशेष।
**ताना॰** ना॰ पु॰ वस्त्रका लम्बासूत।
**तानी॰** गु॰ रागी, गवैया, ना॰ स्त्री॰ तानी।
**तांत्रिक॰** ना॰ पु॰ सिद्धान्तका जानने हारा। विद्वान्, तन्त्र शास्त्रज्ञ।
**तानना॰** स॰ क्रि॰ कसना, खींचना, फैलाना।

**ताप॰** ना॰ स्त्री॰ उष्णता, तप, ज्वर, मनकादुःख, दण्ड।
**तापती॰** ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष।
**तापना॰** स॰ क्रि॰ आंचलेना, घमाना।
**तापस॰** ना॰ पु॰ तपस्वी, शान्त।
**तापिच्छ॰ / तापिञ्छ॰** } ना॰ पु॰ तेंदुवा वृक्ष, तमाल।
**तापी॰** ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष जो विन्ध्यके दक्षिण ओर है।
**तापीय॰** ना॰ पु॰ सोनामक्खी।
**तापूस॰** ना॰ पु॰ तमालपत्र।
**ताप्य॰** ना॰ पु॰ सोनामक्खी।
**ताफता॰** ना॰ पु॰ रेशमी कपड़ा जिसको धूपछांह कहते हैं।
**तामचीनी॰** ना॰ स्त्री॰ तांबा जिसमें और धातु भी जड़ाहोवे।
**तामड़ा॰** ना॰ पु॰ तांबेके रंगकी मणि।
**तामपुष्प॰** ना॰ पु॰ कुम्भी।
**तामरस॰** ना॰ पु॰ कमल।
**तामल॰** ना॰ पु॰ देशविशेष।
**तामलकी॰** ना॰ स्त्री॰ भूआंरा।
**तामस॰** ना॰ पु॰ तमोगुणका कार्य, काम, क्रोध।
**तामसिक॰ / तामसी॰** } गु॰ तमोगुण युक्त, क्रोधी।
**तामसी॰** ना॰ स्त्री॰ रात, क्रोधी।
**तामह॰** सर्व॰ उसमें।
**तामा॰** ना॰ पु॰ तांबा।
**तामिली॰** ना॰ स्त्री॰ भाषा विशेष।
**तामेश्वर॰** ना॰ पु॰ तांबेकी भंग।
**ताम्बूल॰** ना॰ पु॰ पान।
**ताम्र॰** ना॰ पु॰ तांबा।
**ताम्रचूड़॰** ना॰ पु॰ मुरगा, करौंदा।
**ताम्रवर्ण॰** ना॰ पु॰ हरिन, तांबेकारंग।
**ताम्रवल्ली॰** ना॰ स्त्री॰ मँजीठ।
**ताम्रसार॰** ना॰ पु॰ लालचन्दन।

**ताम्राक्ष॰** ना॰ पु॰ कोयल।

**तार॰** ना॰ पु॰ वानर विशेष, मोतीमाला, निर्मल मोती, उच्चस्वर, ताड़ ।

**तारक॰** ना॰ पु॰ मुक्तिदाता, रांगाधातु, गुरू, उद्धारकरनेहारा, जो पारलगावे, मन्त्र विशेष, दैत्य विशेष ।

**तारकारि॰** ना॰ पु॰ स्वामिकार्तिक।

**तारकी॰** ना॰ स्त्री॰ देवदाली ।

**तारकूट॰** ना॰ पु॰ रूपा, पीतल।

**तारकेश्वर॰** ना॰ पु॰ सदाशिवजी।

**तारण॰** ना॰ पु॰ उद्धार करनेहारा, उद्धार का करना, मुक्तिदाता, तारनेहारा ।

**तारणीय॰** गु॰ तारनेहारा, योग्य, उद्धार करने लायक ।

**तारतम्य॰** ना॰ पु॰ न्यूनाधिक, थोड़ा बहुत ।

**तात्पर्थ॰** ना॰ पु॰ उसका अर्थ, उसकेलिये ।

**तारना॰** स॰ क्रि॰ उतारना, पारकरना, मुक्ति देना ।

**तारा॰** ना॰ पु॰ नक्षत्र, ना॰ स्त्री॰ नेत्रकी पुतली, अंगदकी महतारी ।

**तारागण॰** ना॰ पु॰ नक्षत्रों का समूह।

**तारापथ॰** ना॰ पु॰ आकाश ।

**तारिका॰** ना॰ स्त्री॰ पुतली, नक्षत्र।

**तारिणी॰** ना॰ स्त्री॰ उद्धार करनेहारी ।

**तारुण्य॰** ना॰ स्त्री॰ तरुणता, जवान, युवा।

**तारू॰** ना॰ पु॰ तालु।

**तार्किक॰** ना॰ पु॰ नैयायिकन्यायशास्त्रजाननेहारा।

**तार्क्ष्य॰** ना॰ पु॰ रसौत, गरुड़ पक्षी ( पक्षिताक्ष्यौं गरुत्मन्तौ शकुन्तौभास पक्षिणौ) इत्यमरः।

**ताल॰** ना॰ पु॰ ताड़वृक्ष, तालाब, हरताल, ना॰ स्त्री॰ करताल, रागका परिमाण, मल्लयुद्ध में बाहुपर बाहु पटकना ।

**तालखजूही॰** ना॰ स्त्री॰ दुपहरिया वृक्ष ।

**तालध्वज॰** ना॰ पु॰ श्रीबलरामजी।

**तालपर्णी॰**<br>**तालमूलिका॰** } ना॰ स्त्री॰ मूसली औषधि

**तालवृन्त॰** ना॰ पु॰ ताड़का पंखा ।

**तालव्य॰** ना॰ पु॰ जो अक्षर तालु से उच्चारण कियें जावें यथा त, थ, द, ध, न, ल, श।

**ताला॰** ना॰ पु॰ कुफल, द्वार बन्द करने का यन्त्र ।

**तालांक॰** ना॰ पु॰ श्रीबलदेव जी।

**ताली॰** ना॰ स्त्री॰ कुंजी, चाबी, दोनों हाथों को आपस में मारने से जो शब्द होताहै ।

**तालीस॰** ना॰ पु॰ वृक्ष विशेष।

**तालु॰**<br>**तालू॰** } ना॰ पु॰ मुख में ऊपरका भाग।

**ताव॰** ना॰ पु॰ ताप, क्रोध, बल, चटक, ऐंठ, कागजका तखता, कस।

**तावत्॰** अव्य॰ इत्ता, यहांतक, तबतक।

**तावना॰** स॰ क्रि॰ गरमकरना, कसना, ऐंठना।

**ताश॰**<br>**तास॰** } ना॰ पु॰ गंजीफह, लप्पा, पारसी है।

**तासु॰**<br>**तासुको॰** } सर्व्व॰ उसको उसका।

**ताहि॰** सर्व्व॰ उसको।

**ताहिरी॰** ना॰ स्त्री॰ भोजन विशेष ।

**तिकातिक॰** ना॰ पु॰ गाड़ी आदि के बैल चलाने में यह शब्द बोलाजाता है।

**तिकुरी॰** ना॰ स्त्री॰ तिहाई, तीसरा।

**तिकोनिया॰** गु॰ तीन कोणका पदार्थ।

**तिक्का॰** ना॰ पु॰ मांसका छोटा टुकड़ा।

**तिक्त॰** गु॰ तीता, चरपरा, ना॰ पु॰ चिरायता।

**तिक्तका॰** ना॰ स्त्री॰ चिरपोटा।

**तिक्तचक्रा॰** ना॰ स्त्री॰ कुटकी।

**तिक्ता॰** ना॰ स्त्री॰ कालीमिरच, खीरा।

**तिखरा॰** गु॰ तिबारा, तिहरा ।

**तिखराकरना॰** स॰ क्रि॰ तीनबेर जोतना।

**तिखारना॰** स॰ क्रि॰ ठहराना, सचकरना, यत्नसे पूछना, तीनबेर जोतना ।

**तिगुण॰**<br>**तिगुना॰** } गु॰ जिसका तीनगुण है, तिहरा ना।

तिग्म० ना० पु० पीपरि।

तिजरा० ना० पु०
तिजरी० ना० स्त्री०
तिजारी० ना० स्त्री० } अन्तरिया तीसरेदिन जाड़ा और विषमका आना

तिणुका० ना० पु० घास, घासका टुकड़ा।

तित० अव्य० तिधर, तत्र।

तितना० ना० पु०
तितनी० ना० स्त्री० } गु० प्रमाण वा अवधि वा निश्चय बोधक।

तितरबितर० गु० भिन्न भिन्न, संगफूटजाना।

तितरी० } ना० स्त्री० कीट विशेष जो उ-
तितली० } ड़ता है।

तिथि० ना० स्त्री० चन्द्रकला की क्रियासे उपलक्षितकाल, दिन, तारीख।

तिथिपत्र० ना० पु० पत्रा, जन्त्री।

तिथिक्षय० ना० पु० तिथि का अवम, हानि।

तिदरा० ना० पु०
तिदरी० ना० स्त्री० } तीनद्वार का स्थान।

तिधारा० ना० पु० पौधा विशेष, तीनधारका संगम।

तिनकना० अ० क्रि० धड़कना, फड़फड़ाना, टीसना।

तिनका० ना० पु० डांड़ी वा टहनी वा घास का छोटाटुकड़ा।

तिन्तिणी० ना० स्त्री० अमिली वृक्ष।

तिन्दुक० ना० पु० तेंदुवा, तमालवृक्ष।

तिन्दुला० ना० स्त्री० पीपरि।

तिन्नी० ना० स्त्री० चावल वा उसका पौधा विशेष।

तिबारा० गु० तीनबेर ना० पु० तीन दरका।

तिब्बत० ना० पु० देश विशेष जो हिमालय के उत्तर में है।

तिमि० ना० स्त्री० मछली, अव्य० तैसे, उसी विधि।

तिमिंगिल० ना० पु० मत्स्य, मछली।

तिमिर० ना० पु० अन्धकार, अज्ञान।

तिमिरहर० ना० पु० सूरज।

तिय० } ना० स्त्री० योषिता,
तिया० } स्त्री, नारि।

तिरकोना० गु० तीनकोनवाला पदार्थ।

तिरखूंटी० ना० स्त्री० तीन कोनेका अस्त्र विशेष।

तिरछा० गु० टेढ़ा, आड़ा, हठीला।

तिरछाना० स० क्रि० टेढ़ा करना, अ० क्रि० हठीला होना, हठकरना।

तिरछी० गु० टेढ़ी, बांकी।

तिरातिराना० अ० क्रि० रिसाना, झिरझिराना।

तिरना० अ० क्रि० पैरना, तैरना।

तिरपद० ना० पु०
तिरपदी० ना० स्त्री० } तिपाई, तीनपद

तिरपन० गु० पचास और तीन, ५३।

तिरपौलिया० ना० पु० धनुषाकार के तीन द्वारका स्थान।

तिरफल० ना० पु० त्रिफला, तीन फल का अर्थात् आंवला, हर्र, बहेड़ा।

तिरभंगा० गु० तिरछा खड़ाहोना।

तिरभंगी० ना० स्त्री० छन्द विशेष, ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम।

तिरस्कार० ना० पु० निन्दा, भंजन, अवज्ञा, अपमान।

तिरसठ० गु० साठि और तीन, ६३।

तिरहुत० ना० पु० देश विशेष, नगर विशेष।

तिरोधान० ना० पु० पोशाक, आच्छादन, वस्त्र।

तिरोहित० गु० छिपाहुआ, गुप्त, ना० पु० मिथिला देश।

तिर्मिरी० ना० पु० तेलकी बुंद जो पानीपर बहती है थर थरा।

तिर्मिराना० अ० क्रि० झूलना, लहरना, थरथराना, चमकना यथा तेलकी बुंद पानीपर।

तिर्मिराहट० ना० स्त्री० थरथराहट, फरफराहट।

तिर्मिरी० ना० स्त्री० घुमड़ी।

तिर्यक्पति० } नाः पु० शार्दूल, सिंह।
तिर्य्यग्पति० }

तिल० ना० पु० पौधा विशेष जिसके बीज से तेल निकालते हैं, शरीर में काला चिह्नविशेष, क्षण।

तिलक० ना० पु० ललाट में विहित चन्दनादि का टीका, पीना, खली, अर्थ करना, अर्थ, वृक्ष विशेष गु० शिरोमणि।

तिलकुट० ना० पु० तिल और मिठाईविशेष।

तिलंगा० ना० पु० तैलंगा, सिपाही।

तिलंगी० ना० स्त्री० गुड्डी, पतंग।

तिलचट्टा० ना० पु० कीटविशेष।

तिलचावलो० ना० स्त्री० तिल और चावलों की मिलौनी, काले और सफेद बालों की मिलौनी।

तिलचूरी० ना० स्त्री० मिठाईविशेष।

तिलड़ा० ना० पु० } तीन लड़का, भूषणवि-
तिलड़ी० ना० स्त्री० } शेष।

तिलपर्णी० ना० स्त्री० चन्दन।

तिलपिष्टक० ना० पु० पीना, तिलकी खली।

तिलवर० ना० पु० पक्षीविशेष।

तिलभेद० ना० पु० पोस्त का बिरवा।

तिलहा० गु० तेलिया।

तिलुआ० ना० स्त्री० पिलई।

तिलोत्तमा० ना० स्त्री० मुख्य अप्सरा।

तिष्ठना० अ० क्रि० ठहरना, स्थिरहोना, विराजना।

तिष्ठित० गु० ठहरा हुआ।

तिष्य० ना० स्त्री० आठवां नक्षत्र, पुष्य।

तिसका० सर्व्व० उसका, जिसका।

तिसरायत० ना० पु० मध्यवर्ती गैरियत, दुनागी, अपनायतरहित।

तिसूत० ना० पु० औषधिविशेष।

तिहत्तर० गु० सत्तर और तीन, ७३।

तिहरा० गु० तिगुणा, तिलड़ा।

तिहराना० स० क्रि० तिहरा करना।

तिहरावट० ना० स्त्री० तिगुण करने का काम।

तिहरे० सर्व्व० तिहारे।

तिहाई० ना० स्त्री० तीसरा भाग।

तिहायत० ना० स्त्री० तिसरायत।

तिहारी० ना० स्त्री० }
तिहारे० ना० पु० } सर्व्व० तेरी, तेरे।
तिहारो० ना० पु० }

तिहु० गु० तीनों, तीन।

तिहुपुर० } ना० पु० तीनोंलोक।
तिहुलोक० }

तीखा० गु० तीक्ष्ण, चरपरा।

तीखी० गु० सूक्ष्मस्वर, पैनी।

तीखुर० ना० पु० श्वेत वस्तु, जिसका व्रत के दिन फलाहार करते हैं।

तीछन० गु० तीक्ष्ण, तीव्र, तेज।

तीज० ना० स्त्री० तृतीया।

तीजा० गु० तीसरा, मृतक के तीसरे दिन का काम व तीसरा दिन।

तीजिया० } ना० स्त्री० श्रावण सुदी तीज का
तीजैं० } त्योहार।

तीत० गु० तीता।

तीतर० ना० पु० पक्षीविशेष।

तीतरी० ना० स्त्री० तितरी, पतंगाविशेष।

तीता० गु० कड़ुवा, पड़पड़ा, तीखा।

तीन० गु० त्रि, ३।

तीनतेरह० गु० तित्तर बित्तर।

तीय० ना० स्त्री० अबला, स्त्री।

तीयल० ना० स्त्री० स्त्री के पहिरने के तीनों वस्त्र।

तीर० ना० पु० समुद्र वा नदी का तट, अव्य० ढिग, पास।

तीरथ० ना० पु० पुण्यस्थान, यात्रा।

तीरथराज० ना० पु० प्रयाग।

तीर्थ० ना० पु० तीरथ।

तीली० ना० स्त्री० पिंजड़ा की कामी।

तीव्र० गु० अत्यन्त कड़ुवा, तीता, पैना।

तीसरा० गु० तृतीय।

तीसी० ना० स्त्री० अलसी, जिसका तेल निकालते हैं।

तीक्षण० ना० पु० मरुआ, मिरच, गु० पड़पड़ा, तत्ता, क्रोधी, झांझिया, पैना, तीता।

तुक० ना० स्त्री० पद, सम्बन्ध।

तुकला० ना० पु०
तुकली० ना० स्त्री० } छोटी पतंगविशेष।
तुक्कल० ना० पु०

तुक्का० ना० पु० बाण जिसकी नोक नहीं है, छोटा पर्व्वत।

तुगावंशी०
तुकाक्षीरी० } ना० पु० वंशरोचन।

तुंग० गु० ऊंचा, लम्बा, समूह।

तुंगवृक्ष० ना० पु० नारियल।

तुच्छ० गु० शून्य, कुत्सित, अपमानी।

तुड़ाना० स० क्रि० तोड़ाना।

तुण्ड० ना० पु० चोंच, मुख।

तुतरा० गु० जो तुतलाता हो।

तुतराना० अ० क्रि० अधूरा बोलना जैसे बालक बोलते हैं।

तुतला० गु० तुतरा।

तुतलाना० अ० क्रि० तुतराना।

तुत्थ०
तुत्थिक० } ना० पु० नीलाथोथा।

तुनतुनाना० अ० क्रि० सराटा देना।

तुन० ना० पु० वृक्षविशेष।

तुन्दिल० गु० तोंदेल, बड़ी तोंदका।

तुन्न० ना० पु० तुर, टूटा।

तुपक० ना० पु० बन्दूक।

तुपक्रिया० ना० स्त्री० छोटी बन्दूक।

तुम० सर्व्व० मध्यमपुरुष का सूचक वा वाचक।

तुमतनो० सर्व्व० तुम्हारा।

तुमाई० ना० स्त्री० तुमाने का पैसा।

तुमाना० स० क्रि० धुनवाना।

तुमुल० ना० पु० रौला, हुल्लड़।

तुम्बा० ना० पु० लौका, कद्दू।

तुम्बिका०
तुम्बी० } ना० स्त्री० लौकी, कद्दू, बजाने की तोंबी जो मदारी लोग रखते हैं।

तुरई० ना० स्त्री० तरकारी विशेष।

तुरक० ना० पु० तुरक, देशविशेष।

तुरग०
तुरंग० } ना० पु० घोड़ा।
तुरंगम०

तुरंगाह्वा ना० स्त्री० असगन्ध।

तुरत०
तुरंत० } अव्य० शीघ्र, अभी।

तुरपना० स० क्रि० सींना, टांकना विशेष।

तुरही० ना० स्त्री० बाजा विशेष नरसिंघा।

तुराई० ना० स्त्री० तोशक, रजाई।

तुराना० अ० क्रि० छूटजाना, छुड़ाना, मर्य्यादा से बाहिर चलना, बहिचलना।

तुराषाट्० ना० पु० इन्द्र।

तुरिय० ना० पु० घोड़ा।

तुरी० ना० पु० घोड़ा ना० स्त्री० तुरही।

तुरीय० ना० पु० मुक्तअवस्था, मुक्ति, मोक्षचौथा।

तुरुक०
तुरुष्क० } ना० पु० यवन, देशविशेष।

तुर्त०
तुर्तफुर्त० } अव्य० तुरन्त, शीघ्र।
तुर्ताव०
तुर्तीफुर्ती०

तुल० गु० तुल्य।

तुलना० अ० क्रि० तुलापरचढ़ना, तुल्य होना।

तुलसा०
तुलसी० } ना० स्त्री० छोटा वृक्ष जिसकी पत्ती विष्णु वा शालग्राम को चढ़ाते हैं।

तुलसीदास० ना० पु० प्रसिद्ध भक्त श्रीरामायण भाषा बनाने हारे।

तुला० ना० स्त्री० तराजू, अपनी देह की बराबर दान देना, सातवीं राशिविशेष।

तुलाना० स० क्रि० तौलाना, तुलापर चढ़ाना,

तकुवा ठीक कराना ।

**तुलित०** गु० तुलाहुआ, तुलापरचढ़ाया गया ।

**तुली०** ना० स्त्री० मोटीसींक, चित्र लिखने की कलम ।

**तुल्य०** ना० पु० समान, बराबर, सदृश ।

**तुल्यता०** ना० स्त्री० समानता, बराबरी ।

**तुवर०** ना० पु० तिल ।

**तुवरी०** ना० स्त्री० फटकरी ।

**तुष०** ना० पु० धानादि का छिलका ।

**तुषार०** ना० पु० शीत, पाला, हिम ।

**तुष्ट०** गु० प्रसन्न, तृप्त, सन्तोषी ।

**तुष्टता०** ना० स्त्री० प्रसन्नता, तृप्ति, सन्तोष ।

**तुष्टित०** गु० प्रसन्नित, सन्तोषित ।

**तुसार०** ना० पु० तुषार ।

**तुहिन०** ना० पु० तुसार, तुषार, हिम ।

**तुही०** सर्व्व० तुझको ।

**तू०** सर्व्व० मध्यमपुरुष का एक वचन ।

**तूतांकरना०** स० क्रि० तुकारना ।

**तूकार्ना०** स० क्रि० अबे तबे करना ।

**तूढ्यो०** गु० सन्तोषित ।

**तूण०**
**तूणीर०** } ना० पु० बाण रखने का घर, तरकश ।

**तूतई०** ना० स्त्री० टोंटीदार मिट्टी का बर्तन ।

**तूतिया०** ना० पु० नीलाथोथा ।

**तूबरि०** ना० स्त्री० तुम्बी ।

**तूमना०**
**तूम्ना०** } स० क्रि० रुई को हाथ से बनाना ।

**तूर०** ना० पु० तूर्य, नकारह ।

**तूरक०** ना० पु० जलपिप्पल ।

**तूरना०** स० क्रि० तोड़ना ।

**तूरी०** ना० पु० धतूरा ।

**तूर्ण०** ना० पु० शीघ्र, जल्द ।

**तूर्य०** ना० पु० नकारह, नगाड़ा ।

**तूल०** ना० स्त्री० निर्बीजकपास अर्थात् रुई तुल्य ।

**तूलनीय०** ना० पु० कदम वृक्ष ।

**तूलिनी०** ना० पु० सेमर वृक्ष ।

**तूवर०** ना० पु० राजपूतोंमें जातिविशेष ।

**तृण०** ना० पु० घास ।

**तृणराज०** ना० पु० नारियल, ऊँख, तालवृक्ष ।

**तृणवत्०** गु० घास के समान निकम्मा ।

**तृणावर्त्त०** ना० पु० दैत्यविशेष बौंड़रा, घास का भंवर ।

**तृणोदक०** ना० पु० घास पानी ।

**तृतीय०** गु० तीसरा ।

**तृतीया०** ना० स्त्री० तीज, तीसरीतिथि, तीसरी ।

**तृतीयान्त०** गु० जिस के अन्त में, तृतीया का चिह्न है ।

**तृतीयांश०** ना० पु० तीसरा भाग ।

**तृप्त०** गु० सन्तुष्ट ।

**तृप्ति०** ना० स्त्री० भोजनादि करके सन्तोष ।

**तृवृता०**
**तृवृत्०** } ना० स्त्री० निसोत ।

**तृषा०** ना० स्त्री० प्यास ।

**तृषार्त्त०** गु० पिपासाकरके व्याकुल ।

**तृषावन्त०**
**तृषित०** } गु० पिपासाशक्त, प्यासा ।

**तृष्णा०** ना० स्त्री० प्यास, लालच, अभिलाष ।

**ते०** अव्य० से, सर्व्व, वे, ये ।

**तै०** सर्व्व० तू, अव्य० से ।

**तैंतालीस०** गु० चालिस और तीन, ४३ ।

**तैंतीस०** गु० तीस और तीन, ३३ ।

**तेंदुआ०** ना० पु० चीता विशेष, वृक्षविशेष ।

**तेंदू०** ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष ।

**तेईस०** गु० बीस और तीन, २३ ।

**तेज०** ना० पु० दहक, प्रताप, बल, अग्नि ।

**तेजआति०** ना० पु० सूर्य, भाषा में प्रचलितहै ।

**तेजपात०** ना० पु० तमकी पत्ती ।

**तेजमान्०**
**तेजवन्त०** } गु० प्रतापी, चमकीला, चमत्कारी ।

**तेजबल०** ना० पु० औषधिविशेष ।

**तेजवल्ली०**
**तेजास्वनी०** } ना० स्त्री० तेजबल ।

**तेजस्कर॰** ना॰ पु॰ वीर्य्य बढ़ानेहारा, द्रव्य, पुष्टई।

**तेजस्वी॰** } गु॰ प्रतापी, दीप्तिमान्, तेज वा
**तेजोमय॰** } प्रकाश से युक्त।

**तेता॰** गु॰ तितना।

**तेमन॰** गु॰ ओदा, गीलाई, व्यंजन।

**तेरस॰** ना॰ स्त्री॰ त्रयोदशी।

**तेरह॰** गु॰ दश और तीन, १३।

**तेरुस॰** ना॰ पु॰ तीसरा वर्ष, त्योरुस।

**तेल॰** ना॰ पु॰ चिकना, चिकनाहट, तिलादि का रस।

**तेलिन॰** ना॰ स्त्री॰ तेली की स्त्री।

**तेलिया॰** ना॰ पु॰ तेलकासा रंगविशेष।

**तेली॰** ना॰ पु॰ तैलकार जाति विशेष।

**तेवर॰** ना॰ स्त्री॰ घुमनी, घुमड़ी गु॰ तीलड़ा।

**तेवराना॰** अ॰ क्रि॰ घुमड़ी में होना, गिरपड़ना।

**तेवरी॰** ना॰ स्त्री॰ घुमड़ी, घुमनी दृष्टि।

**तेवहार॰** ना॰ पु॰ पर्व्व, त्योहार।

**तेह॰** ना॰ पु॰ क्रोध, झांझ, बहादुरी, साहस।

**तेहर॰** ना॰ स्त्री॰ स्त्रीके पांवका गहनाविशेष।

**तेहा॰** ना॰ पु॰ तेह।

**तेही॰** अव्य॰ अभी, सर्व्व, उसको।

**तैतिल॰** ना॰ पु॰ करणविशेष।

**तैरना॰** स॰ क्रि॰ पैरनां।

**तैल॰** ना॰ पु॰ तेल।

**तैलकार॰** ना॰ पु॰ तेली।

**तैलंग॰** ना॰ पु॰ कर्णाटक देश वा उसके वासी।

**तैलंगा॰** ना॰ पु॰ तैलंगदेश के लोग, और अंगरेजों के प्यादे।

**तैसा॰** गु॰ तिसके समान, अव्य॰ त्योंकर।

**तो॰** अव्य॰ तब, तदा, निस्संदेह, सर्व्व, तुझ।

**त्यों॰** अव्य॰ योंकर।

**तोंद॰** ना॰ पु॰ बड़ा पेट।

**तोंदी॰** ना॰ स्त्री॰ नाभि।

**तोंदैल॰** } गु॰ जिसका पेट बड़ा है।
**तोंदिला॰** }

**तोंही॰** अव्य॰ तधी, उसीसमय में।

**तोकह॰** सर्व्व॰ तुझको।

**तोड़॰** ना॰ पु॰ फूट, नदी की धारा का बल, दही का पानी।

**तोड़जोड़॰** ना॰ स्त्री॰ बात बनाना।

**तोड़ना॰** स॰ क्रि॰ फोड़ना, रुपया भुनाना, टुकड़ा करना।

**तोड़ल॰** ना॰ पु॰ कंड़ा, खगौरा हाथके।

**तोड़वाना॰** स॰ क्रि॰ फोड़वाना,टुकड़े कराना, रुपया भुनवाना वा भुनाना।

**तोड़ा॰** ना॰ पु॰ चटका, सहस्र रुपयोंकी थैली, रंजक में आगि लगानेकीवस्तु, चरचौ, गलेकी सांकर, धन्नीका टुकड़ा।

**तोड़ाना॰** स॰ क्रि॰ तोड़वाना।

**तोतला॰** गु॰ हकला।

**तोतलाना॰** अ॰ क्रि॰ हकलाना।

**तोता॰** ना॰ पु॰ शुक, सुगा।

**तोपना** स॰ क्रि॰ ढांपना, गाड़ना।

**तोपाना** स॰ क्रि॰ गड़वाना।

**तोबड़ा॰** ना॰ पु॰ थैली जिसमें घोड़ेको दाना दिया जाता है।

**तोमर॰** ना॰ पु॰ बाण, तीर, छन्दविशेष।

**तोय॰** ना॰ पु॰ जल, पानी।

**तोयनिधि॰** ना॰ पु॰ समुद्र, जलधि।

**तोयपिप्पली॰** ना॰ स्त्री॰ जलपीपल।

**तोर॰** ना॰ पु॰ दहलविशेष, सर्व॰ तेरा।

**तोरण॰** ना॰ पु॰ फूलोंकी माला जो आनंद वा त्योहारके दिन बांधते हैं।

**तोरी॰** ना॰ स्त्री॰ ककरीविशेष।

**तोल॰** ना॰ स्त्री॰ तौल।

**तोलक॰** } ना॰ पु॰ बांट जो बारह माशे भर
**तोला॰** } होताहै वा सोलह माशे भर।

**तोष॰** ना॰ पु॰ हर्ष, तृप्ति, धीरज।

**तोषक** गु॰ हर्षदाता, धीरजदाता।

**तोषित०** गु० हर्षित, धीरजवान्।
**तोहि०** सर्व० तुझको।
**तौ०** अव्य० तब, तो।
**तौंसना०** अ० क्रि० धूपके कारण से शिथिल होना।
**तौल०** ना० पु० जोख, परिमाणकी क्रिया।
**तौलना०** स० क्रि० जोखना, परिमाणकरना।
**तौलवाई०** } ना० स्त्री० तौलने का काम वा पैसा।
**तौलाई०** }
**तौलाना०** स० क्रि० जोखवाना।
**तौलिया०** } ना० स्त्री० पात्रविशेष।
**तौली०** }
**तौहीं०** अव्य० अभी।
**तौहू०** अव्य० तथापि।
**त्यक्त०** गु० जिसको त्यागदिया।
**त्याग०** ना० गु० छुड़ाव, वैराग्य।
**त्यागन०** ना० पु० तजन, विराग, छोड़न।
**त्यागना०** स० क्रि० छोंड़ना, तजना।
**त्यागी०** गु० वैरागी, छोड़ेहुये।
**त्याज्य०** गु० जो त्यागने के योग्य है।
**त्यों०** अव्य० तैसे, इस प्रकार, एकही समय में।
**त्योंधा०** गु० चुन्धला।
**त्योनार०** ना० स्त्री० चतुराई, चालाकी।
**त्योनारी०** ना० स्त्री० स्त्री जो अपना काम बड़ी चतुरता से स्वच्छ बनाती है।
**त्योरुस०** ना० पु० दो वर्ष पहिले।
**त्योरी०** ना० स्त्री० मत्थेकी सकोड़, घुमनी।
**त्योरीचढ़ाना०** अ० क्रि० क्रोधित होना।
**त्योहार०** ना० पु० पर्व, पबनी, आनंदकादिन।
**त्रपा०** ना० स्त्री० लाज, हया।
**त्रय०** गु० त्रि, ३।
**त्रयईर्षा०** ना० स्त्री० तीन ईर्षा अर्थात् पुत्र, सम्पत्ति, पत्नी।
**त्रयगंगा०** ना० स्त्री० तीनगंगा अर्थात् मंदाकिनी, भागीरथी, अभ्रवती।
**त्रयताप०** ना० स्त्री० तीनताप अर्थात् दैहिक, दैविक, भौतिक।
**त्रयपावक०** ना० पु० तीन अग्नि अर्थात् आहवनीय, दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य अथवा जठरानल, दावानल, बड़वानल।
**त्रयरेखा०** ना० स्त्री० तीनरेखा अर्थात् त्रिचादि, तीन लकीर।
**त्रयरोग०** ना० पु० तीन रोग अर्थात् वात, पित्त, कफ।
**त्रयीतनु०** ना० पु० सूर्य।
**त्रयोदशी०** ना० स्त्री० तेरस।
**त्र्यम्बक०** ना० पु० श्रीशिवजी।
**त्रसित०** गु० डरता हुआ, भयवान्।
**त्रस्त०** गु० कायर, डरपोक, नामर्द।
**त्राण०** ना० पु० रक्षा, निस्तार, उद्धार।
**त्राणकर्त्ता०** गु० रक्षक।
**त्राणी०** गु० त्राणकर्त्ता, रक्षक।
**त्रात०** गु० बचायागया, रक्षित।
**त्राता०** गु० रक्षक, पालक।
**त्रास०** ना० पु० भय, दुःख।
**त्रासक०** गु० भयदायक, दुःखदाता।
**त्रासा०** } गु० भयवान्, डराहुआ।
**त्रासित०** }
**त्राह०** } अव्य० दया चाहनेका शब्द, पश्चात्ताप का शब्द।
**त्राहि०** }
**त्रि०** गु० तीन, ३ परंतु यह शब्द विशेष के आगे योगहोता है यथा, त्रिभुवन, त्रिपुर।
**त्रिंश०** गु० तीसवां $\frac{1}{30}$।
**त्रिंशति०** गु० तीस, ३०।
**त्रिक०** } ना० पु० गोखुरू।
**त्रिकटु०** }
**त्रिकाल०** ना० पु० तीनकाल अर्थात् भूत, भविष्य, वर्त्तमान अथवा प्रातःकाल, मध्याह्न, संध्या।
**त्रिकुट०** ना० पु० सिंघाड़ा।
**त्रिकुटा०** ना० पु० सोंठ, मिरच, पीपर।
**त्रिकूट०** ना० पु० पर्वतविशेष जिसपर लंकाहै।

त्रिकोण० ना० पु० तीनकोन, तीनकोने वाला सिंघाड़ा।

त्रिगुण० ना० पु० तीनबेर, तीनगुण अर्थात् सात्त्विक, राजस, तामस।

त्रिजग० ना० पु० तीनलोक, तिर्य्यग्।

त्रिजगयोनि० ना० पु० पशु पक्षी आदि।

त्रिज्या० ना० स्त्री० व्यासार्द्ध, आधाविस्तार।

त्रिदन्ता० ना० पु० महामेदा।

त्रिदश० ना० पु० देवता, गु० तेरह, १३।

त्रिदशकश्यपस्त्री० ना० स्त्री० तेरहकश्यपकी स्त्री, अर्थात् दिति, अदिति, कद्रू, विनता, श्रीधामा, भानुयोगेश्वरी, श्रोणतिलका, षण्नेत्रिका, पवनावर्ती, मेधावती, कतकदंश्या, बन्ध्या, कनकमाला १३।

त्रिदोष० ना० पु० तीनदोष अर्थात् कफ, वात और पित्त।

त्रिदशालय० ना० पु० स्वर्ग।

त्रिदिव० ना० पु० स्वर्ग।

त्रिधा० गु० तीनठाम, तीनप्रकार।

त्रिध्वनि० ना० स्त्री० तीनध्वनि अर्थात् मधुर, मंद, गम्भीर।

त्रिनयन०<br>त्रिनेत्र० } ना० पु० श्रीसदाशिव।

त्रिनेत्रा० ना० स्त्री० भवानीविशेष।

त्रिपथगा० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।

त्रिपद० ना० पु०<br>त्रिपदी० ना० स्त्री० } तिपाई।

त्रिपर्णी० ना० स्त्री० शालपर्णी।

त्रिपादिका० ना० स्त्री० हंसपादी।

त्रिपु० ना० पु० सीसा, धातुविशेष।

त्रिपुंखी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।

त्रिपुटा० ना० स्त्री० हंसपादी।

त्रिपुटी० ना० स्त्री० निसोत।

त्रिपुण्ड्र० ना० पु० शाक्तमतका तिलक जो आड़ा होता है, वैष्णवमत का तिलक जो ठाढ़ा होताहै।

त्रिपुर० ना० पु० त्रिलोक, दैत्यविशेष।

त्रिपुरारि० ना० पु० श्रीमहादेव जी।

त्रिपुस० ना० पु० खीरा।

त्रिपौलिया० ना० पु० तीनि द्वारका मार्ग।

त्रिफला० ना० पु० तीनफल अर्थात् आंवला, हड़, बहेड़ा।

त्रिभंगा० गु० तिरछा खड़ाहोना।

त्रिभंगी० ना० पु० छन्दविशेष, श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम।

त्रिभुज० गु० तीन भुजाका, त्रिकोना।

त्रिभुवन० ना० पु० तीन लोक अर्थात् स्वर्ग, मर्त्य, पाताल।

त्रिमुहानी० ना० स्त्री० त्रिवेणी।

त्रिय०<br>त्रिया० } ना० स्त्री० अबला, पत्नी, नारी।

त्रिलोक० ना० पु० त्रिभुवन, और ऊर्द्ध्व मध्य अधः वा उत्तम मध्यम और नीच।

त्रिलोकी० ना० पु० तीनलोकका समुदाय।

त्रिलोह० ना० पु० पीतल।

त्रिशंकु० ना० पु० राजाविशेष।

त्रिशूल० ना० पु० महादेवका अस्त्रविशेष।

त्रिसन्ध्या० ना० स्त्री० तीन सन्ध्या अर्थात् प्रातःकाल, मध्याह्न, सन्ध्या।

त्रिसन्ध्यास्वरूप० ना० पु० रक्त, शुक्ल, श्याम।

त्रिस्रोता०<br>त्रिस्रोता० } ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।

त्रुटि० ना० स्त्री० टूट, न्यूनता।

त्रेता० ना० पु० युगविशेष।

त्रैराशिक० गु० तीन राशिका गणित।

त्रोटक० ना० पु० छन्दविशेष।

त्रोण० ना० पु० तूण, तरकश।

त्वं० सर्व्व० तू।

त्वक्० ना० स्त्री० छाल, स्पर्शेन्द्रिय, खाल।

त्वचा० ना० स्त्री० छिलका, बकला, खाल।

त्वची० ना० पु० बांस, गु० त्वचाधारी।

त्वदंघ्रि० ना० पु० तुम्हारे चरण।

त्वदीय० सर्व० तुम्हारी, रामायणे यथा (त्वदीयभक्तिसंयुतं)।

त्वरा० ना० स्त्री० उतावली।

## [थ]

थई० ना० स्त्री० वस्त्रादिका ढेर।

थंब०
थंबा०
थंभ० } ना० पु० खम्भ, थूनी, स्तम्भ।

थंभना० अ० क्रि० ठहरना, रुकना, संभलना।

थक्क० ना० पु० थक्का।

थकथक० गु० लथपथ।

थकना० अ० क्रि० माँदाहोना, हारना।

थका० गु० माँदा, हारा।

थकाना० स० क्रि० माँदाकरना, हराना।

थकित० गु० थका, जो रुकगया, अचम्भित।

थक्का० ना० पु० चक्कान।

थन० ना० पु० गौ आदि का स्तन।

थनी० ना० स्त्री० घोड़े का दोषविशेष।

थनैला० ना० पु० थनका रोगविशेष।

थनेसरी० ना० पु० कुरुक्षेत्र के ब्राह्मण।

थपक० ना० पु० थाप।

थपड़ा० ना० पु० थप्पड़, चपेटा।

थपड़ी० ना० स्त्री० ताली।

थपना० स० क्रि० स्थापना, बैठाना, अ० क्रि० स्थापित होना, बैठजाना।

थपा० गु० स्थापित, बैठायाहुआ।

थपाना० स० क्रि० स्थापितकराना, बैठाना।

थपेड़ा०
थप्पड़० } ना० पु० चपेटा।

थमना० अ० क्रि० रुकना।

थम्बना०
थंमना० } अ० क्रि० रुकना।

थर० ना० पु० सिंह, और शेरका खोह।

थरथर० गु० कम्पा।

थरथराना० अ०, क्रि० कांपना, कम्पाना।

थरथराहट०
थरथरी० } ना० स्त्री० कपकपी, कम्पाहट।

थरहरना०
थरहराना०
थर्राना० } अ० क्रि० कांपना, कम्पना, हलहलाना।

थल० ना० पु० भूमि, स्थल।

थलकना० अ० क्रि० धड़कना, तलफना।

थलथलकरना०
थलथलाना० } अ० क्रि० हिलना, यथा स्थूल मनुष्य का मांस हिलता है।

थलचर०
थलचारी० } गु० मनुष्यादि।

थलिया० ना० स्त्री० भोजन करने का पीतलादि का पात्र।

थली० ना० स्त्री० घर, पांडुर।

थवई० ना० पु० राज, मीमार, घरकारी।

थहराना० अ० क्रि० कांपना।

थांग० ना० स्त्री० चोरों की मांदि।

थांगी० ना० पु० चोर, धनिक।

थांभ० ना० पु० स्तम्भ।

थांभना० स० क्रि० टेकना, आड़ना, अटकाना, रोकना, सहायता करना।

थांवला० ना० पु० वृक्ष आदि का थाला।

थाकना० अ० क्रि० थकना।

थाका० गु० थका।

थाती०
थाथी० } ना० स्त्री० धरोहर, अमानत, सौंपा।

थान० ना० सारा कपड़ा, अश्वादि के रहने का स्थान, मुद्रा, कक्ष, मकान, ठिकाना।

थाना० ना० पु० रक्षकों का स्थान, बांसों का ढेर।

थानी० ना० पु० स्थान का स्वामी, थांगी।

थाप० ना० स्त्री० धौल, थप्पड़, पशु का पांव, मर्याद, बैठक।

थापना० स० क्रि० थोपना, थोलियाना, ना० पु० व्यवहारविशेष स्थापन करना।

**थापा॰** ना॰ पु॰ पशुके पांवका चिह्न, थपा।
**थापित॰** गु॰ बैठायागया, स्थापित,नियत भया, मुकर्रर हुआ।
**थापी॰** ना॰ स्त्री॰ थापने का शब्द, काठकी वस्तु विशेष जिससे छत पीटते हैं।
**थाम॰** ना॰ पु॰ थम्भ, थूनी।
**थामना॰** स॰ क्रि॰ रोकना, पकड़ना।
**थार॰** } ना॰ पु॰ बड़ी थाली।
**थाल॰** }
**थाला॰** ना॰ पु॰ थांवला, थाल।
**थाली॰** ना॰ स्त्री॰ भोजन करनेका पात्रविशेष।
**थावर॰** ना॰ पु॰ स्थावर, वृक्षादि, अचल।
**थाह॰** ना॰ स्त्री॰ नदी की तली, नदी में वह स्थान जहां पैदल उतर जावें।
**थाहा॰** ना॰ पु॰ नदीका स्थान जो गाहिरा न हो।
**थाही॰** ना॰ स्त्री॰ थाहपना,गु॰ जो गहरी न हो।
**थिति॰** ना॰ स्त्री॰ स्थिति, थिरता, पालन।
**थिर॰** गु॰ स्थिर, अचल, क़ायम।
**थिरकना॰** अ॰ क्रि॰ चमत्कार करके नाचना।
**थिरकाना॰** स॰ क्रि॰ चमत्कार से नचाना।
**थिरकी॰** ना॰ स्त्री॰ चमत्कार, घुमाव।
**थिरता॰** ना॰ स्त्री॰ } स्थिरता, अचलता।
**थिरत्व॰** ना॰ पु॰ }
**थिरा॰** ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती।
**थिराना॰** स॰ क्रि॰ बैठाना, ठहराना, अ॰ क्रि॰ बैठना, ठहरना,पानी की मिट्टी का बैठजाना।
**थीर॰** गु॰ सुस्थित, स्थिर, मन्दा।
**थुकथुकाना॰** अ॰क्रि॰ कुवासनादि घिनकी वस्तु देखकर थूकना वा कुदृष्टि दूर करने के लिये थूकना।
**थुकाना॰** स॰ क्रि॰ थूक फिकवाना और निन्दा कराना।
**थुथकारना॰** स॰ क्रि॰ तुच्छ करके किसूको बाहर करना।
**थुथनी॰** ना॰ स्त्री॰ शूकरादिका मुख।
**थुथाना॰** स॰ क्रि॰ भौंहें टेढ़ी करना।
**थूक॰** ना॰ पु॰ मुखमें का पानी।
**थूकना॰** स॰ क्रि॰ मुखमें से पानी फेकना।
**थूणी॰** ना॰ स्त्री॰ थूनी।
**थूतड़ा॰** ना॰ पु॰ }
**थूथन॰** ना॰ पु॰ } शूकरादि का मुख।
**थूथना॰** ना॰ पु॰ }
**थूथनी॰** ना॰स्त्री॰ }
**थूनी॰** ना॰ स्त्री॰ धरन, टेकन।
**थूहर॰** ना॰ पु॰ वृक्षविशेष।
**थेईथेई॰** ना॰ स्त्री॰ चहलबहल।
**थेगली॰** ना॰ स्त्री॰ कपड़े में जोड़, पैबन्द।
**थेवा॰** ना॰ पु॰ नग।
**थैला॰** ना॰ पु॰ }
**थैलिया॰** ना॰स्त्री॰ } बटुआ, दुलमियान।
**थैली॰** ना॰स्त्री॰ }
**थोक॰** ना॰ पु॰ समूह, ढेर, एकभाग, टोला, महल्ला।
**थोड़॰** ना॰ पु॰ फले केले के गर्भो।
**थोड़ा॰** गु॰ अल्प, कम।
**थोथला॰** गु॰ भोता, मोटा।
**थोथा॰** ना॰ पु॰ औषधिविशेष, फलरहित, गु॰ छूछा, पोपला, बदसूरत, कुभण्डा।
**थोप॰** ना॰ पु॰ पालकी के बांस के अन्त का भूषण, छाप।
**थोपना॰** स॰ क्रि॰ टेकना, छोपना, गांजना, बटोरना।
**थोपियाना॰** अ॰ क्रि॰ बुंदियाना, झिरझिराना।
**थोपी॰** ना॰स्त्री॰ थप्पा।
**थोब॰** } ना॰ स्त्री॰ लड़ी का टेकन।
**थोभ॰** }
**थोहर॰** ना॰ पु॰ थूहर।
**थौना॰** ना॰ पु॰ गौने के पीछे स्त्री की बिदा।

## [द]

**द॰** अव्य॰ यह अक्षर–जिव शब्दके अन्त में

आता है तब उसका अर्थ देनेहारा होजाता है यथा सुखद अर्थात् सुख देनेहारा।

**दई०** ना० पु० दैव, भगवान्, ब्रह्मा, स्त्री, मिठाई विशेष।

**दंश०** ना० पु० वन की मकड़ी, दांत।

**दंशन०** ना० पु० दांतों से काटन।

**दंष्ट्री०** ना० पु० शूकर, सर्प।

**दंस०** ना० पु० कुत्ता, सिंह, डांस।

**दखन०** ना० पु० दक्षिण।

**दगड़०** ना० पु० धक्का, ढक्का, डंका, राह।

**दगड़ा०** ना० पु० पैंड़ा।

**दगड़ाना०** स० क्रि० चलाना, दौड़ाना, डगराना।

**दगदगा०** गु० चमकीला।

**दगदगाना०** अ० क्रि० चमकना, चहकना, तमतमाना।

**दगदगाहट०** ना० स्त्री० चमक।

**दगधना०** स० क्रि० जलाना, छेड़ना, सताना, डांटना, थुथकारना।

**दगला०** ना० पु० रुई भरा अंगरखा।

**दग्ध०** गु० जो जलगया।

**दग्धा०** गु० जला, तिथिविशेष, वारविशेष, मास युक्त तिथि।

**दंगल०** ना० पु० चौकीविशेष, बहुतात।

**दंगा०** ना० पु० बखेड़ा, रौला।

**दंगैत०** गु० रौला वा बखेड़ा करनेहारा।

**दटना०** अ० क्रि० अड़ना, सामना करना।

**दण्ड०** ना० पु० लाठी, शासन, डांट, घड़ी, छड़ीती, जुर्माना।

**दण्डक०** ना० पु० राजाविशेष, गु० दण्डकर्ता।

**दण्डधर०** / **दण्डधारी०** } ना० पु० यमराज, गु० दण्ड बांधनेहारा।

**दण्डमान०** गु० दुःखदाता, दण्डदाता, ना० पु० यमराज।

**दण्डवत्०** ना० स्त्री० दण्ड के समान पड़के प्रणाम करना।

**दण्डादण्डी०** ना० पु० आपस में लाठीसे लड़ना।

**दण्डायमान०** ना० पु० दण्डाकी नाईं खड़ा।

**दण्डित०** गु० दण्ड लियागया, सताया गया, पीड़ित, शिक्षा कियागया।

**दण्डी०** ना० पु० तपेश्वरी, गु० दुःखरूपी, डांडी।

**दण्ड्य०** गु० दण्ड देनेके योग्य।

**दतवन०** / **दतून०** } ना० पु० दन्तधावन, मिसवाक।

**दतूना०** ना० पु० पौधाविशेष।

**दतूली०** ना० स्त्री० छोटे २ दांत।

**दतौन०** ना० पु० दतून।

**दत्त०** गु० जो दियागया।

**दत्तात्रेय०** ना० पु० हरि अवतार, मुनिविशेष।

**ददरीक्षेत्र०** ना० पु० भृगुमुनि का स्थान पटना के पास है।

**ददियाल०** / **ददियाला०** } ना० पु० दादाकाघर, पुरुषे।

**ददोड़ा०** ना० पु० मच्छड़ आदि के काटने की सूजन।

**दद्रु०** ना० पु० दादुरोग।

**दधि०** ना० पु० दही, समुद्र।

**दधिकांदो०** ना० पु० जन्माष्टमी के दूसरे दिन का पर्व्वानन्द।

**दधिमुख०** ना० पु० लड़का बहुत कम उमर बाल्य, वानरविशेष जो रामदल में था।

**दधिरिपु०** ना० पु० अगस्त्यमुनि।

**दधिबल०** ना० पु० सुग्रीव का पुत्रविशेष।

**दधिसुत०** ना० पु० चन्द्रमा आदिक।

**दधीचि०** ना० पु० मुख्यराजा, मुनिविशेष।

**दनुज०** ना० पु० दैत्य, राक्षस।

**दनुजपति०** / **दनुजराज०** / **दनुजाधिप०** } ना० पु० दैत्योंका राजा।

**दनुजारि०** ना० पु० देवता, श्रीनारायण।

**दनुजेश०** / **दनुजेश्वर०** } ना० पु० दैत्यों का राजा।

दन्त० ना० पु० दांत, दशन।

दन्तकाष्ठ० ना० पु० दतून करना, दतून।

दन्तधावनी० ना० पु० धनियां।

दन्तबीज० ना० पु० अनार।

दन्तशठ० ना० पु० माई औषधि, जंभीरी।

दन्तशूल० ना० पु० दांतोंकी पीड़ा।

दन्तिका० ना० स्त्री० बड़ी छतावर।

दन्ती० ना० पु० हाथी।

दन्तीफल० ना० पु० पिस्ता।

दन्तुर०, दन्तैल०, दन्तैल० } गु० जिसके दांत होंठ से न ढकें वा जिस जन्तु आदि के बड़े २ दांतहों हबड़ा, हबिला।

दन्त्य० गु० जिन अक्षरों का उच्चारण दांत से होताहै यथा, त थ द ध न ल स।

दन्दनाना० अ० क्रि० विराजना, निडरबैठना।

दब्बा० ना० पु० इन्द्रिय, लिंग, गु० निडर।

दब्बापेल० गु० व्यभिचारी, अतिनिश्शंक।

दपट० ना० स्त्री० दौड़, झपट, डांट।

दपटना० अ० क्रि० दौड़ना, डांटना।

दपटाना० स० क्रि० दौड़ाना, डांटदिखाना।

दबकना० अ० क्रि० छिपना, घात में बैठना।

दबकर० ना० स्त्री० कल।

दबकाना० स० क्रि० धमकाना, डांटना, लुकाना।

दबकी० ना० स्त्री० दांव, छिपकी।

दबकीला०, दबकैल० } गु० घुसड्डू, दबकनेहारा।

दबंग०, दबंगा० } गु० कुशील, कुढंगा।

दबना० अ० क्रि० नीचे होना, कुचिलना, कानि करना, मानना।

दबा० ना० पु० दांव, घात।

दबाना० स० क्रि० दावना, निचोड़ना, डांटना।

दबाव० ना० पु० पराक्रम, आधीनता, बोझ, अदब।

दबोला० ना० पु० औषधिविशेष, बैठा, चप्पू।

दबेपांव० अव्य० हौले, धीमे।

दबेल० ना० पु० प्रजा, अधीन।

दबोचना० स० क्रि० दबायडालना।

दम० ना० पु० मनको निज वशरखना अर्थात् इन्द्रियों को रोकना, दौना सुगन्धि।

दमक० ना० स्त्री० चमक, दहक, झलक, दाह।

दमकना० अ० क्रि० झलकना, चमकना।

दमड़ा० ना० पु० सम्पत्ति, दौलत।

दमड़ी० ना० स्त्री० पैसे का आठवां भाग।

दमदमाना० स० क्रि० हिलाना।

दमन० ना० पु० सूरमा, नागदौन, पुष्पविशेष, अधीनता, नाशन, दमयन्ती।

दमनीय० गु० दमन के योग्य, दमनकारक, तोड़नेहारा, रामायणे यथा ( कुँवरि मनोहरि विजय बड़ि कीरति अति कमनीय, पावनहार विरंचि जनु रच्यो न धनु दमनीय )।

दमयन्ती० ना० स्त्री० राजा नल की भार्या।

दमाना० स० क्रि० लचकाना, निहुराना, खुदवाना।

दमामा० ना० पु० डंका, धौंसा।

दम्पति०, दम्पती० } ना० पु० स्त्री पुरुष।

दम्भ० ना० पु० अहङ्कार, घमण्ड, पाखण्ड, छल, बनाव।

दम्भी० गु० अहङ्कारी, घमण्डी, पाखण्डी, छली।

दम्य० गु० शास्य, ना० पु० बैला।

दया० ना० स्त्री० कृपा, करुणा, दान, वितरण।

दयायुक्त०, दयालु०, दयावन्त०, दयावान्०, दयाशील० } गु० कृपावन्त, मिलनसार, दाता, मायावन्त, मेहरबान।

दर० ना० पु० मोल, भाव, शंख, छेद, डर, पीड़ा।

दरकना० अ० क्रि० चिरजाना, फटना।

दरका० ना० पु० दरार, फटाव।

दरकाना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना।

दरकी० गु० स्त्री० फटी।
दरदर० ना० पु० ईंगुर, सिंदूर।
दरदरा० गु० अधकुटा, अधपिसा।
दरश०, दरस० } ना० पु० दर्श, देखना।
दरही० ना० स्त्री० मछलीविशेष।
दरांती० ना० स्त्री० हँसिया, कटनी।
दरार०, दरारा० } ना० पु० दरका, चीर।
दरि० ना० स्त्री० मोल, भाव।
दरिद्र० ना० पु०, दरिद्रता० स्त्री० } दीनता, कंगालता, निर्द्धनता।
दरिद्री० गु० दीन, कंगाल।
दरी० ना० स्त्री० खोह, गुफ़ा, बिछौनाविशेष।
दरीभृत्० ना० पु० पर्व्वत, पहाड़।
दरीन० ना० स्त्री० दरीका बहुवचन।
दर्दुर० ना० पु० मेंढ़क।
दर्प० ना० पु० अहङ्कार, अभिमान, मान।
दर्पक० ना० पु० कामदेव।
दर्पण० ना० पु० आदर्श, मुकुर, शीशा।
दर्पणी० ना० स्त्री० दर्पण।
दर्पणीय० गु० सुन्दर, दिखनौट, सुथरा, अच्छा।
दर्पणोदर० ना० पु० चौरस दर्पण का पेट।
दर्पी० गु० अभिमानी, मानी।
दर्भ० ना० पु० कुश, घास।
दर्रा० ना० पु० दरारा।
दर्राना० अ० क्रि० निडर, आगे बढ़ना, बेधड़क आगे चलेजाना।
दर्विका० ना० स्त्री० गोभी।
दर्वी० ना० स्त्री० कर्छी।
दर्वीकार० ना० पु० सांप।
दर्श० ना० पु० दृष्टि, परिवा, प्रतिपदा।
दर्शक० गु० दिखनौट, देखनेवाला।
दर्शकता० ना० स्त्री० दर्शन, दिखावट।
दर्शन० ना० पु० दृष्टि, भेंट।
दर्शनधारी० गु० सुन्दर।
दर्शनी० ना० स्त्री० हुण्डीविशेष जिसका देखते ही रुपया दिया जावे।
दर्शी० गु० देखनेवाला।
दल० ना० पु० पत्ता, बड़ी फौज, ढेर, मोरपंख।
दलक० ना० स्त्री० झलक।
दलकना अ० क्रि० झलकना।
दलदल० ना० पु० धसाव, पांक, कीचड़।
दलदलाना० अ० क्रि० कांपना, थरथराना।
दलदलाहट० ना० स्त्री० थरथराहट, कम्प।
दलन० ना० पु० नाशन, दो टूक करने का काम विशेष।
दलना० स० क्रि० दो टूक करना।
दलबादल० ना० पु० मेघों का समूह।
दलवाना० स० क्रि० दो टूक कराना।
दलवैया० ना० पु० दलनेहारा।
दलाना० स० क्रि० दलवाना।
दलिद्र० ना० पु०, दलिद्रता० स्त्री० } दरिद्र।
दलिद्री० गु० दरिद्री।
दलित० गु० दो टूक कियागया, आधा।
दलिया० ना० पु० अधकुटा, अधपिसा।
दलिहन० ना० पु० जो अन्न दाल के काम आता है यथा उरद आदि।
दली० गु० दो टूक की गई, ना० पु० वृक्ष।
दलैता० ना० पु०, दलैती० ना० स्त्री० } छोटी चक्की।
दव० ना० पु० वन की आग, वात, दावा।
दवाग्नि०, दवाग्नि०, दवानल०, दवारि० } ना० पु० वन की आगि।
दश० गु० दस, १०।
दशकण्ठ० ना० पु० रावण।
दशगात्र० ना० पु० मृतक कर्मविशेष।
दशदिक्पाल० ना० पु० दश दिशापाल अर्थात्

इन्द्र, १ अग्नि, २ यम, ३ नैर्ऋति, ४ वरुण, ५ वायु, ६ कुबेर, ७ ईशान, ८ ब्रह्मा, ९ अनन्त, १०।

**दशदिशा०** } **दशदिशि०** } ना० स्त्री० दशओर अर्थात् पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, अध, ऊर्ध्व, १०।

**दशन०** ना० पु० दांत।

**दशम०** गु० दसवां।

**दशमांश०** ना० पु० दसवां भाग।

**दशमी०** स्त्री० दसवीं तिथि।

**दशरथ०** ना० पु० श्रीरामचन्द्रजीके पिता।

**दशहरा०** ना० पु० ज्येष्ठ वा आश्विन शुक्लपक्ष की दसवीं तिथि।

**दशा०** ना० स्त्री० अवस्था, व्यवस्था, गति।

**दशांश०** ना० पु० दसवांभाग, १/१०।

**दशांगुल०** ना० पु० फलविशेष अर्थात् खरबूजा।

**दश०** गु० दस, १०।

**दसन०** ना० पु० दशन, दांत।

**दसम०** गु० दशम, दसवां।

**दशरथ०** ना० पु० दशरथ।

**दसहरा०** ना० पु० दसहरा।

**दसा०** ना० स्त्री० सूत, दशा, गाड़ी की फड़।

**दसीला०** गु० सुखकी दशा में रहनेहारा।

**दसोखा०** ना० पु० पंखका झाड़ना।

**दसोंद्वार०** ना० पु० शरीर के दशद्वार अर्थात् आंख, कान, नाक, मुख, लिंग, गुदा, चांदि, परन्तु चांदिरहित केवल नवद्वार ठीकहैं।

**दसौंधी०** ना० पु० भाट बरदैत।

**दस्यु०** ना० पु० बैर, चोर।

**दस्युवृत्ति०** ना० स्त्री० चोरी।

**दह०** ना० पु० गहराव।

**दहक०** ना० स्त्री० दाह, चमक।

**दहकना०** अ० क्रि० जलना, पछिताना, सत्यानाश होना।

**दहकाना०** स० क्रि० जलाना, बिगाड़ना, पश्चात्तापकराना, गर्माना।

**दहन०** ना० पु० अग्नि।

**दहन०** } **दहना०** } **दहनो०** } अ० क्रि० जलना, बरना।

**दहलना०** अ० क्रि० दबना, कांपना।

**दहलाना०** स० क्रि० दबाना, कम्पाना।

**दहसेरा०** ना० पु० दससेर का तौल।

**दहा०** गु० जलगया वा जलाहुआ।

**दहाड़ना०** अ० क्रि० गर्जना, यथा शेरकाशब्द।

**दहाना०** स० क्रि० जलाना।

**दहिना०** गु० दक्षिण, सीधा, सहायक।

**दही०** ना० पु० गोरस, दधि, गु० जलगई।

**दहेंड़ी०** ना० स्त्री० दहीकी हांडी।

**दहेड़०** ना० पु० पक्षीविशेष।

**दहेल०** ना० पु० पक्षीविशेष।

**दह्यो०** ना० पु० दही, स० क्रि० जलाया।

**दक्ष०** ना० पु० निपुण, चतुर, ब्रह्मा का पुत्र जिसको ब्रह्माने दक्षिणांगुष्ठसे उत्पन्न किया था, स्मृतिविशेष।

**दक्षन०** ना० पु० दक्षका बहुवचन भाषा में प्रचलित है यथा देव देवन और लोक लोकन आदि।

**दक्षसुत०** ना० पु० प्रचेता।

**दक्षसुता०** ना० स्त्री० दक्षकी कन्याविशेष, सती।

**दक्षिण०** गु० खरा, उदित, सूर्य्य का वामभाग दहिना, दखिन।

**दक्षिणअक्षांश०** ना० पु० रेखाभूमि के दक्षिण केन्द्रतक जो माप है।

**दक्षिणकेंद्र०** ना० पु० जिसके चारों ओर हिम समुद्र है वा जिसको हिन्दू शास्त्र बड़वानल कहते हैं।

**दक्षिणखण्ड०** ना० पु० विन्ध्याचल के दक्षिण का देशविशेष।

**दक्षिणा०** ना० स्त्री० कर्मकरवाने के निमित्त ब्राह्मण को दान देना, कार्य्यका वेतन।

**दक्षिणाग्नि॰** ना॰ पु॰ अग्नि विशेष।
**दक्षिणायन॰** ना॰ पु॰ कर्कसंक्रान्ति से धनुः संक्रान्ति तकका काल।
**दक्षिणीय॰** गु॰ दक्षिण देशके मनुष्यादि।
**दा॰** अव्य॰ पदान्तमें दाताका अर्थ सूचकयथा सुखदा अर्थात् सुखदाता।
**दाई॰** ना॰ स्त्री॰ दूध पिलाने हारी।
**दाऊ॰** ना॰ पु॰ बड़ा चचा, श्रीबलदेवजी का एकनाम।
**दांड़॰** ना॰ पु॰ दण्ड, चम्पू।
**दांड़ा॰** ना॰ पु॰ रीति, धूरा, सिवाना।
**दांड़ामेंड़ा॰** ना॰ पु॰ सिवाना, छोर, धूरा।
**दांड़ी॰** ना॰ पु॰ नाविक, नावचलाने हारा, ना॰ स्त्री॰ दण्डीतुलाआदि की।
**दांत॰** ना॰ पु॰ दन्त, दशन।
**दांतन॰** ना॰ पु॰ दन्तधावन, काष्ठ, दतून।
**दांतपीसना॰** अ॰ क्रि॰ किचकिचाना।
**दांताकिलकिल॰** ना॰ स्त्री॰ झगड़ा, बखेड़ा।
**दांती॰** ना॰ स्त्री॰ आराकेदांत।
**दांव॰** ना॰ पु॰ घात, अवसर, होड़, बारी।
**दाख॰** ना॰ पु॰ अंगूर, मुनक्का।
**दाग॰** ना॰ पु॰ चिह्न यह शब्द फारसीका है।
**दागना॰** स॰ क्रि॰ चिह्नकरना, छोड़ना, यह शब्द यामिनी भाषाका है।
**दाड़िम॰** ना॰ पु॰ अनार।
**दाढ़ी॰** ना॰ स्त्री॰ ठोढ़ीपरके बाल।
**दातन॰** ना॰ पु॰ दतून।
**दातव्य॰** गु॰ देनेकेयोग्य, दातापन।
**दातव्यता॰** ना॰ स्त्री॰ दातापन, देनहारी।
**दाता॰** गु॰ पु॰ धर्मात्मा, देनेहारा, दयालु।
**दातार॰** गु॰ दाता।
**दात्र॰** ना॰ पु॰ दरांती विशेष।
**दाद॰** ना॰ पु॰ रोग विशेष दद्रु।
**दादमर्द्दन॰** ना॰ दद्रु मर्दन, औषधि विशेष।
**दादा॰** ना॰ पु॰ पिताका पिता, बड़ाभाई।
**दादी॰** ना॰ स्त्री॰ पिताकी माता।
**दादु॰** ना॰ पु॰ दादरोग विशेष दद्रु।
**दादुर॰** ना॰ पु॰ मेंढक।
**दादू॰** ना॰ पु॰ महापुरुष विशेष जिसने अपना पन्थ चलाया जो जातिका बिहना था।
**दाधना॰** स॰ क्रि॰ दग्धना।
**दान॰** ना॰ पु॰ पुण्यार्थ धनका त्याग, भूर, खैरात।
**दानपत्र॰** ना॰ पु॰ पुण्यार्थ धनादि का दानपत्र, माफ़ीनामा।
**दानव॰** ना॰ पु॰ दैत्य, असुर।
**दानवारि॰** ना॰ पु॰ देवता, श्रीविष्णुजी।
**दाना॰** ना॰ पु॰ अश्वादिके खानेका अन्न।
**दानी॰** गु॰ दाता, सखी।
**दाप॰** ना॰ पु॰ क्रोध, अभिमान।
**दापक॰** गु॰ क्रोधी, अभिमानी।
**दाबना॰** स॰ क्रि॰ दबाना।
**दाम॰** ना॰ पु॰ रुपया, पैसा, ना॰ स्त्री॰ माला, रस्सी, गु॰ पैसे का चौबीसवां भाग, मोल।
**दामवती॰** ना॰ स्त्री॰ माला।
**दामासाही॰** ना॰ स्त्री॰ यथार्थ भाग की कर्त्तव्यता।
**दामिनी॰** ना॰ स्त्री॰ बिजुली, कौंधा।
**दामी॰** ना॰ स्त्री॰ यथार्थ बिहारी।
**दामोदर॰** ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम, बर्द्धमान देशका एक नद, गु॰ जिसके पेटतक माला हो।
**दाम्भिक॰** गु॰ दम्भी, पाखण्डी, अभिमानी।
**दाय॰** ना॰ पु॰ पैतृक धन।
**दायक॰** ना॰ पु॰ देनेहारा।
**दायजा॰** ना॰ पु॰ ब्याहका दान, यौतुक।
**दाया॰** ना॰ स्त्री॰ दाया, कृपा।
**दार॰** ना॰ स्त्री॰ दारा, काष्ठ, दारु।
**दारचीनी॰** ना॰ स्त्री॰ काष्ठ विशेष।
**दारा॰** ना॰ स्त्री॰ स्त्री, पत्नी, जोरू।
**दारिका॰** ना॰ स्त्री॰ लड़की, लकड़ी।

दारिद्० ना० पु० दरिद्र।

दारिद्री०
दारिद्री० } गु० दरिद्री।

दारिद्र्य० ना० पु० दरिद्रता।

दारी० ना० स्त्री० लौंडी जो लूटकरके लाई है।

दारु० ना० पु० काष्ठ, वृक्ष विशेष।

दारुक० ना० पु० श्रीकृष्णजीका रथवान।

दारुगत० गु० काष्ठान्तर, काठ के भीतर।

दारुजचित्र० ना० पु० काठकी पुतली।

दारुण० गु० भयानक, असह्य, कठिन, ना० पु० चीता औषधि।

दारुनारि० ना० स्त्री० काठकी पुतली।

दारुफल० ना० पु० चिलगोजा।

दारुमय० गु० जो काष्ठ से निर्मित।

दारुहरिद्रा० ना० स्त्री० दारुहल्दी।

दारू० ना० स्त्री० औषधि, मद, यह शब्द यामिनी भाषा का है।

दारूड़ा० ना० पु०
दारूड़ी० ना० स्त्री० } मदिरा, मद।

दारौ० ना० पु० दाड़िम, अनार, बिहारीलालसप्तशतिकायां ( सुभर भखौ तुव गुण गणन पचये कपट कुचाल, क्योंधौं दारौ लौंह्यियो दरकतनहिं नँदलाल )।

दार्ढ्य० ना० पु० दृढ़ता।

दार्वी०
दार्व्य० } ना० स्त्री० रसौत।

दार्वी० ना० स्त्री० दारुहल्दी।

दाल० ना० स्त्री० चनेआदि अन्न के दो खंड।

दालिद्र० ना० पु० दरिद्र।

दालिद्री० गु० दरिद्री।

दाव० ना० पु० दांव, घात, पेंच, होड़, कुल्हाड़ी विशेष, बन।

दावन० ना० पु० गाहन, चलावन, कुचलन।

दावना० स० क्रि० दाबना।

दावरि० ना० स्त्री० रस्सी।

दावा० ना० पु० दाई का स्वामी, दवा।

दावाग्नि०
दावानल० } ना० पु० बन में उपज के जो अग्नि बनकोजलावे, बनकी अग्नि।

दाशरथि० ना० पु० श्रीरामचन्द्रादि।

दास० ना० पु० भृत्य, सेवक, नौकर।

दासता० ना० स्त्री० लौंडीपना, सेवकाई।

दासा० ना० पु० हंसुआ, कड़ी के नीचेका काष्ठ जो भीतपर रखते हैं।

दासी० ना० स्त्री० चेली, लौंडी, सेवकिन।

दास्य० ना० पु० दासता।

दाह० ना० स्त्री० जलन, दहक।

दाहक० गु० जलानेवाला, ना० पु० अग्नि।

दाहना० स० क्रि० जलाना।

दाहिना० गु० दक्षिण, सीधा, सहायक।

दाक्षायणी० ना० स्त्री० देवी विशेष।

दात्रिक० ना० पु० सिंघाड़ा।

दिक० ना० पु० दिग्, दिशा, ओर, तरफ़।

दिकपाल० ना० पु० दिग्पाल, दिशा का मालिक।

दिखलाना० स० क्रि० दिखाना।

दिखाई० ना० स्त्री० सुझाई, लखाई।

दिखाऊ० गु० सुन्दर, दिखनौट, सजीला।

दिखाना० स० क्रि० सुझाना, लखाना, बताना।

दिखाव० ना० पु० फड़काव, टीमटाम, ढूहा।

दिग्० ना० स्त्री० दिशा, ओर, तरफ़।

दिग्वान्०
दिग्वार० } ना० पु० रखवारा, पहरू।

दिग्शूल० ना० पु० दिशाशूल, किसी दिशि में जाने के लिये बुरादिन, यथा सोमवार शनिश्चर पूर्व्व को, बृहस्पति दक्षिण को, शुक्र रविवार पश्चिम को, मंगल बुध उत्तर को।

दिगम्बर० गु० वस्त्र हीन, नग्न, परमहंस।

दिगीश० ना० पु० इन्द्रादि।

दिग्गज० ना० पु० एक दिशाका रक्षक हाथी।

दिग्गी० ना० स्त्री० बड़ा पोखरा।

दिग्पाल० ना० पु० इन्द्रादिदश १०।

दिग्भाग० ना० पु० दिशाका भाग, देश।

दिग्विजय० ना० स्त्री० सब देशोंका जीतना।
दिग्विजयी० ना० पु० जो सब दिशाओं को जीते।
दिग्विभाग० ना० पु० दिश्भाग, देश।
दिठौना० ना० पु० चश्मा, उपनेत्र, ऐनक।
दिण्ड० ना० पु० नृत्य विशेष।
दिति० ना० स्त्री० दैत्यमाता, कश्यपकी स्त्री।
दितिसुत० ना० पु० असुर, दैत्यहिरण्याक्षादि।
दिन० ना० पु० सूर्य्योदयसे सूर्य्यास्त तक का काल, रोज।
दिनकर० ना० पु० सूर्य्य।
दिनदानि० गु० बड़ा दाता, दीनप्रतिपालक।
दिनपति० ना० पु० सूर्य्य।
दिनप्रति० अव्य० प्रतिवासर, हररोज।
दिनमणि० ना० पु० सूर्य्य।
दिनमान० ना० पु० दिनका परिमाण।
दिनाई० ना० स्त्री० दाद्रु, सेंहुआ।
दिनामार० ना० पु० डेन्मार्क देश के लोग।
दिनी० गु० बहुत दिनका, पुराना।
दिनेश० ना० पु० सूर्य्य।
दिनैला० गु० दिनी, पुराना।
दिया० ना० पु० दीपक, चिराग।
दियासलाई० ना० स्त्री० दिया जलानेके लिये वस्तु विशेष।
दिलवाना० स० क्रि० देनाधातु की प्रेरणार्थक क्रिया, दिलाना।
दिलवाली० ना० पु० दिल्लीके वासी।
दिलवैया० ना० पु० दिलवानेहार।
दिलाना० स० क्रि० दिलवाना।
दिलीप० ना० पु० राजा विशेष।
दिल्ली० ना० पु० नगर विशेष जो भूतकाल में भरतखण्डकी राजधानीथा।
दिवः ना० पु० स्वर्ग, आकाश।
दिवस्पति० ना० पु० स्वर्गका राजा, इन्द्र।
दिवस० ना० पु० वासर, दिन।
दिवह० ना० पु० मुख्यपवन।
दिवा० ना० पु० दिन।
दिवाकर० ना० पु० सूर्य्य।
दिवान्ध० ना० पु० जो दिनमें नहीं देखसक्ता यथा उल्लूक, चमगीदड़ आदि।
दिवाला० ना० पु० ऋणभरने में असमर्थ।
दिवारी० } ना० स्त्री० कार्तिक मासकी अमावस का त्योहार, दीपमालिका।
दिवाली० }
दिविषद्० ना० पु० देवता।
दिवेश० ना० पु० इन्द्र।
दिवौकस० ना० पु० देवता।
दिव्य० गु० शपथ, स्वच्छ, उज्ज्वल, ना० स्त्री० लौंग।
दिव्यतना० ना० स्त्री० अप्सरा।
दिव्यदृष्टि० ना० स्त्री० उज्ज्वल दृष्टि अलौकिक ज्ञान।
दिव्यवसन० } ना० पु० उज्ज्वलवस्त्र, स्वच्छ कपड़े, साफ पोशाक।
दिव्यवस्त्र० }
दिव्यस्थान० ना० पु० उज्ज्वल मकान, पवित्र स्थान।
दिव्यज्ञान० ना० पु० उज्ज्वल ज्ञान, अलौकिक ज्ञान।
दिश० } ना० स्त्री० पूर्व्वादिदिश, ओर, तरफ।
दिशा० }
दिशाशूल० ना० पु० दिग्शूल।
दिशि० ना० स्त्री० दिशा।
दिशिनाथ० ना० पु दिशपाल।
दिशिप० } ना० पु० दिग्पाल।
दिशिपाल० }
दिष्ट० ना० पु० भाग्य, प्रारब्ध।
दिसावर० ना० पु० देसावर।
दिहरा० ना० पु० देवालय।
दिहली० ना० स्त्री० ड्योढ़ी, चौखट, देहली।
दीखना० अ० क्रि० दिखाईदेना।
दीठा० गु० देखने हारा।
दीठ० } ना० स्त्री० दृष्टिदर्शन।
दीठि० }

**दीधिति॰** ना॰ स्त्री॰ किरण।
**दीन॰** गु॰ कंगाल, आधीन, दुखी।
**दीनता॰**, **दीनताई॰** ना॰ स्त्री॰ दरिद्रता, आधीनता, गरीबी।
**दीनदयालु॰** गु॰ दीनप्रतिपालक, गरीबपरवर, दीनोंपर दया करनेहारा।
**दीनपाल॰**, **दीनप्रतिपालक॰**, **दीनबन्धु॰** गु॰ दीनदयालु, दीनों का पालने हारा।
**दीना॰** स॰ क्रि॰ देना, दीनमहा।
**दीनानाथ॰** गु॰ दीनपाल, दीनदयालु।
**दीप॰** ना॰ पु॰ दिया, चिराग, द्वीप।
**दीपक॰** ना॰ पु॰ दीप, दिया, राग विशेष, अजवाइन।
**दीपदान॰** ना॰ पु॰ दियाजलाना।
**दीपनी॰** ना॰ स्त्री॰ बटपत्री।
**दीपनीया॰**, **दीप्य॰** ना॰ स्त्री॰ अजवाइन।
**दीपमाला॰**, **दीपमालिका॰** ना॰ स्त्री॰ दिवाली।
**दीपसुत॰** ना॰ पु॰ काजल।
**दीपि॰** स॰ क्रि॰ दीप देकर।
**दीपिका॰** ना॰ स्त्री॰ दीपकका प्रकाश।
**दीपित॰** गु॰ दीपदियागया।
**दीप्त॰** गु॰ प्रज्वलित, प्रकाशित।
**दीप्ति॰** ना॰ स्त्री॰ चमक, प्रकाश।
**दीर्घ॰** गु॰ लम्बा, गुरु, द्विमात्रिक अक्षर।
**दीर्घक॰** ना॰ पु॰ श्वेतजीरा, सफेदजीरा।
**दीर्घकीलक॰** ना॰ पु॰ अंकोल।
**दीर्घजंघ॰** ना॰ पु॰ ऊंट।
**दीर्घजिह्वा॰** ना॰ स्त्री॰ राजाविरोचन की कन्या।
**दीर्घदण्ड॰** ना॰ पु॰ अरण्ड, एरण्ड, रण्ड।
**दीर्घदर्शी॰** गु॰ अग्रशोची, दूरअन्देश।
**दीर्घपत्रक॰** ना॰ पु॰ लहसुन, पुनर्नवा।
**दीर्घपत्रा॰** ना॰ स्त्री॰ चिरपोटा।
**दीर्घपुष्पक॰** ना॰ पु॰ मदार, आक।
**दीर्घपृष्ठ॰** ना॰ पु॰ सांप।
**दीर्घमूल॰** ना॰ पु॰ जवासा, शालपर्णी।
**दीर्घमूलक॰** ना॰ पु॰ बिधारा।
**दीर्घसूत्री॰** ना॰ पु॰ जो बिलम्बसे कामकोकरै।
**दीवट॰** ना॰ स्त्री॰ दीपक रखनेका आधार।
**दीवली॰** ना॰ स्त्री॰ छोटा दिया।
**दीवा॰** ना॰ पु॰ दीपक, दिया।
**दीखना॰** स॰ क्रि॰ देखना।
**दीसा॰** स॰ क्रि॰ भू॰ देखा, देखता।
**दीह॰** ना॰ पु॰ बड़ा, रामचन्द्रिकायांयथा ( दीह दीह दिग्गजन के केशव मनोकुमार, दीन्हे राजा दशरथहि दिग्पालन उपहार )।
**दीक्षा॰** ना॰ स्त्री॰ मन्त्र का ग्रहण, उपदेश।
**दीक्षित॰** गु॰ दीक्षा कियागया, ना॰ पु॰ ब्राह्मण जाति विशेष।
**दु॰** गु॰ दो, २।
**दुः** अव्य॰ शब्दकी आदि में निषेध वा निन्दा का सूचक।
**दुःकर्णी॰** ना॰ स्त्री॰ किरवाली।
**दुःख॰** ना॰ पु॰ पीड़ा क्लेश, कष्ट, व्यथा।
**दुःखड़ा॰** ना॰ पु॰ आपदा, दुर्गति।
**दुःखदाई॰** गु॰ दुःखदाता।
**दुःखदाता॰** गु॰ दुःख देनेहारा।
**दुःखना॰** अ॰ क्रि॰ पीड़ा होना।
**दुःखाना॰** स॰ क्रि॰ दुःख देना।
**दुःखित॰**, **दुःखिया॰**, **दुःखियारा॰**, **दुःखियारी॰**, **दुःखी॰** गु॰ पीड़ित, क्लेशित, अभागा, कंगाल।
**दुःखशील॰** गु॰ जिसका स्वभाव दुष्ट हो।
**दुःप्रधर्षिणी॰** ना॰ स्त्री॰ श्वेत कटाई।
**दुःसमय॰** ना॰ पु॰ विपत्तिकाल।
**दुःस्पर्शा॰** ना॰ स्त्री॰ जवासा।
**दुकर॰** ना॰ पु॰ दोनोंहाथ।